सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com
परिवहन विशेष
वर्ष 03, अंक 102, नई दिल्ली, शनिवार 21 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

योग जीवन का वह दर्शन है जो मनुष्य को उसकी आत्मा से जोड़ता है।
योग दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

03 भारत की प्रगति की गाथा 'भारत की उड़ान' कॉन्क्लेव में प्रस्तुत
06 ब्लू कार्बन: भारत को नीले पारिस्थितिक तंत्र पर बड़ा दांव क्यों
08 बौध तक पहली ट्रेन चलेगी.....

दिल्ली में इसी महीने 150 नई इलेक्ट्रिक बसें बेड़े में होंगी शामिल, इस साल 5000 बसों को जोड़ने का लक्ष्य

संजय बाटला

दिल्ली के परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने समीक्षा बैठक में डीटीसी की इलेक्ट्रिक बसों का बेड़ा बढ़ाने, बस कनेक्टिविटी सुधारने, वित्तीय स्थिति मजबूत करने और रूट रेशनलाइजेशन लागू करने के निर्देश दिए। इस महीने 150 नई इलेक्ट्रिक बसें शामिल होंगी, और साल के अंत तक 5000 इलेक्ट्रिक बसों का लक्ष्य है।

नई दिल्ली। परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने शुक्रवार को सचिवालय में परिवहन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक की। आज की बैठक में मंत्री सिंह ने परिवहन विभाग के अधिकारियों को डीटीसी के इलेक्ट्रिक बसों के बेड़े को और तेजी से बढ़ाने, दिल्ली के अंतिम छोड़ तक बसों की कनेक्टिविटी बढ़ाने के साथ ही दिल्ली परिवहन निगम की वित्तीय सेहत को और ज्यादा मजबूत बनाने पर जोर दिया। साथ ही मंत्री ने परिवहन विभाग के अधिकारियों को दिल्ली में जल्द से जल्द बसों के रूट रेशनलाइजेशन की प्रक्रिया पूरी लागू करने का निर्देश दिया।

परिवहन मंत्री सिंह के साथ हुई समीक्षा बैठक में परिवहन विभाग के अधिकारियों ने कहा कि इसी महीने 150 नई देवी इलेक्ट्रिक बसें दिल्ली परिवहन निगम के बेड़े में शामिल हो जाएंगी। मंत्री ने कहा है कि साल के अंत तक डीटीसी के बेड़े में इलेक्ट्रिक बसों की संख्या 5000 बसें शामिल करने का लक्ष्य है।

लोगों को सफर के दौरान पैसे की भी बचत हो रही

परिवहन मंत्री ने कहा कि दिल्ली की सड़कों पर दौड़ रही देवी इलेक्ट्रिक बसों को दिल्ली की जनता का शानदार रिस्पांस मिल रहा है। दिल्ली के जिन-जिन इलाकों में देवी बसें चल रही हैं, उस इलाके में रहने वाले लोगों को अब ऑटो और प्राइवेट कैब में धक्के नहीं खाने पड़ रहे हैं। साथ की बसों का किराया बेहद कम होने से लोगों को सफर के दौरान पैसे की भी बचत हो रही है।

मंत्री ने बसों के रूट रेशनलाइजेशन करने पर विशेष तौर पर जोर देते हुए कहा कि फिलहाल डीटीसी ने 109 रूट को वेरीफाई कर लिया है। रूट रेशनलाइजेशन लेकर दिल्ली परिवहन निगम आईआईटी के साथ मिलकर काम कर रहा है। जिसका मकसद डीटीसी की बसों की फ्रीक्वेंसी बढ़ाना, कनेक्टिविटी में सुधार करना और यात्रा को अधिक आरामदायक बनाना है।

डीटीसी बसों के मौजूदा मार्गों को पुनर्व्यवस्थित किया जाएगा

रूट रेशनलाइजेशन की प्रक्रिया पूरी होने से डीटीसी बसों के मौजूदा मार्गों को पुनर्व्यवस्थित किया जाएगा ताकि बसों में सफर करने वाले यात्रियों को बेहतरीन और सुगम सेवा प्रदान की जा सके, जिससे अधिक से अधिक लोग डीटीसी की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था से जुड़ सकें। मंत्री ने कहा कि बहुत जल्द डीटीसी की बसें अपनी रूटिन की यात्रा पूरी करने के बाद नजदीक वाले दिल्ली परिवहन निगम की किसी भी डिपो में खड़ी हो सकेंगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली में 1 जुलाई से इन वाहनों को नहीं मिलेगा ईंधन, पेट्रोल पंपों पर लगे कैमरे; एनसीआर में कब से होगा लागू?

दिल्ली-एनसीआर में वाहन चालकों के लिए महत्वपूर्ण खबर है। CAQM के अनुसार 1 जुलाई से पुराने वाहनों को ईंधन नहीं मिलेगा क्योंकि दिल्ली के सभी पेट्रोल पंपों पर ANPR कैमरे लगाए गए हैं। ये कैमरे पुराने वाहनों की पहचान करेंगे और उन्हें ईंधन देने से रोकेंगे। 1 नवंबर से यह प्रणाली एनसीआर के पांच जिलों में और 1 अप्रैल 2026 से पूरे एनसीआर में लागू होगी।

नई दिल्ली। दिल्ली और दिल्ली-NCR में वाहन चलाने वाले लोगों के लिए बड़ी खबर है। CAQM ने शुक्रवार को एक प्रेस वार्ता की। जिसमें उन्होंने कहा कि एक जुलाई से पुराने वाहनों को ईंधन नहीं मिलेगा। दिल्ली के सभी 520 पेट्रोल पंपों पर ANPR कैमरा लगाया गया।

CAQM ने कहा कि ऐसे वाहनों की पहचान होगी। सेंट्रल डेटा बेस से जुड़ेगा। एक नवंबर से एनसीआर के पांच जिलों में यही सिस्टम लागू होगा। एक अप्रैल 2026 से पूरे एनसीआर में लागू होगा। वाहनों को ईंधन नहीं देने के साथ जब्त करके स्क्रैप में भेजने की कार्रवाई होगी। ट्रैफिक पुलिस और परिवहन विभाग मिलकर कार्रवाई करेंगे।

दिल्लीवालों को ईवी की खरीद पर मिलेगी सब्सिडी! नई ईवी नीति लागू करने को लेकर आया अपडेट

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह ने कहा है कि उनका प्रयास है कि नई ईवी नीति को इसी माह के अंत तक लागू कर दिया जाए। उन्होंने कहा कि नई नीति जनता के हित वाली नीति होगी, जिसमें वाहन चार्जिंग के लिए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोर रहेगा। नई ईवी नीति से वाहनों पर सब्सिडी भी मिलेगी।

परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह ने कहा है कि उनका प्रयास है कि नई ईवी नीति को इसी माह के अंत तक लागू कर दिया जाए।उन्होंने कहा कि नई नीति जनता के हित वाली नीति होगी, जिसमें वाहन चार्जिंग के लिए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोर रहेगा।

नई दिल्ली। नई ईवी नीति लागू होने में देरी से दिल्ली में लोगों को ईवी के प्रति झुकाव नहीं हो पा रहा है। लोग इस उम्मीद में हैं कि ईवी नीति-दो लागू हो और वे ईवी खरीद सकें। दरअसल नई ईवी नीति में इलेक्ट्रिक वाहनों को लेकर तमाम प्रस्ताव हैं, जिसमें इलेक्ट्रिक वाहनों पर लोगों को सब्सिडी मिलने की भी संभावना है। ऐसे में उन्हें वाहन सस्ते में मिल सकेंगे।

परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह ने कहा है कि उनका प्रयास है कि नई ईवी नीति को इसी माह के अंत तक लागू कर दिया जाए।उन्होंने कहा कि नई नीति जनता के हित वाली नीति होगी, जिसमें वाहन चार्जिंग के लिए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोर रहेगा। यहां बता दें कि दिल्ली सरकार जिस इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) नीति-दो के दम पर अगले कुछ सालों में दिल्ली को ईवी कैपिटल बनाने की कोशिश कर रही है, इस नीति को लागू करने में हो रही देरी से लक्ष्य को पाने में सरकार के सामने चुनौती बढ़ रही है।

बैटरी स्वैप चार्जिंग स्टेशन को बढ़ाने की जरूरत

ईवी नीति-दो में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए जरूरत के हिसाब से चार्जिंग स्टेशन से लेकर चार्जिंग की व्यवस्था के तहत बैटरी स्वैप चार्जिंग स्टेशन को बढ़ाने और जरूरत के हिसाब से इन्हें स्थापित करने के प्रस्ताव हैं। इस व्यवस्था के तहत मात्र पांच मिनट में चालक को चार्ज की हुई बैटरी मिल जाती है। वाहनों के खरीद पर सब्सिडी और छूट देने की तमाम योजनाओं को शामिल किया गया है, दिल्ली की जनता भी इसी उम्मीद के साथ टकटकी लगाए हुए हैं कि जल्द ही यह स्कीम लागू हो जिससे वाहन खरीदने में उन्हें लाभ मिल सके।

दिल्ली में प्रदूषण से जंग होगी तेज, सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद DPCC अलर्ट; खाली पदों को भरने की प्रक्रिया शुरू

दिल्ली में प्रदूषण नियंत्रण के लिए सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद डीपीसीसी ने 344 में से 204 खाली पदों को भरने की प्रक्रिया तेज की। 83 पद भरे जा चुके हैं। जून 2024 तक खाली पद 34% से घटकर 25% रह जाएंगे। अनुबंध पर कंसलटेंट और इंजीनियर्स की भर्ती भी चल रही है।

नईदिल्ली। दिल्ली में प्रदूषण से जंग अब तेज होने वाली है। वजह, सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) ने अपने खाली पडे.पदों को भरने की कोशिश और प्रक्रिया तेज कर दी है। खाली पदों में से 83 भरे भी जा चुके हैं। डीपीसीसी के अनुसार जून 2024 में डीपीसीसी के 344 पदों में से 204 खाली पडे.थे। इस साल जून खत्म होने तक खाली पदों की संख्या 34 प्रतिशत से कम होकर 25 प्रतिशत रह जाएगी। जून में भी डीपीसीसी अनुबंध पर कंसलटेंट की नियुक्ति कर रही है। साथ ही सिविल इंजीनियर, मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रानिक एंड टेलिकाम्युनिकेशन इंजीनियर आदि की भर्ती प्रक्रिया भी चल रही है। 2023 से ही एनजीटी इस मामले को देख रहा है। उस समय डीपीसीसी में दो तिहाई पोस्ट खाली थे। बीते माह भी सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में डीपीसीसी को फटकार लगाई थी। डीपीसीसी ने एक शपथ पत्र में बताया कि जुलाई 2024 से अब तक डीपसीसी की खाली पड़ी 83 पोस्ट को भरा जा चुका है।

दिल्ली में हर दिन सड़क हादसे में चार लोगों की होती है मौत, ट्रैफिक चालान के आंकड़ों ने भी चौंकाया

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है जिसमें दोपहिया वाहन चालकों की लापरवाही मुख्य कारण है। इस वर्ष कई लोग अपनी जान गवां चुके हैं और घायल हुए हैं। रेड लाइट जंप और बिना हेलमेट के गाड़ी चलाने के मामले भी बढ़ रहे हैं। यातायात पुलिस ने सुरक्षा उपायों का पालन करने और जागरूकता अभियान चलाने की सलाह दी है।

नई दिल्ली। दिल्ली में सड़क दुर्घटनाओं और यातायात उल्लंघन का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है, इसका प्रमुख कारण दो पहिया वाहन चालक माने जाते हैं। वह अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी खतरा पैदा कर रहे हैं। इस वर्ष अब तक हुए 2,694 सड़क हादसों में 685 मौत और यातायात उल्लंघन में 19 लाख से अधिक चालान इसकी गवाही देते हैं।

इस दौरान 2,646 से घायल हुए। दिल्ली रोड क्रैश रिपोर्ट बताती है कि इन सड़क हादसों में मरने और घायल होने वालों में 38 प्रतिशत दो पहिया वाहन चालक होते हैं। विशेष यह कि इनमें से 70 प्रतिशत ऐसे थे जिन्होंने हेलमेट नहीं पहना था।

वर्ष 2024 में इसी अवधि में दिल्ली में सड़क हादसों की संख्या 2,322 रही, जिसमें 652 चालकों की मौत हो गई, जबकि 2,106 घायल हुए। 2024 में दिल्ली में कुल सड़क हादसों की संख्या 4069 रही, जिसमें 1504 मौत और 3833 घायल हुए।

सड़क हादसे और मौत (2025)

वर्ष संख्या मौत घायल दो पहिया वाहन हादसे

जनवरी 524 122 432 233
फरवरी 398 91 274 174
मार्च 449 139 456 298
अप्रैल 491 128 481 263
मई 458 107 543 372
जून 374 108 459 322

रेड लाइट जंप
माह दो पहिया
जनवरी : 13,789
फरवरी : 12,454
मार्च : 17,784
अप्रैल : 13,344
मई : 15,108
जून : 4,893

बिना हेलमेट
जनवरी 77,989
फरवरी 51,088
मार्च 57,989
अप्रैल 69,022
मई 65,876
जून 38,641

ऑनलाइन चालान
माह दोपहिया
जनवरी 94,245
फरवरी 74,479
मार्च 98,348
अप्रैल 87,656
मई 96,368
जून 32,474

मोटरसाइकिल चालक अक्सर ट्रैफिक में छोटे-छोटे गैप का फायदा उठाते हैं और तंग जगहों से तेजी के साथ निकलने की कोशिश करते हैं। वे वाहनों के बीच अनौपचारिक लेन बनाते हैं और ट्रैफिक के प्रवाह और सुरक्षा को बाधित करते हैं। अधिकांश हेलमेट नहीं पहनने से कतराते हैं। अक्सर तेज रफ्तार में डबल और ट्रिपल सवारी करते हैं, कभी-कभी तो चार-चार। तेज रफ्तार बाइक चलाना, कट मारना युवाओं का शगल बनता जा रहा है। खुद और पैदल यात्रियों दोनों के लिए खतरा बढ़ाते है। यह स्थिति खुद और पैदल यात्रियों के लिए गंभीर व खतरनाक है।

दिल्ली में घातक सड़क दुर्घटनाओं में दोषी वाहन (31 मई तक)

वाहन प्रकार 2024 2025
स्कूटर/मोटरसाइकिल 76 84
निजी कारें 118 82
मॉल वाहन 75 55
ऑटो 35 31
ई-रिक्शा 8 11
संकेतक 12 11
अन्य बसें 7 8
क्लस्टर बस 5 6
ट्रैक्टर 9 5
डीटीसी बस 16 4
टैंकर 0 4
डिलीवरी वैन 1 3
क्रेन 5 2
टैक्सी 1 2
ट्रेलर/कंटेनर 1 2
मिनी-बस 1 1

बचाव के सुझाव

पैदल चलो वालों के लिए फुटपाथ को निरापद रखना

दो पहिया लेन शुरू करना : दो पहिया वाहन चालकों के लिए सड़क पर अलग लेन होने से समस्या में अपेक्षाकृत कमी आ सकती है।

ट्रैफिक नियमों का सख्ती से अनुपालन

यातायात नियमों की जानकारी के लिए जन शिक्षा और जागरूकता अभियान

पाकिस्तान के लाहौर में मौजूद है श्री राम के पुत्र लव का प्राचीन मंदिर, जानिए इससे जुड़े रहस्य

अनन्या मिश्रा

पाकिस्तान में लव का मंदिर स्थापित है। जहां पर लव ने अपने प्राण त्यागे थे। ऐसे में आज हम आपको पाकिस्तान के लाहौर में मौजूद लव मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं, साथ ही इस मंदिर से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों के बारे में बताने जा रहे हैं।

भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी भगवान श्रीराम के मंदिर मौजूद हैं। यहां तक कि भगवान राम के परिवार के किसी न किसी सदस्य का मंदिर देश-विदेश में मिल जाएगा। लेकिन क्या भगवान राम के पुत्रों के मंदिर के बारे में आपने सुना है। बता दें कि भारत में ऐसा कोई मंदिर नहीं है, जहां पर लव-कुश की पूजा-अर्चना होती है। लेकिन पाकिस्तान में लव का मंदिर स्थापित है। जहां पर लव ने अपने प्राण त्यागे थे। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको पाकिस्तान के लाहौर में मौजूद लव मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं, साथ ही इस मंदिर से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों के बारे में बताने जा रहे हैं।

पाकिस्तान में लव मंदिर

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के लौहार में भगवान श्रीराम के पुत्र लव का मंदिर है। यह मंदिर लाहौर किले के अंदर स्थापित है। वर्तमान समय में यह मंदिर खंडहर का रूप ले चुका है। लेकिन जब पाकिस्तान भारत की हिस्सा हुआ करता था, तब इस मंदिर में हिंदू और सिख पूजा-अर्चना किया करते थे। बता दें कि यह वही स्थान है, जहां पर श्रीराम के पुत्र लव ने अपने प्राण त्यागे थे।

इस मंदिर का रहस्य

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जिस जगह पर लव मंदिर है, उसी जगह पर श्रीराम के पुत्र लव ने अपने प्राण त्यागे थे। लव ने खुद को अपनी मां सीता की तरह पृथ्वी में ध्यानांत्रित कर लिया था। बाद में इसी स्थान पर लवपुरी की प्रजा ने मंदिर का निर्माण कराया था। तभी से यह मंदिर यहां पर स्थापित है, हालांकि अब इस मंदिर में कोई पूजा-अर्चना नहीं होती है।

लाहौर में था लवपुरी राज्य

पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक आज जिस स्थान को लाहौर का जाता है, वह कभी लवपुरी के नाम से जाना जाता था। यह वही स्थान है, जहां पर भगवान श्रीराम के पुत्र लव का साम्राज्य कहलाया था। बताया जाता है कि जब श्रीराम के अपने धाम लौटने का समय आया, तब उन्होंने इस स्थान को लवपुरी नाम दिया। वहीं यह साम्राज्य अपने पुत्र लव को सौंप दिया। हालांकि कहा जाता है कि बाद में मगलों के भारत पर शासन करने के समय अन्य जगहों की तरह लवपुरी का नाम बदलकर लाहौर रख दिया गया था।

भैरव की परिवर्तनकारी शक्ति: अहंकार भय कारागार को भंग करना

हमारा अहंकार पहचान का एक विस्तृत किला बनाता है। यादें, उपलब्धियाँ, असफलताएँ और प्राथमिकताएँ जो हमारे ₹स्वयं₹ की भावना को आकार देती हैं। फिर भी यह सुरक्षात्मक संरचना हमारी जेल बन जाती है, जिससे वही भय उत्पन्न होते हैं जिनसे वह बचना चाहता है।

भय अनिवार्य रूप से इस पृथक स्व से उत्पन्न होता है क्योंकि हम स्वाभाविक रूप से अपने अस्तित्व के लिए खतरों से डरते हैं।

मृत्यु भयभीत करती है क्योंकि यह विनाश का वादा करती है, असफलता भयभीत करती है क्योंकि यह हमारी आत्मछवि को खतरे में डालती है, अस्वीकृति घाव करती है क्योंकि यह हमारे मूल्य को चुनौती देती है।

भगवान भैरव की गहन शिक्षा से पता चलता है कि अहंकार और भय युद्ध करने के लिए दुश्मन नहीं हैं बल्कि भ्रम हैं जिन्हें समझना चाहिए। दिव्य विध्वंसक हमारे झूठे स्व पर हिंसा से नहीं बल्कि सत्य के असहनीय प्रकाश से हमला करता है। इस रोशनी के तहत, अहंकार के विस्तृत निर्माण बस फीके पड़ जाते हैं।

यह पहचान सब कुछ बदल देती है। जब रक्षा करने के लिए कोई अलग स्व नहीं होता, तो डरने के लिए क्या बचता है?

जब व्यक्तिगत पहचान सार्वभौमिक चेतना में विलीन हो जाती है, तो नुकसान हमें वास्तव में कहाँ छू सकता है?

जब लहर खुद को सागर के रूप में जानती है, तो वह किसी भी तूफान से कैसे डर सकती है?

यह मार्ग बहुत चुनौतीपूर्ण है और हर पल हर किसी के लिए नहीं है। लेकिन जो लोग इस पर चलने के लिए बुलाए जाते हैं, उनके लिए भैरव विध्वंसक और मुक्तिदाता दोनों के रूप में खड़े हैं, जो अलगाव की दीवारों को तोड़कर चेतना के अनंत आकाश को प्रकट करते हैं जो हमेशा से हमारा सच्चा घर रहा है।

योगिनी एकादशी व्रत आज

एकादशी की अत्यधिक धार्मिक मान्यता होती है। माना जाता है कि एकादशी पर पूरे मनोभाव से व्रत रखा जाए तो जीवन के सभी कष्ट छंट जाते हैं और पापों से मुक्ति मिलती है। माना जाता है कि योगिनी एकादशी का व्रत करने पर 88 हजार ब्राह्मणों को भोजन करवाने जितना पुण्य मिलता है। सालभर में 24 एकादशी पड़ती हैं जो हर महीने के कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि पर रखी जाती हैं। इसी तरह आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष में पड़ने वाली एकादशी को योगिनी एकादशी कहा जाता है। एकादशी पर पूरे मनोभाव से भगवान विष्णु की पूजा-आराधना की जाती है। माना जाता है कि भगवान विष्णु प्रसन्न होकर भक्तों पर अपनी कृपा बरसाते हैं।

कब है योगिनी एकादशी

=======================

पंचांग के अनुसार, आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 21 जून सुबह 7 बजकर 18 मिनट पर शुरू हो रही है और इस तिथि का समापन 22 जून की सुबह 4 बजकर 27 मिनट पर हो जाएगा। उदया तिथि के अनुसार योगिनी एकादशी का व्रत इस साल 21 जून, शनिवार को रखा जाएगा।

कब किया जाएगा व्रत का पारण

=======================

योगिनी एकादशी के व्रत का पारण 22 जून की दोपहर 1 बजकर 47 मिनट से शाम 4 बजकर 35 मिनट तक किया जा सकेगा। इस शुभ मुहूर्त में व्रत पारण करना शुभ होता है।

योगिनी एकादशी की पूजा विधि

=======================

योगिनी एकादशी के व्रत के नियम दशमी की शाम से ही शुरू हो जाते हैं और अगले दिन एकादशी तक रहते हैं। दशमी तिथि पर रात के समय गेंहू, मूंग और जौ का सेवन नहीं किया जाता है। दशमी की रात को नमक भी नहीं खाते हैं। अगली सुबह एकादशी पर स्नान के पश्चात व्रत का संकल्प लिया जाता है। और फिर स्वच्छ वस्त्र धारण किए जाते हैं। एकादशी पर भगवान विष्णु की पूजा करने के लिए कलश में जल भरकर रखा जाता है। टीका लगाया जाता है, अक्षत लगाया जाता है, आरती की जाती है और भोग लगाकर पूजा का समापन होता है। भोग में तुलसी शामिल करना अत्यधिक शुभ होता है।

योगिनी एकादशी का महत्व

=====================

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, योगिनी एकादशी का व्रत और पूजा करने से व्यक्ति के सभी पाप कर्म समाप्त हो जाते हैं। पद्म पुराण के अनुसार, यह व्रत सभी पापों को नाश करने वाला है। आपको बता दें, इस एकादशी को रोग नाशक एकादशी भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि जो व्यक्ति शारीरिक या मानसिक कष्टों से परेशान है, उसके लिए योगिनी एकादशी का व्रत अत्यंत लाभकारी होता है और इस दिन पूजा करने से शारीरिक रोग दूर होते हैं।

21 जून विश्व योग दिवस पर विशेष : विश्व योग दिवस 2025: जीवन का दर्शन और शांति का मार्ग

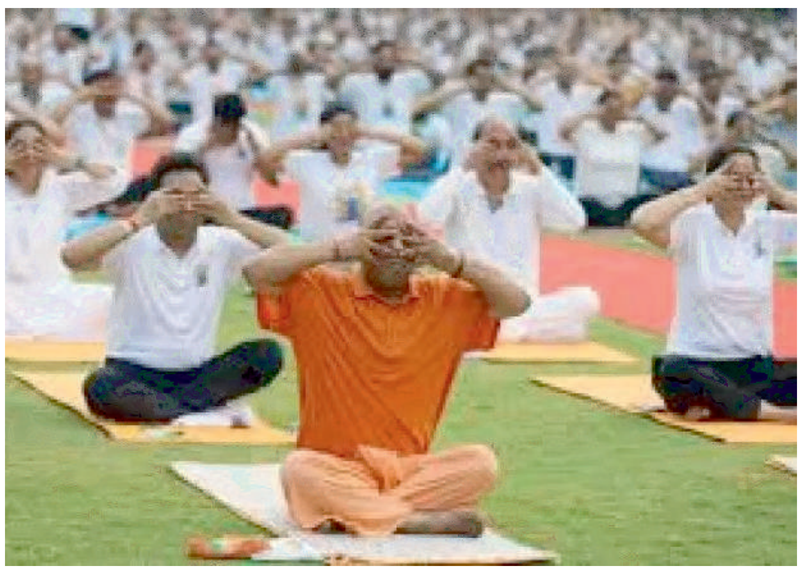

संजय सोंधी, उप सचिव,
भूमि एवं भवन विभाग
नई दिल्ली

हर साल 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है, और 2025 में यह दिन एक बार फिर हमें योग के गहरे दर्शन और इसके जीवन को समृद्ध करने वाले महत्व को याद दिलाएगा। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है जो हमें स्वस्थ, संतुलित और समाज के लिए उपयोगी जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यह एक ऐसा दर्शन है जो हमें अपने भीतर की शांति और आत्म-जागरूकता की ओर ले जाता है।

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में महर्षि पतंजलि ने *अष्टांग योग दर्शन* की रचना की, जो योग को एक समग्र जीवन पद्धति के रूप में प्रस्तुत करता है। यह हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर जोड़ता है, जिसका अंतिम लक्ष्य है *मोक्ष* यानी आत्म-मुक्ति। योग का यह दर्शन भारतीय सभ्यता का विश्व को सबसे अनमोल उपहार है। यह एक प्रकाशस्तंभ की तरह मानवता का मार्गदर्शन करता है, जो हमें तनाव, बीमारियों और मानसिक अशांति से मुक्ति दिलाता है।

विश्व योग दिवस की शुरुआत 2015 में संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के बाद हुई, जब भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसके महत्व को विश्व मंच पर प्रस्तुत किया। तब से यह दिन विश्व भर में योग के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रतीक बन गया है।विश्व योग दिवस 2025 का विषय है ₹एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग₹।क्योंकि योग इन सभी पहलुओं को जोड़ता है।

योग के आठ अंग— *यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि—हमें जीवन को संतुलित करने का रास्ता दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, नियमित प्राणायाम करने से तनाव कम होता है और एकाग्रता बढ़ती है। एक अध्ययन के अनुसार, योग करने वालों में हृदय रोग, मधुमेह और चिंता जैसी समस्याएं कम होती हैं। **सूर्य नमस्कार* जैसे आसन न केवल शरीर को लचीला बनाते हैं, बल्कि मन को शांत और ऊर्जावान भी रखते हैं।

योग का अभ्यास समाज को जोड़ने का भी काम करता है। यह हमें करुणा, सहानुभूति और एकता का पाठ पढ़ाता है। चाहे बच्चे हों, युवा हों या वृद्ध, हर कोई योग को अपनी दिनचर्या में शामिल कर सकता है। 21 जून 2025 को, आइए हम संकल्प लें कि योग को न केवल एक दिन, बल्कि जीवन का हिस्सा बनाएंगे। यह न सिर्फ हमें स्वस्थ रखेगा, बल्कि समाज और विश्व को शांतिपूर्ण बनाने में भी योगदान देगा।

SanjaySondhi37@gmail.

प्रश्न आया है कि हमेशा हृदय की चर्चा करने से क्या लाभ होगा? यदि हम हृदय से नहीं चलेंगें तो मन और बुद्धि से काम लेते रहेंगें फिर वहां केवल हिसाब-किताब से ही चलेंगें।

प्रेम करने/प्रेम पाने की इच्छा/चेष्टा, हमारे मन/विचार में ही ऊर्जा भरेगी। यदि हम सुखी/प्रसन्न होना चाहते हैं तो सबसे पहले इसके लिए कोई भी मानसिक चेष्टा करना बंद करेंगें, जिसके मूल में इच्छा होती है। ध्यान रहे कि जीवन के मूल में इच्छा नहीं, 'समझ' चाहिए, बहुत गहरी समझ चाहिए। यदि समझ होगी तो हम प्रेम के बारे में सोचना बंद करेंगें, प्रेम उपजाने की कोशिश नहीं करेंगे, प्रेम का अभ्यास नहीं करेंगें। हम स्व में ठहरेंगे, उधर जाने के बजाय हम इधर रहेंगें, अपनी गहराई में उतरकर ठहरेंगें तो हम मूलस्रोत हृदय से अपने आप जुड़ जायेंगें। यही प्रेमस्वरूप है।

किसने की पता नहीं पर ताश के 52 पत्ते और दो जोकर पर जो रिसर्च हुई है सो प्रस्तुत है!

..!! ताश का मर्म !..

हम ताश खेलते है, अपना मनोरंजन करते है। पर शायद कुछ ही लोग जानते होंगे कि ताश का आधार वैज्ञानिक है व साथ साथ ही प्रकृति से भी जुड़ा हुआ है :-

आयताकार मोंटे कागज़ से बने पत्ते चार प्रकार के ..... ईंट, पान, चिड़ी, और हुक्म, प्रत्येक 13 पत्तों को मिलाकर कुल 52 पत्ते होते हैं।

पत्ते.... एक्का से दस्सा, गुलाम, रानी एवं राजा

1. 52 पत्ते ....52 सप्ताह
2. 4 प्रकार के पत्ते .... 4 ऋतु
3. प्रत्येक रंग के 13 पत्ते.... प्रत्येक ऋतु में 13 सप्ताह
4. सभी पत्तों का जोड़ ..1 से 13 = 91 × 4 = 364
5. एक जोकर..... 364+1= 365 दिन...1 वर्ष
6. दूसरा जोकर गिने..365 +1=366 दिन..लीप वर्ष
7. 52 पत्तों में 12 चित्र वाले पत्ते - 12 महिने
8. लाल और काला रंग ... दिन और रात!

पत्तों का अर्थ :-

1 दुक्की – पृथ्वी और आकाश
2 तिक्की– ब्रम्हा, विष्णू, महेश
3. चौकी – चार वेद (अथर्व वेद, सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेदे)
4. पंजी – पंच प्राण (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान)
5. छक्की – षड रिपू (काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, लोभ)
6. सत्ती– सात सागर
7. अटठी– आठ सिद्धी
8. नव्वा– नौ ग्रह
9. दस्सी– दस इंद्रियां
10. गुलाम– मन की वासना
11. रानी– माया
12. राजा – शासक
13. ईक्का– एक ईश्वर

मित्रो अवश्य पढ़ें। आनंद के साथ साथ ज्ञान भी। भारतीय संस्कार और परंपरा को नमन जो हर कार्य में अच्छाई ढूंढ लेती हुई।
दृष्टिकोण दृष्टि बदल देता है

नकली दूध को कैसे पहचानें, जानें मिलावट को जांचने का सटीक तरीका

1 दूध में पानी की जांच- सबसे पहले दूध में पानी की मिलावट को परखने के लिए किसी लकड़ी या पत्थर पर दूध की एक या दो बूंद गिराइए। अगर दूध बहकर नीचे की तरफ गिरे और सफेद निशान बन जाए तो दूध पूरी तरह से शुद्ध है।

2 दूध में डिटर्जेंट- दूध में डिटर्जेंट की मिलावट को पहचानने के लिए, दूध की कुछ मात्रा को एक कांच की शीशी में लेकर जोर से हिलाइए। अगर दूध में झाग निकलने लगे तो इस दूध में डिटर्जेंट मिला हुआ है। अगर यह झाग देर तक बना रहे, तो दूध के नकली होने में कोई संशय नही है।

3 दूध में यूरिया की पहचान- सिंथेटिक दूध में अगर यूरिया मिला हुआ है, तो वह गाढ़े पीले रंग का हो जाता है।

4 असली और नकली दूध की पहचान- स्वाद के मामले में असली दूध हल्का-सा मीठा स्वाद लिए हुए होता है, जबकि नकली दूध का स्वाद डिटर्जेंट और सोडा मिला होने की वजह से कड़वा हो जाता है।

5 नकली दूध कैसे पहचानें- दूध को देर तक रखने पर, असली दूध अपना रंग नहीं बदलता है। जबकि दूध अगर नकली है, तो वह कुछ समय बाद पीला पड़ने लगेगा।

6 असली दूध की पहचान- असली दूध को उबालने पर उसका रंग बिल्कुल नहीं बदलेगा, लेकिन नकली दूध का रंग उबलने पर पीला हो जाएगा।

7 दूध की गंध- दूध को सूंघकर देखें। अगर दूध नकली है, तो उसमें साबुन की तरह गंध आएगी और अगर दूध असली है, तो उसमें इस तरह की गंध नहीं आती।

कोविड जैसी महामारी में भारत ने 48 देशों को फ्री वैक्सीन दीं और आज पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व की 'फार्मेसी' बन गया है : बांसुरी स्वराज

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा की मंत्री एवं नई दिल्ली से सांसद बांसुरी स्वराज ने आज एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि मोदी सरकार के 11 वर्षों का कार्यकाल केवल एक राजनीतिक व्याख्यान नहीं है, यह राष्ट्र-भाग्य के निर्माण का व्याख्यान है। प्रेसवार्ता में जिला अध्यक्ष वीरेन्द्र बब्बर एवं रविन्द्र चौधरी, विधायक हरीश खुराना, अनिल शर्मा शिखा राय, नीरज बसोया एवं उमंग बजाज भी उपस्थित थे।

बांसुरी स्वराज ने कहा कि आप सभी को याद होगा कि 2014 से पहले, कश्मीर की भूमि पर यदि कोई तिरंगा फहराना चाहता था, तो वह अपने-आप में एक चुनौती थी। हमारी विधाय शिखा राय स्वयं जब लाल चौक पर तिरंगा फहराने गई थीं, तो उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया था, लेकिन 2014 में जब भारत के देवतुल्य मतदाताओं ने आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश का प्रधानसेवक चुनकर भेजा , तब से लेकर इन 11 वर्षों में अभूतपूर्व बदलाव देश देख रहा है।

स्वराज ने कहा कि जब हम चेनाब नदी पर विश्व का सबसे ऊँचा रेलवे आर्च ब्रिज को आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करकमलों से उदघाटित होते देखा

उन्होंने कहा कि अगर भारत की सुरक्षा की बात करें तो मोदी सरकार ने प्रण लिया है कि 2026 तक भारत को नक्सलवाद से मुक्त किया जाएगा और अगर अभी की बात करें तो 60 ज़िले पूरी तरह से नक्सलवाद से मुक्त हो गए हैं। जब-जब भारत की सुरक्षा पर पाकिस्तान पोषित आतंकवाद ने हमला किया है, तब-तब पीएम मोदी के कुशल नेतृत्व में हमारी आर्म्ड फोर्सेज ने पाकिस्तान के घर में घुसकर आतंकवादियों का सफाया किया है।

इन्हीं में से एक जथे में मुझे जाने का सौभाग्य मिला। मुझे यह कहते हुए अत्यंत ख़ुशी होती है कि विचारधारा की विविधता को एक ओर रखकर, हर एक व्यक्ति ने केवल और केवल भारतीयता की बात की। भारत का जो स्टान्स है — जीरो टॉलरेंस टुवड्र्स टेररिज्म , उसकी गूंज 33 देशों में सुनाई दी।

नई दिल्ली सांसद ने कहा कि कोविड के समय में भारत ने मोदी सरकार के कुशल नेतृत्व में जो वैक्सीन डिलीवरी की, जहाँ 48 देशों में भारत ने संजीवनी बूटी की तरह फ्री वैक्सीन भेजीं, उसका क्या असर हुआ — यह प्रमुख रूप से देखने को मिला है। मैं वेस्ट अफ्रीका के 3 देशों में गई थी — कांगो, सिएरा लियॉन और लाइबेरिया और वहाँ एक-एक व्यक्ति मोदी का धन्यवाद करते हुए, भारत सरकार का धन्यवाद, भारतीयता का धन्यवाद कर रहा था कि कोविड जैसी महामारी में भारत ने फ्री वैक्सीन दीं। आज पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व की फार्मेसी बन गया है।

यही नहीं, एक तरफ हम विश्वामित्र की भूमिका निभा रहे हैं, तो दूसरी तरफ विश्वगुरु की भी भूमिका निभा रहे हैं। जी-20 प्रेसीडेंसी के दौरान आप जानते ही हैं — ' वसुधैव कुटुंबातम ' यानी ₹पूरा विश्व एक परिवार है₹ — इस मार्ग को मोदी सरकार ने विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाया। अफ्रीकन यूनियन को पहली बार स्थायी सदस्य के रूप में जी-20 में लाने वाले नरेंद्र मोदी ही थे — यह बहुत बड़ी बात है।

अब ऑपरेशन सिन्दूर के बाद, मैं अपने अनुभव से कह रही हूँ — वेस्ट अफ्रीका के इन तीनों देशों ने एक स्वर में भारत के साथ खड़े होने का संकल्प लिया। सिएरा लियॉन और लाइबेरिया ने तो पहलगाम के विक्टिम्स के लिए अपने पार्लियामेंट में एक मिनट का मौन भी रखा। यह पहले असंभव था और यह इसलिए संभव हुआ - क्योंकि मोदी हैं तो मुमकिन है।

यू.ए.ई. हमारा इतना बड़ा स्ट्रेटेजिक पार्टनर है, वहाँ जाकर इंडियन डिस्पोरा ने कहा स्वर्गीय इंदिरा गांधी के बाद इतने वर्षों में कोई प्रधानमंत्री वहाँ नहीं आया था — लेकिन पीएम मोदी आए। वहाँ के इंडियन डिस्पोरा ने मुझसे कहा कि जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आए, तो इंडियन डिस्पोरा का सिर गर्व से ऊँचा हो गया।

बांसुरी स्वराज ने कहा कि आप देखिए — जिसने इस देश को बजट की आदत डाली, जिसने हमें बुडगेटिंग सिखाई, वही ऑथॉराइज्ड बैंकिंग का हिस्सा नहीं थी। इसीलिए पिछले 11 वर्षों में मोदी सरकार प्रधानमंत्री जन धन योजना लेकर आई, और मुझे यह कहते हुए अत्यंत प्रसन्नता होती है कि इसमें खुले आधे से ज़्यादा बैंक एकाउंट्स महिलाओं के नाम पर हैं। यही नहीं, मुद्रा योजना में दिए गए कुल लोन में से 68% हमारी मातृशक्ति ने लिए हैं।

पीएम मोदी के 11 साल — विरासत के भी हैं और विकास के भी।500 वर्षों का इंतज़ार अब समाप्त हुआ। हमारी अस्तित्व की लड़ाई, हमारी वैभव की लड़ाई हमारी स्मिता की लड़ाई की जीत हुई और राम मंदिर का भव्य निर्माण हुआ। अब राम लला की प्राण प्रतिष्ठा भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कर-कमलों से संपन्न हुई। हमारी 500 वर्षों की प्रतीक्षा समाप्त हुई। बाबा महाकालेश्वर का कॉरिडोर बना, काशी विश्वनाथ का कॉरिडोर बना ।

Fun Way Learning NGO में होम्योपैथी कैंप लगाया गया। सभी लोगों ने दवाइयों और मशीन थेरेपी दोनों का लाभ उठाया।

Fun Way Learning NGO में कशिश ने अपनी दोस्त आशी का जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाया। बच्चों और मैडमों ने मिलकर कीर्तन भी किया और सभी ने उत्साह से भाग लिया। आशी बहुत खुश हुई और कहा कि वह हर बार अपना जन्मदिन यहीं मनाएगी। कशिश भी बहुत खुश हुई।

पार्षद अनिता का हाथ से लिखा स्पष्टीकरण सामने आने के बाद सौरभ भारद्वाज भाजपा एवं पार्षदअनिता से माफी मांगे : राजा इकबाल सिंह

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली के महापौर सरदार राजा इकबाल सिंह ने कहा है की नेतृत्व के अलोकतांत्रिक रवैय के चलते पार्षदों के दलबदल करने के साथ ही अलग पार्टी बनाने और निगम सत्ता जाने से आम आदमी पार्टी के नेता पूरी तरह से त्रस्त हैं।

दिल्ली के महापौर ने कहा है की दिल्ली की जनता यह देखकर क्षुब्ध है की निगम सत्ता खोने से राजनीतिक रूप से हताश हो चुके दिल्ली आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने आज भाजपा की एक महिला पार्षद के नाम से एक ऐसा अभद्र शब्दों एवं आक्षेप भरा पत्र सोशल मीडिया पर डाला जिससे सम्बंधित देवली से महिला पार्षद अनिता को भारी मानसिक आघात लगा है।

दिल्ली के महापौर ने कहा है की पार्षद एवं उनके परिवार का भाजपा से लम्बा रिश्ता है और उनका सम्मान भाजपा के लिए सत्ता से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

अतः सोशल मीडिया पर चर्चित पत्र के सामने आने पर महापौर ने पार्षद अनिता से बात की तो पता लगा उन्होने कोई आरोप पत्र नही लिखा है। पार्षद अनीता एवं उनका परिवार इस झूठे पत्र के बाद सदमे मे आ गया क्योंकि उनका मानना है की यह कोई आरोप या शिकायत पत्र नही बल्कि एक ऐसा पत्र है जिसने एक महिला के नाते खुद उनकी गरिमा को ठेस पहुंचाई है।

महापौर ने बताया है की सदमे से बाहर आने के बाद पार्षद अनिता ने उन्हे हाथ से लिखा एक पत्र सौंपा है

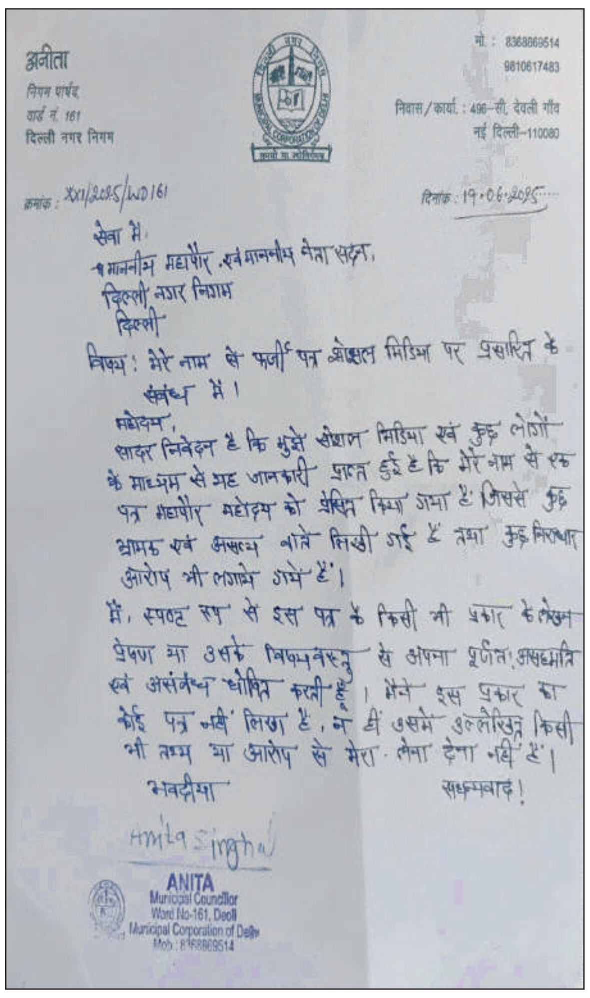
अनीता
निगम पार्षद
वार्ड नं. 161
दिल्ली नगर निगम

मो. : 8368869514
9810617483
निवास/कार्या. : 496-सी, देवली गाँव
नई दिल्ली-110080

क्रमांक : XII/2025/WD161
दिनांक : 19.06.2025

सेवा में,
माननीय महापौर एवं माननीय नेता सदन,
दिल्ली नगर निगम
दिल्ली

विषय : मेरे नाम से फर्जी पत्र सोशल मिडिया पर प्रसारित के संबंध में।

महोदय,
सादर निवेदन है कि मुझे सोशल मिडिया एवं कुछ लोगों के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि मेरे नाम से एक पत्र महापौर महोदय को प्रेषित किया गया है जिसमें कुछ भ्रामक एवं असत्य बातें लिखी गई हैं तथा कुछ निराधार आरोप भी लगाये गये हैं।
मैं, स्पष्ट रूप से इस पत्र के किसी भी प्रकार के लेखन, प्रेषण या उसके विषयवस्तु से अपना पूर्णतः असहमति एवं असंबंध घोषित करती हूं। मैंने इस प्रकार का कोई पत्र नहीं लिखा है, न ही उसमें उल्लेखित किसी भी तथ्य या आरोप से मेरा लेना देना नहीं है।

भवदीया
सधन्यवाद!

Anita Singhal
ANITA
Municipal Councillor
Ward No-161, Deoli
Municipal Corporation of Delhi
Mob : 8368869514

जिसमे उन्हे कोई भी पत्र लिखने से और उस चर्चित पत्र के आरोपों से इंकार किया है।

महापौर ने कहा है की यह खेदपूर्ण है की "आप" के दिल्ली अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने एक नकली पत्र सोशल मीडिया पर डाल कर ना सिर्फ भाजपा की बल्कि एक महिला पार्षद की गरिमा को ठेस पहुंचाई।

दिल्ली की जनता मांग करती है की पार्षद अनिता का हाथ से लिखा स्पष्टीकरण सामने आने के बाद सौरभ भारद्वाज भाजपा एवं पार्षद अनिता से माफी मांगे।

भारत की प्रगति की गाथा 'भारत की उड़ान' कॉन्क्लेव में प्रस्तुत — ज़ी भारत द्वारा भारत मंडपम में आयोजित, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी रहे प्रमुख आकर्षण

मुख्य संवाददाता

भारत मंडपम के प्रतिष्ठित मंच पर आयोजित ज़ी भारत के 'भारत की उड़ान' कॉन्क्लेव ने भारत की अभूतपूर्व विकास यात्रा को दर्शाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्र की प्रगति की व्यापक तस्वीर पेश की। इस अवसर पर केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भारत के बुनियादी ढांचे के परिवर्तनकारी ब्लूप्रिंट को साझा करते हुए बताया कि सरकार ने ₹3.85 लाख करोड़ के रुके हुए प्रोजेक्ट्स को पुनर्जीवित किया है और दिल्ली–देहरादून जैसे महत्वपूर्ण एक्सप्रेसवे की शुरुआत की है। उन्होंने ₹40,000 करोड़ की योजना की भी घोषणा की जिसका उद्देश्य देशभर में सड़क हादसों के ब्लैक स्पॉट्स को खत्म करना है, और यह रफ्तार, सुरक्षा व राष्ट्रीय गतिशीलता के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मंत्री जीतन राम मांझी ने अपने संबोधन में कहा कि यह क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।6 करोड़ से अधिक MSMEs देश में 28 करोड़ नौकरियों का सृजन कर रहे हैं और ग्रामीण उद्यमिता को सशक्त बना रहे हैं। वहीं कॉरपोरेट मामलों के राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने बताया कि कैसे सरकार की दक्षतापूर्ण सुधार नीतियों के कारण कंपनी रजिस्ट्रेशन का समय 350 दिनों से घटकर केवल

3–4 दिन रह गया है। उन्होंने डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) प्रणाली की भी सराहना की, जिससे 200 योजनाओं के तहत 140 करोड़ लाभार्थियों को पारदर्शी लाभ मिला और ₹3.5 लाख करोड़ की बचत हुई।

पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता सैयद शाहनवाज़ हुसैन ने बिहार के विकास की नई कहानी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अब बिहार में एथेनॉल उत्पादन इकाइयाँ, मेगा फूड पार्क और एक उभरता हुआ विमानन क्षेत्र तेजी से आकार ले रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार पुराने पूर्वग्रहों को पीछे छोड़ते हुए भारत की विकास गाथा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

पशुपालन एवं पंचायती राज राज्य मंत्री प्रो. एस.पी. सिंह बघेल ने ग्रामीण भारत की परिवर्तनशील कहानियों को साझा करते हुए दर्शकों को भावुक कर दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं का हवाला देते हुए कहा, "पहली बार गांव के लोग सिर्फ लाभार्थी नहीं बने हैं, बल्कि वे अब अपने को सम्मानित, सुरक्षित और पहचाना हुआ महसूस करते हैं।" उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 11 वर्षों की स्वच्छ शासन प्रणाली को भारत की उपलब्धियों की नैतिक नींव बताया। दूध, मांस और अंडा उत्पादन में भारत की वैश्विक स्थिति से लेकर आवारा पशुओं की समस्या तक, बघेल के संबोधन ने इस बात को और मजबूती दी कि भारत उभर रहा है— और इस सामूहिक उत्थान में हर नागरिक की भागीदारी है।

कॉन्क्लेव की शोभा बढ़ाने वालों में जनजातीय कार्य मंत्रालय के केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम, बिहार सरकार में लघु जल संसाधन मंत्री संतोष कुमार सुमन, और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता सैयद शाहनवाज़ हुसैन शामिल रहे, जो केंद्र और राज्य सरकारों की समावेशी विकास और जमीनी स्तर की प्रगति के प्रति संयुक्त प्रतिबद्धता को और अधिक रेखांकित करता है।

आतिशी मार्लेना ब्यानबाज़ी करने की जगह अब मनीष सिसोदिया की जमानत की चिंता करें क्योंकि अब उनकी शीघ्र गिरफ्तारी निश्चित है : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की जैसे जैसे क्लास रूम घोटाले की ए.सी.बी. जांच आगे बढ़ रही है वैसे वैसे आम आदमी पार्टी नेताओं की बौखलाहट बढ़ती जा रही है।

उन्होंने कहा है की ₹आपर₹ नेता भलीभांति जानते हैं की उनके शासन के दौरान सरकारी स्कूलों में टायलेट एवं वरांड़ों को क्लास रूम के रूप में दिखा कर भुगतान किये गये और अब यह सब जांच से स्थापित होकर न्यायालय के समक्ष जायेगा।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है विगत 8 साल से ₹आपर₹ नेता एक रटा रटाया गीत गा रहे हैं की भाजपा का 11 साल से केन्द्र में राज है पर हमारा कुछ नही बिगड़ा पर वह यह बताना भूल जाते हैं की अपने सत्ता काल में ₹आपर₹ नेताओ ने कभी भी सम्बंधित जांच ऐजेंसियों को उनकी मांगी जानकारी उपलब्ध नही कराई जिससे जांच बहुत धीमी चली। अब जब दिल्ली में भाजपा सरकार है

तो जांच एजेंसियों को पूरा सहयोग कर रही है और शीघ्र मनीष सिसोदिया एवं सत्येंद्र जैन ही नही अनेक अन्य नेता भी जेल जायेंगे।

बेहतर होगा की विधानसभा में नेता विपक्ष आतिशी मार्लेना अपने भ्रष्टाचार की दल दल में कंठस्थ डूबे मनीष सिसोदिया जैसे नेता के बचाव में ब्यानबाज़ी करने की जगह अब उनकी जमानत की चिंता करें क्योंकि अब उनकी शीघ्र गिरफ्तारी निश्चित है।

यमुना की सफाई पर PM मोदी की नजर, तैयार होगा 45 बिंदुओं वाला एक्शन प्लान; 8000 करोड़ रुपये आएगा खर्च....

दिल्ली सरकार यमुना की सफाई के लिए 45 बिंदुओं वाले एक्शन प्लान पर काम कर रही है, जिसकी निगरानी पीएम मोदी कर रहे हैं। 2027 तक पूरी दिल्ली में सीवर लाइन बिछाने का लक्ष्य है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की बैठक में 8000 करोड़ की लागत से 303 ड्रेनेज परियोजनाओं, जल आपूर्ति और यमुना सफाई पर चर्चा हुई।

नई दिल्ली। यमुना की सफाई दिल्ली सरकार की प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं इसकी निगरानी कर रहे हैं। यमुना को साफ व अविरल बनाना दिल्ली सरकार 45 बिंदुओं पर आधारित एक्शन प्लान पर काम किया जा रहा है। इसका उद्देश्य यमुना को प्रदूषणमुक्त करने के साथ ही इसके पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करना है। नदी में गिरने वाले गंदे पानी को रोकने के लिए दिसंबर 2027 तक पूरी दिल्ली में सीवर लाइन बिछाने का लक्ष्य रखा गया है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में जल मंत्री प्रवेश वर्मा और दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारियों की बैठक हुई। इसमें दिल्ली जल बोर्ड की वित्तीय प्रबंधन, जल आपूर्ति व सीवरेज प्रणाली और यमुना नदी की सफाई पर विस्तृत चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने बताया कि लगभग 8000 करोड़ रुपये की लागत से कुल 303 ड्रेनेज परियोजनाओं पर काम चल रहा है।

अधिकारियों को समग्र एक्शन प्लान तैयार करने का निर्देश

इनमें प्रमुख नालों का पुनर्विकास, जलभराव की समस्या का स्थायी समाधान, आधुनिक पंप हाउस की स्थापना, नालों की सफाई, वर्षा जल निकासी प्रणाली का विस्तार और ड्रेनेज नेटवर्क का वैज्ञानिक प्रबंधन शामिल है। अनधिकृत कालोनियों में वर्षा के पानी के सीधे सीवर लाइन में प्रवाह को रोकने के लिए उन्होंने अधिकारियों को समग्र एक्शन प्लान तैयार करने का निर्देश दिया। कहा, यमुना सफाई के काम में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए वह स्वयं इसकी मासिक समीक्षा करेंगी।

यमुना सफाई अभियान केवल सरकारी प्रयासों तक सीमित नहीं रहेगा। इसमें जनता की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होगी।यमुना सफाई का एक्शन प्लानः-45 बिंदुओं वाले एक्शन प्लान में यमुना नदी में उपचारित जल का प्रवाह, नाला प्रबंधन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सीवेज प्रबंधन, वर्षा जल प्रबंधन,शासन और प्रवर्तन, निगरानी व्यवस्था, नदी तट संरक्षण व विकास, जनसंपर्क अभियान, डेयरी अपशिष्ट प्रबंधन जैसे विषय शामिल होंगे।

27 नए डीएसटीपी बनाने की योजना

यमुना किनारे और आसपास के क्षेत्रों में ठोस कचरे के निस्तारण को सख्ती से रोका जा रहा है। नदी में सिर्फ उपचारित पानी गिरे इसके लिए निलोठी, पप्पनकला समेत अमृत 2.0 के अंतर्गत 8 मौजूदा सीवेज उपचार संयंत्रों (एसटीपी) यमुना विहार, ओखला, केशोपुर, वसंत कुंज, घिटोरनी, महरौली और मोलारबंद का उन्नयन किया जा रहा है।

पर्यावरण पाठशाला : ग्रीन बडीज़ की नई पीढ़ी — गर्मियों की छुट्टियों में प्रकृति के साथ जुड़ाव

डॉ. अंकुर शरण

जहां अधिकांश बच्चे गर्मियों की छुट्टियों में मोबाइल और टीवी की दुनिया में खो जाते हैं, वहीं फरीदाबाद के स्वामी विवेकानंद पार्क में एक अद्भुत और प्रेरणादायक परिवर्तन देखने को मिला है। यहां की स्थानीय कॉलोनी के बच्चों ने न केवल पार्क की सफाई और रखरखाव की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ली, बल्कि हरियाली बढ़ाने और पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने की एक मिसाल भी कायम की।

बच्चों का संकल्प: ₹हमारा पार्क, हमारी ज़िम्मेदारी

स्वामी विवेकानंद पार्क में नन्हें बच्चे अब रोज़ सुबह-शाम पार्क की देखभाल करते हैं। वे सूखे पत्तों को इकट्ठा करते हैं, पौधों को पानी देते हैं और हर आने-जाने वाले को सफाई बनाए रखने की अपील करते हैं।

उनकी सोच सरल है — अगर हम खेल सकते हैं, तो देखभाल भी कर सकते हैं।

छुट्टियों में सीख और सेवा

गर्मियों की छुट्टियों को बच्चों ने एक सेवा शिविर की तरह अपनाया है। बिना किसी जोर-जबरदस्ती के, वे स्वेच्छा से पर्यावरण की सेवा में लगे हैं। यह नज़ारा हर सुबह एक प्रेरणा की तरह है — जहाँ कुछ बच्चे पेड़-पौधों को पानी दे रहे होते हैं, तो कुछ सफाई में जुटे होते हैं।

उनके प्रयासों ने न केवल पार्क को सुंदर और स्वच्छ बनाया है, बल्कि आसपास के बड़े-बुज़ुर्गों को भी प्रेरित किया है।

इंडियन ग्रीन बडी अभियान से जुड़ाव

इन बच्चों को अब ₹इंडियन ग्रीन बडी अभियान₹ के अंतर्गत जोड़ा गया है, जहां कॉलोनियों और सोसाइटीज़ में ऐसे ही प्रयास किए जा रहे हैं। यह पहल ₹पार्यावरण पाठशाला₹ के माध्यम से चलाई जा रही है जिसका उद्देश्य है – हर बच्चे को प्रकृति का प्रहरी बनाना।

ग्रीन बडी अभियान की विशेषता — बच्चों में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का भाव विकसित करना

आज के समय में हम अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाते हैं, उन्हें सुरक्षित और सुविधाजनक सोसाइटी में रखते हैं, परंतु जब बात समाज और पर्यावरण की देखभाल की आती है, तो हम यह ज़िम्मेदारी किसी और पर छोड़ देते हैं। यही कारण है कि धीरे-धीरे बच्चे अपनी नैतिक ज़िम्मेदारियों से दूर होते जा रहे हैं।

ग्रीन बडी अभियान इसी सोच को बदलने का प्रयास है। यह सिर्फ एक पर्यावरणीय पहल नहीं, बल्कि एक संस्कारशाला है जहाँ बच्चों को प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करना सिखाया जाता है — चाहे वह एक पौधे को पानी देना हो, पक्षियों के लिए जल पात्र रखना हो या अपने पार्क की सफाई करना।

इस अभियान का उद्देश्य है कि बच्चे अपने आसपास की हरियाली, जल, वायु, पशु-पक्षियों को सिर्फ उपयोग की दृष्टि से न देखें, बल्कि उनके प्रति कृतज्ञता और ज़िम्मेदारी का भाव रखें।

साझेदारी से समाज निर्माण

हमारे इस प्रयास को स्थानीय आरडब्ल्यूए (URWA) के साथ-साथ कई सामाजिक संस्थाओं का भी सहयोग प्राप्त है।

PHE Education Trust और Global Confederation of NGOs जैसे प्रतिष्ठित संगठनों की सहायता से अब इस अभियान को बड़े स्तर पर ले जाने का संकल्प लिया गया है।

इसका लक्ष्य है:

➡ हर बच्चे को एक ₹ग्रीन बडी₹ बनाना
➡ हर सोसाइटी में ₹पार्यावरण पाठशाला₹ स्थापित करना
➡ और हर नागरिक को यह समझाना कि समाज की भलाई सिर्फ सरकार या संस्थाओं की नहीं, हम सबकी साझा जिम्मेदारी है।

आइए, हम अपने बच्चों को सिर्फ पढ़ा-लिखा ही नहीं, बल्कि संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बनाएं।

क्योंकि जब बच्चा प्रकृति को समझेगा, तभी वह भविष्य को संवार पाएगा।

जुड़ें हमारे अभियान से:
indiangreenbuddy@gmail.com
एक प्रयास – हरियाली, समझदारी और ज़िम्मेदारी के साथ।

भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण के पीड़ितों के प्रत्येक संघर्ष में कंधे से कंधा मिलाकर साथ खड़ी मिलेगी बसपा - मलकियत सिंह रामायण

हांसी। भाटला गांव में हुए सामाजिक बहिष्कार के पीड़ितों के समर्थन में आज हांसी लघु सचिवालय में एक ज़बरदस्त रोष प्रदर्शन आयोजित किया गया। इस प्रदर्शन को बहुजन समाज पार्टी, विधानसभा हांसी इकाई ने पूर्ण समर्थन दिया।

इस अवसर पर बसपा हलका प्रभारी कृष्ण सैनीपुरा, विधानसभा अध्यक्ष मलकियत सिंह रामायण, पूर्व प्रत्याशी रविंद्र रंगा, कोषाध्यक्ष नवीन मेहरा, सचिव सोनू उमरा, सुखविंद्र सिंह तथा अन्य समस्त बसपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे और पीड़ितों की न्यायिक मांगों को लेकर प्रशासन के समक्ष अपनी आवाज बुलंद की।

बसपा नेताओं ने स्पष्ट किया कि सामाजिक बहिष्कार जैसी अमानवीय परंपराएं लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों के विरुद्ध हैं। उन्होंने प्रशासन से त्वरित कार्रवाई की मांग करते हुए यह संकल्प दोहराया कि जब तक पीड़ितों को न्याय नहीं मिलता, तब तक उनका संघर्ष जारी रहेगा।

अधिवक्ता मलकियत सिंह रामायण
अध्यक्ष बहुजन समाज पार्टी हल्का हांसी

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा योग कार्यक्रम का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

बरेली। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के शुभ अवसर पर ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (IVRI), बरेली में एक विशेष योग कार्यक्रम का भारत सरकार के अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए ₹एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग₹ (yoga for one earth, one health) की थीम पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन कर किया गया .

इस अवसर पर संस्थान की बहनों ने योगाभ्यास, प्राणायाम और राजयोग के माध्यम से मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य के महत्व को समझाते हुए सभी लोगों को योग व योगा का अभ्यास कराया। कार्यक्रम में सैकड़ों भाई बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ब्रह्माकुमारी संस्था की क्षेत्रीय संचालिका बीके पार्वती दीदी ने मन की शांति के लिए सभी को राजयोग का अभ्यास कराया ओर यह संदेश दिया कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का माध्यम है, जिससे जीवन में संतुलन, सकारात्मकता और आंतरिक शक्ति प्राप्त होती है।

उपरोक्त कार्यक्रम में श्रीमती सुनीता दत्त –अध्यक्ष – लेडीज़ क्लब, आई.वी.आर.आई.,

श्रीमती अंजलि मेहंदीरत्ता कोषाध्यक्ष – लेडीज़ क्लब, श्रीमती मनीषा सिंह नें भी योगाभ्यास कर सभी को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी . मोहित भाई ने योग का बहुत सुंदर गीत गाया।

कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को योग के नियमित अभ्यास के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर ब्रह्माकुमारी संस्थान के पदाधिकारी बीके नीता, बीके पारुल, बीके प्रभा, बीके रजनी, बीके दिनेश, शरद मिश्रा आदि उपस्थित रहे.

सीएमओ के निलंबन के बाद भी थम नही रहा डीएम से विवाद, फिर लगाये आरोप

सुनील बाजपेई

कानपुर। सस्पेंड किये जाने के बाद भी सीएम ओ डा. हरि दत्त नेमी डीएम जितेन्द्र प्रताप सिंह से विवाद थम नहीं रहा है। इस बीच निलंबित सीएम ओ नेमी ने डीएम की बिजनौर नियुक्ति के कार्यकाल पर भी आरोप लगाये हैं।अवगत करा दे कि मामला सीएम योगी तक पहुंचाने के बाद जिला अधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह की रिपोर्ट पर यहां के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर हरि दत्त नेमी को सस्पेंड कर दिया गया है। अब उनकी जगह पर श्रावस्ती में तैनात डॉ उदय नाथ को नया सीएमओ नियुक्त किया गया है। ब्यूरोक्रेसी की इस लड़ाई में भाजपा और सपा के आमने-सामने दिग्गज में विधानसभा अध्यक्ष, भाजपा के 3 विधायक और 1 एम एल सी शामिल हैं। वहीं, सपा से अखिलेश यादव और 2 विधायक इस पूरे मामले को सीएम वर्सेस डिप्टी सीएम बना रहे हैं।वजह यह है कि इन अधिकारियों का फेवर करने में बीजेपी के नेता ही दो फाड़ हो गए हैं। इसी मामले में विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना,एम एल सी अरुण पाठक और विधायक सुरेंद्र मैथानी ने सीएमओ डॉ. हरी दत्त नेमी का ट्रांसफर नहीं करने का लेटर शासन को लिखा था। जाहिर है, इसको डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक का फेवर करते हुए देखा जा रहा है। जबकि, 2 विधायक अभिजीत सिंह सांगा और महेश त्रिवेदी ने डीएम जितेंद्र प्रताप सिंह को सही बताते हुए पत्र लिखे थे। कुल मिलाकर सस्पेंड किये जाने के बाद भी सीएम ओ डा. हरि दत्त नेमी डीएम जितेन्द्र प्रताप सिंह से विवाद थम नहीं रहा है।

जीवन के झूठे सपने और सच्चाई की अहमियत

मनुष्य का जीवन सपनों और हकीकत के बीच एक निरंतर यात्रा है। हम सब अपने जीवन में कई बार ऐसे सपने देखते हैं, जो हकीकत से बहुत दूर होते हैं। ये सपने हमें कुछ पल के लिए सुकून और आनंद तो देते हैं, लेकिन जब हम सच्चाई से रूबरू होते हैं, तो कई बार निराशा और खालीपन महसूस करते हैं। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि हम अपने जीवन की सच्चाई को समझें और उसे स्वीकारें।

झूठे सपनों की दुनिया,अक्सर हम अपने मन में ऐसी कल्पनाएँ पाल लेते हैं, जिनका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं होता। हम सोचते हैं कि अगर हमारे पास अमुक वस्तु, पद या संबंध होगा, तो हमारा जीवन खुशियों से भर जाएगा। लेकिन जब वह सपना पूरा भी हो जाता है, तब भी हमें संतुष्टि नहीं मिलती। इसका कारण यह है कि हमने अपने जीवन की सच्चाई को नजरअंदाज कर दिया होता है।

सपनों की ताबीर और सोच,

हर सपना अपनी ताबीर (अर्थ) लिए हुए होता है। लेकिन उसकी ताबीर हर व्यक्ति की सोच और नजरिए पर निर्भर करती है। कोई एक ही परिस्थिति को सकारात्मक रूप में लेता है, तो कोई नकारात्मक। इसलिए जरूरी है कि हम अपने सपनों को हकीकत की कसौटी पर कसें और देखें कि वे हमारे जीवन में किस तरह का बदलाव ला सकते हैं।

खुद को छलना नहीं चाहिए,

जीवन में सबसे बड़ा धोखा वही होता है, जब हम स्वयं को ही धोखा देने लगते हैं। हम अपने मन को बहलाने के लिए झूठी उम्मीदें पालते हैं, खुद को यह विश्वास दिलाते हैं कि सब कुछ ठीक हो जाएगा, बिना कोई प्रयास किए। यह आत्मवंचना हमें आगे बढ़ने से रोकती है और हमारे आत्मविश्वास को कमजोर करती है।

जीवन के पल – अमूल्य निधि,

हमारे जीवन के हर पल अनमोल हैं। यह समय कभी लौटकर नहीं आता। इसलिए जरूरी है कि हम हर पल को पूरी सच्चाई और ईमानदारी से जिएं। सपने देखें, लेकिन उनकी प्राप्ति के लिए मेहनत करें और सच्चाई का सामना करने का साहस रखें। जीवन को अर्थपूर्ण बनाना हमारे अपने हाथ में है। जब हम अपने सपनों और सच्चाई के बीच संतुलन बनाते हैं, तभी जीवन में सच्चा सुख और संतोष मिलता है।

सपने देखना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, लेकिन उनके पीछे भागते हुए अपनी सच्चाई को न भूलें। खुद को कभी न छलें, बल्कि अपने जीवन को ईमानदारी और सकारात्मक सोच के साथ जिएं। जीवन के हर पल को मूल्य दें, क्योंकि यही पल हमारी सबसे बड़ी पूँजी हैं। सच्चाई को स्वीकारें, सपनों को दिशा दें और जीवन को अर्थपूर्ण बनाएं – यही जीवन का असली सार है।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

एक धरती एक स्वास्थ्य ,योग से विश्व कल्याण, विश्व शांति और स्वास्थ्य की ओर कदम
योग प्राचीन भारत की देन, आधुनिक विश्व की ज़रूरत आत्मा और शरीर का महासंगम

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2025- वैश्विक एकता की ओर बढ़ता भारत का आध्यात्मिक उपहार-200 से अधिक देशों की अभूतपूर्व वैश्विक भागीदारी से होगा वैश्विक संगम-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर सर्वविदित है कि भारत आदि अनादि काल से ही योग का गढ़ रहा है,करीब 5000 वर्ष पुरानी भारतीय परंपरा से निकली योग की विद्या आज वर्ल्ड वाइस मूवमेंट का हिस्सा बन गई है।आधुनिक दुनियाँ में पूरा विश्व अब योग की अहमियत समझ चुका है व इसका सटीक असर भी दिखाई दे रहा है। इस बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम ₹एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग₹ है। 2025 एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है क्योंकि यह इस वैश्विक उत्सव की 11वीं वर्षगांठहै।इसके अलवा इस वर्ष के उत्सव में 10 हस्ताक्षर कार्यक्रम शामिल हैं, जिनमें प्रमुख कार्यक्रम, 'योग संगम' शामिल है, जो पूरे भारत में 1,00,000 स्थानों पर सामूहिक योग प्रदर्शन प्रदर्शित करता है।अन्य नौ कार्यक्रम हैं योग बंधन, योग पार्क, योग समावेश, योग प्रभाव, योग कनेक्ट, हरित योग, योग अनप्लग्ड, योग महाकुंभ और समयोग। आयुष मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि 21 जून 2025 को राष्ट्रीय कार्यक्रम आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में आयोजित होगा,जहां पीएम 5 लाख से अधिक प्रतिभागियों के साथ कॉमन योग प्रोटोकॉल(सीवाईपी) सत्र का नेतृत्व करेंगे। इसके साथ ही, देश भर में एक लाख से अधिक स्थानों पर 'योग संगम' सत्र आयोजित किए जाएंगे, जो इसे इतिहास में सबसे बड़े समन्वित योग प्रदर्शनों में से एक बनाएगा।उन्होंने "योगआंध्र" अभियान - जो राज्य भर में 10 लाख नियमित योग अभ्यासियों का समुदाय तैयार करने की एक महत्वाकांक्षी पहल है।चूँकि एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग सर्वे संतु निरामया यानें सभी रोग मुक्त हों तथा 11वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2025 को ऐतिहासिक बनाने के लिए तैयारियां जोरों पर है, विशाखापट्टनम में 5 लाख प्रतिभागियों के साथ पीएम बड़ा कॉमन योग प्रोटोकॉल का नेतृत्व करेंगे। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस न केवल भारतीय संस्कृति की गौरवशाली विरासत का प्रतीक है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता को स्वास्थ्य, शांति और सामंजस्य की दिशा में एक वैश्विक संदेश भी देता है। योग, जो शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है,आजआधुनिक जीवनशैली से उत्पन्न तनाव, रोग और मानसिक असंतुलन का प्राकृतिक समाधान बन चुका है।योग केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य और सौहार्द की दिशा में एक समवेत प्रयास है। विश्व के कोने-कोने में करोड़ों लोग योग को अपने जीवन का हिस्सा बना रहे हैं, जिससे यह दिवस एक वैश्विक जनांदोलन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। इस अवसर पर भारत समेत दुनिया भर में लाखों स्थानों पर सामूहिक योग अभ्यास, कार्यशालाएं औरजनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जो योग को जीवनशैली का हिस्सा बनाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। योग दिवस की यह प्रस्तावना हमें आत्म-निरीक्षण, सामूहिक एकता और समग्र स्वास्थ्य की दिशा में बढ़ने का आह्वान करती है।चूँकि योग प्राचीन भारत की देन आधुनिक विश्व की ज़रूरत, आत्मा और शरीर का महासंगम है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,11वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2025, एक धरती एक स्वास्थ्य,योग से विश्व कल्याण विश्व शांति और स्वास्थ्य की ओर कदम है, जो रेखांकित करने वाली बात है।

साथियों बात अगर हम योग के महत्व की करें तो, योग विश्व को प्राचीन भारतीय परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह न केवल आपके शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है बल्कि आपके मानसिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देता है। योग के अभ्यास का सम्मान करने और दुनिया भर में इसके लाभों को बढ़ावा देने के लिए हर साल 21 जून को विश्व अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाता है। काम, तनाव, और व्यस्त दिनचर्या के कारण शरीर और दिमाग दोनों थक जाते हैं, ऐसे में हमें अपनी सेहत का ख्याल रखना बेहद जरूरी हो जाता है, योग इसी जरूरत को पूरा करने वाला एक प्राकृतिक और आसान तरीका है।

साथियों बात अगर हम योग के मकसद की करें तो,आज की तेज रफ्तार जिंदगी में सेहत काख्याल रखना बहुत जरूरी हो गया है, काम की व्यस्तता और तनाव के कारण हम अपने शरीर और दिमाग को सही आराम और ध्यान नहीं दे पाते, ऐसे में योग हमारे लिए एक बहुत बड़ा सहारा बनकर आता है, योग न सिर्फ हमारे शरीर को फिट रखता है बल्कि मन को भी शांत और सुकून देने में मदद करता है। इस दिन लोग योग के फायदे जानने और अपनाने की कोशिश करते हैं। योग दिवस मनाने का मकसद लोगों को योग के फायदों से परिचित कराना है, आज के दौर में जहां लाइफ स्टाइल बदल गई है, वहां शरीर और दिमाग पर तनाव भी बढ़ गया है, योग इन सभी समस्याओं को कम करने में मदद करता है, इससे शारीरिक बीमारियां दूर होती हैं और मानसिक संतुलन भी बना रहता है, इसलिए विश्व स्तरपर योग दिवस मनाकर योग की अहमियत को बढ़ावा दिया जाता है, इसके साथ ही यह दिन दुनिया को एक साथ लाने और स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने का संदेश भी देता है।योग के फायदे-योग हमारे शरीर को लचीला, मजबूत और स्वस्थ बनाता है, इसके नियमित अभ्यास से हृदय संबंधी रोग, मोटापा, तनाव, चिंता और कई दूसरी बीमारियां दूर रहती हैं. योग मन को शांत करता है और सोचने - समझने की शक्ति बढ़ाता है, साथ ही यह नींद को बेहतर बनाता है और शरीर में ऊर्जा का संचार करता है। इसीलिए योग सिर्फ एक व्यायाम नहीं, बल्कि एक स्वस्थ लाइफ स्टाइल है।

साथियों बात अगर हम 100 दिनों से चल रही योग श्रृंखला की करें तो, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 में 100 दिनों तक चलने वाले दस सिग्नेचर इवेंट यानी प्रमुख कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिन्हें समाज के विभिन्न वर्गों के साथ तालमेल बिठाने और योग को जीवन के समग्र तरीके के रूप में बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। - समावेशिता के लिए योग समावेश से लेकर अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी के लिए योग बंधन तक - ये कार्यक्रम योग को मैट(चटाई) से लेकर आम जनता तक ले जाने के सरकार के रणनीतिक विज़न को दर्शाते हैं। दिल्ली, भुवनेश्वर, नासिक और पुदुचेरी में क्रमशः100 दिवसीय, 75 दिवसीय, 50 दिवसीय और 25 दिवसीय आयोजनों की श्रृंखला के प्रति जनता की उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया ने मुख्य कार्यक्रम की ओर अग्रसर होने में अहम योगदान दिया है।योग केवल आसन करने और सांस लेने का अभ्यास भर नहीं है - यह जीवन जीने का एक तरीका है, मीडिया के सहयोग से लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 को एक ऐसा ऐतिहासिक आयोजन बनाना है, जो लाखों लोगों को योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने के लिए प्रेरित करे और एक स्वस्थ, खुशहाल और अधिक सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण में सहायता करे।

साथियों बात अगर हम योग के प्राचीन विरासत होने की करें तो, भारतीय संस्कृति में योग रचा- बसा है। मन-मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए प्राचीन भारत में ऋषियों ने योग के उच्चतम विधा को अपनाया और खुद को आत्मनियंत्रित किया। माना जाता है कि योग शरीर की इंद्रियों को नियंत्रित करने की क्षमता देता है जिससे निरोग रहा जा सकता है। योग भगाए रोग तो सदियों पुरानी कहावत है। लेकिन समय का पहिया घूमा और हम आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल हो गए। जीवन की आपाधापी के बीच अपनी प्राचीन पद्धति को भूलने लगे जिसका खामियाजा तमाम तरह की शारीरिक बीमारियों के रूप में भुगतना पड़ रहा है।हालांकि, बीते कुछेक सालों में देश ही नहीं दुनिया ने योग की उपयोगिता को समझा और इसको अपनी दिनचर्या में शामिल किया। दुनिया को योग से नए सिरे से परिचित कराने में 21 जून का भी कम योगदान नहीं है।

1 जुलाई को लॉन्च से पहले हीरो विदा VX2 का टीजर जारी, डिजाइन समेत इन फीचर्स की मिली डिटेल्स

परिवहन विशेष न्यूज

हीरो मोटोकॉर्प 1 जुलाई 2025 को नया इलेक्ट्रिक स्कूटर Hero Vida VX2 लॉन्च करने जा रही है। यह स्कूटर फैमिली के लिए अनुकूल होगा और इसमें मौजूदा वी2 लाइन-अप से अलग स्टाइलिंग और फीचर्स होंगे हालांकि अंदरूनी कंपोनेंट्स समान रहने की संभावना है। इसमें छोटा टीएफटी डिस्प्ले और फ्लैट सीट जैसे बदलाव होंगे। लागत कम रखने के लिए बैटरी मोटर और चेसिस जैसे पाट्र्स V2 के समान हो सकते हैं।

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प ने अपनी विडा रेंज के तहत आने वाले नए Hero Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर मॉडल्स का टीजर जारी किया है। इसे भारतीय बाजार में 1 जुलाई 2025 को लॉन्च किया जाएगा। कंपनी के नए इलेक्ट्रिक स्कूटर फैमिली-ओरिएंटेड होने वाले है और इसमें मौजूदा V2 लाइन-अप से अलग स्टाइलिंग व फीचर्स भी देखने के लिए मिलेंगे। हालांकि, इसमें मिलने वाले अंदरूनी कंपोनेंट्स दोनों में समान रहने की उम्मीद है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर का डिजाइन, फीचर्स और कीमत क्या हो सकती है?

Hero Vida VX2 का डिजाइन

इसे जून 2025 के शुरुआत में स्पाई किया गया था, जिसमें इसके डिजाइन की कुछ जानकारी देखने के लिए मिली थी। अब इसका नया टीजर जारी किया गया है, जिसमें इसके डिजाइन की हल्की जानकारी मिली है। इसे उन लोगों को अट्रैक्ट करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो फैमिली-ओरिएंटेड है। इसमें छोटा TFT डिस्प्ले, फिजिकल की स्लॉट, फ्लैट, सिंगल-पीस सीट, अलग स्विचगियर जैसे बदलाव देखने के लिए मिले हैं।

Hero Vida VX2 के फीचर्स

Vida VX2 का डिजाइन और फीचर्स V2 से अलग होने वाले हैं, लेकिन बैटरी, मोटर, चेसिस, और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी चीजें दोनों में ही समान देखने के लिए मिल सकते हैं। कंपनी ऐसा मौजूदा कंपोनेंट्स और प्रोडक्शन कैपेसिटी का इस्तेमाल लागत को कम करने के लिए अपना सकती है। इसे मल्टीपल बैटरी कैपेसिटी और वेरिएंट्स के साथ पेश किया जा सकता है।

Hero Vida VX2 की कीमत

मौजूदा समय में Vida V2 लाइन-अप की एक्स-शोरूम कीमत 74,000 रुपये से शुरू होकर 1.20 लाख रुपये तक जाती है। यह कीमतें बाकी इलेक्ट्रिक स्कूटर के मुकाबले कम है और कंपनी इसे बाकी इलेक्ट्रिक स्कूटर से कम कीमत में ला सकती है, जिसकी वजह से यह बाकी इलेक्ट्रिक स्कूटर के मुकाबले ज्यादा किफायती होंगे। हीरो की विदा रेंज ने इलेक्ट्रिक वाहन बाजार में धीरे-धीरे अपनी जगह बनाई है, और हर महीने बिक्री के आंकड़े बढ़ रहे हैं।

महिंद्रा स्कॉर्पियो एनपहले से ज्यादा हुई किफायती, 17.39 लाख में लॉन्च हुआ नया Z4 ट्रिम

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा ने अपनी लोकप्रिय SUV Mahindra Scorpio N का नया ऑटोमैटिक वेरिएंट Z4 ट्रिम लॉन्च किया है जो पहले से ज्यादा किफायती है। यह 7-सीटर में उपलब्ध है और पेट्रोल इंजन की एक्स-शोरूम कीमत 17 .39 लाख रुपये और डीजल की 17 .86 लाख रुपये है। इसमें mStallion 2 .0-लीटर टर्बो-पेट्रोल और mHawk 2 .2-लीटर डीजल इंजन विकल्प हैं। स्कॉर्पियो N Z4 ट्रिम में 8-इंच टचस्क्रीन Android Auto और Apple CarPlay जैसे फीचर्स हैं।

नई दिल्ली। महिंद्रा ने अपनी पॉपुलर SUV Mahindra Scorpio N के ऑटोमैटिक वेरिएंट का नया Z4 ट्रिम लॉन्च किया है। जिसकी वजह से यह पहले से ज्यादा किफायती हो गई है। इसे केवल 7-सीटर कॉन्फिगरेशन में लेकर आया गया है। इसके साथ ही इसमें कई बेहतरीन फीचर्स भी दिए गए हैं, जिसकी वजह से यह काफी किफायती हो जाती है। आइए स्कॉर्पियो N के ऑटोमैटिक वेरिएंट Z4 ट्रिम के बारे में विस्तार से जानते है।

कितनी है कीमत?

Mahindra Scorpio N के नए ऑटोमैटिक वेरिएंट Z4 ट्रिम को पेट्रोल और डीजल दोनों इंजन में लेकर आया गया है। इसके पेट्रोल इंजन की एक्स-शोरूम कीमत 17.39 लाख रुपये और डीजल की एक्स-शोरूम कीमत 17.86 लाख रुपये है। पहले, स्कॉर्पियो N का ऑटोमैटिक रेंज Z8 सिलेक्ट (पेट्रोल, 19.06 लाख रुपये) और Z6 (डीजल, 18.91 लाख रुपये) से शुरू होता था। अब नया Z4 AT ट्रिम ने पेट्रोल में 1.67 लाख रुपये और डीजल में 1.05 लाख रुपये कम में खरीदी जा सकती है।

Mahindra Scorpio N का इंजन

स्कॉर्पियो N Z4 ट्रिम में दो इंजन के साथ लेकर आया गया है, जो mStallion 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल और mHawk 2.2-लीटर डीजल इंजन है। इसका mStallion 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल 203 hp की पावर पावर और 370 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह 6-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक के साथ 380 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसका mHawk 2.2-लीटर डीजल इंजन 132 hp की पावर और 300 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसे 6-स्पीड मैनुअल और 6-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ पेश किया गया है। Z4 ट्रिम में रियर-व्हील ड्राइव (RWD) स्टैंडर्ड है, लेकिन डीजल में वैकल्पिक Z4 (E) ट्रिम के साथ 4WD सिस्टम दिया गया है।

Mahindra Scorpio N के फीचर्स

इसे केवल 7-सीटर कॉन्फिगरेशन में लेकर आया गया है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स भी दिए गए हैं, जो 8-इंच टचस्क्रीन, Android Auto और Apple CarPlay, LED टर्न इंडिकेटर्स, 17-इंच व्हील्स, रियर स्पॉइलर, फैब्रिक अपहोल्स्ट्री जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

इसमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए डुअल फ्रंट एयरबैग्स, ABS के साथ EBD, हिल होल्ड और डिसेंट कंट्रोल, ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज, और सभी यात्रियों के लिए थ्री-पॉइंट सीटबेल्ट्स जैसी सुविधाएं गई है।

विविध विशेष

आपातकाल : दमन और प्रतिरोध का युग

एम ए बेबी, अनुवाद : संजय पराते)

जब आंतरिक आपातकाल 50 साल पहले घोषित किया गया था, उस समय मैं स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया का केरल राज्य अध्यक्ष था और कोल्लम के श्री नारायण कॉलेज में राजनीति विज्ञान का छात्र था। आपातकाल की घोषणा के एक सप्ताह से भी कम समय में, हमने आपातकाल का उल्लंघन किया और तिरुवनंतपुरम शहर के बीचों-बीच, सरकारी सचिवालय के ठीक सामने, ₹आपातकाल को अरब सागर में फेंक दो₹ जैसे नारे लगाते हुए विरोध प्रदर्शन किया। हमें गिरफ्तार कर लिया गया और लॉकअप में सामान्य शारीरिक यातना के बाद, जो उन काले दिनों में बहुत आम बात थी, डिफेंस ऑफ इंडिया (डीआईआर) एक्ट के तहत जेल में डाल दिया गया।

आपातकाल के दौरान कॉमरेड ए.के. गोपालन, ई.एम.एस. नंबूदरीपाद और ऐसे ही अन्य प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार किया गया और फिर जन-असंतोष के डर से छोड़ दिया गया। सीपीआई(एम) के कई नेताओं को आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) और डीआईआर. के तहत जेल में डाला गया, जिनमें वर्तमान और पूर्व पोलित ब्यूरो सदस्य भी शामिल थे।

आपातकाल की घोषणा से पहले ही, 1972 से कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर रे के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल में अर्ध-फासीवादी आतंक का राज था। यह सच है कि इंदिरा गांधी शासन ने आंतरिक आपातकाल के दौरान फासीवादी प्रवृत्तियों का प्रदर्शन किया। यह भी सच है कि कई लोगों ने इसे फासीवादी कदम के रूप में सबसे कड़े शब्दों में निंदा की। साथ ही, यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कॉमरेड एकेजी ने इंदिरा गांधी को महिला हिटलर बताया था। बहरहाल, यह फासीवाद नहीं था, बल्कि एक अत्यंत निरंकुश शासन था, जिसने कुछ ऐसी फासीवादी प्रवृत्तियों का प्रदर्शन किया था।

यह ध्यान रखने की बात है कि इसी संदर्भ में कॉमरेड ईएमएस ने जॉर्जी दिमित्रोव की प्रसिद्ध थीसिस, द यूनाइटेड फ्रंट अगेंस्ट फासीवाद (फासीवाद के खिलाफ संयुक्त मोर्चा) को मलयालम में प्रकाशित करने की पहल की, जिसमें उनकी अपनी काफी लंबी प्रस्तावना थी। यह दस्तावेज, जिसे दिमित्रोव थीसिस के रूप में भी जाना जाता है, एक प्रामाणिक पाठ है, जो चर्चा करता है कि फासीवाद क्या है, और फासीवाद के खिलाफ लड़ाई में एक व्यापक गठबंधन या मंच कैसे बनाया जाए। 1935 में, तीसरे इंटरनेशनल (जिसे कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के रूप में भी जाना जाता है) की 7वीं कांग्रेस में, जो लेनिन के नेतृत्व में स्थापित हुई थी, मुसोलिनी के इटली, हिटलर के जर्मनी और अन्य देशों में उभरी नई घटना का व्यापक रूप से विश्लेषण किया गया था। उस दस्तावेज ने समापन भाषण सहित उन सभी चर्चाओं का सारांश प्रभावी ढंग से सामने रखा।

दिमित्रोव ने फासीवाद को वित्तीय पूंजी के सबसे प्रतिक्रियावादी, सबसे अंधराष्ट्रवादी और सबसे साम्राज्यवादी तत्वों की खुली आतंकवादी तानाशाही के रूप में परिभाषित किया था। उन्होंने यह भी कहा था, फासीवाद का कोई भी सामान्य चरित्रांकन, चाहे वह अपने आप में कितना भी सही क्यों न हो, हमें फासीवाद के विकास की खास विशेषताओं और अलग-अलग देशों में और इसके विभिन्न चरणों में, फासीवादी तानाशाही के विभिन्न रूपों का अध्ययन करने और उन्हें ध्यान में रखने की आवश्यकता से मुक्त नहीं कर सकता। प्रत्येक देश में राष्ट्रीय विशिष्ट संबंधों और फासीवाद की खास राष्ट्रीय विशेषताओं की जांच करना, इसके बारे में अध्ययन करना और पता लगाना और तदनुसार फासीवाद के खिलाफ संघर्ष के प्रभावी तरीकों और रूपों की रूपरेखा तैयार करना आवश्यक है।

फासीवाद द्वारा राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करना एक बुर्जुआ सरकार द्वारा दूसरी सरकार का सामान्य प्रतिस्थापन नहीं है, बल्कि शासक वर्ग के एक रूप को दूसरे बुर्जुआ वर्ग द्वारा प्रतिस्थापित करके, संसदीय लोकतंत्र की जगह एक खुली आतंकी तानाशाही स्थापित करना है। 1972 में मदुरै में आयोजित सीपीआई (एम) के 9वें महाधिवेशन में, यह बताया गया था कि भारतीय अर्थव्यवस्था में गंभीर समस्याएं थीं और गरीबी हटाओ सहित 1971 के चुनावों में किए गए वादों को लागू करने में कांग्रेस की विफलता, भारतीय जनता में व्यापक असंतोष पैदा कर रही थी। उस महाधिवेशन में स्वीकृत राजनीतिक प्रस्ताव में कहा गया था कि इंदिरा गांधी का शासन तेजी से एक दमनकारी तानाशाही शासन में बदल रहा था। जबकि सीपीआई (एम) ने भविष्य के खतरों की भविष्यवाणी की थी और भारतीय लोकतंत्र के काले दिनों का सक्रिय रूप से विरोध किया था, कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने इसका सक्रिय रूप से समर्थन किया था।

आरएसएस के हेगड़ेवार और गोलवलकर द्वारा भारतीय युवाओं को ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लड़ने में अपनी ऊर्जा बर्बाद न करने का आह्वान करने और सावरकर द्वारा औपनिवेशिक अधिकारियों को आधा दर्जन दया याचिकाएं प्रस्तुत करने की परंपरा, आपातकाल के दौरान भी उनके द्वारा बरकरार रखी गई थी। आपातकाल के दौरान आरएसएस के सरसंघचालक मधुकर दत्तात्रेय देवरस ने इंदिरा गांधी को क्षमादान के लिए पत्र लिखे थे। देवरस द्वारा लिखे गए इन पत्रों की एक प्रति उनकी लिखी पुस्तक 'हिंदू संगठन और सत्तावादी राजनीति' के परिशिष्ट के रूप में संलग्न है। 22 अगस्त, 1975 को लिखे पत्र में देवरस ने इंदिरा गांधी के राष्ट्र के नाम संबोधन की प्रशंसा करते हुए इसे समयोचित और संतुलित बताया। उन्होंने अपने इरादे स्पष्ट रूप से बताते हुए पत्र का समापन किया : मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इसे ध्यान में रखें और आरएसएस पर प्रतिबंध हटा दें। यदि आप उचित समझें, तो आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर मुझे बहुत खुशी होगी।

10 नवंबर 1975 को लिखे एक अन्य पत्र में देवरस ने कई भाजपा नेताओं के दावों के विपरीत आरएसएस को उस समय के सरकार विरोधी आंदोलनों से अलग कर दिया। उन्होंने लिखा : आरएसएस का नाम जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के संदर्भ में लिया गया है। सरकार ने बिना किसी कारण के गुजरात और बिहार आंदोलन से भी आरएसएस को जोड़ दिया है। संघ का इन आंदोलनों से कोई संबंध नहीं है। एक बार फिर उन्होंने इंदिरा गांधी से प्रतिबंध हटाने की अपील करते हुए आरएसएस के सहयोग का वादा किया : लाखों आरएसएस कार्यकर्ताओं के निस्वार्थ प्रयासों का इस्तेमाल सरकार के विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

इस पत्र का तत्काल परिणाम यह हुआ कि भाजपा के पूर्ववर्ती भारतीय जनसंघ (बीजेएस) की उत्तर प्रदेश इकाई ने 25 जून, 1976 को आपातकाल की घोषणा की पहली वर्षगांठ पर सरकार को पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की। इसने आगे किसी भी सरकार विरोधी गतिविधि में भाग न लेने का वचन दिया। दिलचस्प बात यह है कि रिपोर्टों के अनुसार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में बीजेएस के 34 नेता कांग्रेस में शामिल हो गए।

इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) के पूर्व प्रमुख टी.वी. राजेश्वर, जिन्होंने आपातकाल के दौरान इसके उप प्रमुख के रूप में कार्य किया था, अपनी पुस्तक 'इंडियाः द क्रूशियल इयर्स' में लिखते हैं कि देवरस ने प्रधानमंत्री कार्यालय के साथ सीधे संवाद की एक लाइन स्थापित की और देश में व्यवस्था और अनुशासन लागू करने के लिए उठाए गए कई कदमों के लिए मजबूत समर्थन व्यक्त किया (जोर हमारा)। इसमें संजय गांधी के परिवार नियोजन अभियान, विशेष रूप से मुस्लिमों के बीच इसके क्रियान्वयन की सराहना शामिल थी।

वरिष्ठ भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने 13 जून 2000 को 'द हिंदू' में प्रकाशित 'आपातकाल के अनपढ़ सबक' शीर्षक से एक लेख में इस अवधि के दौरान आरएसएस और उसके नेताओं द्वारा निभाई गई संदिग्ध भूमिका को उजागर किया है। उन्होंने कहा है कि अटल बिहारी वाजपेयी ने जेल में केवल कुछ दिन बिताए और आपातकाल के बाकी समय पैरोल पर बाहर रहे। स्वामी का दावा है कि वाजपेयी ने इंदिरा गांधी के साथ एक समझौता किया था, जिसमें उन्होंने वचन दिया था कि अगर उन्हें रिहा किया जाता है, तो वे सरकार विरोधी किसी भी गतिविधि में शामिल नहीं होंगे। स्वामी के अनुसार, वाजपेयी ने पैरोल पर बाहर रहने के दौरान सरकार द्वारा बताए गए काम किए। उन्होंने आगे आरोप लगाया कि नवंबर 1976 में, वरिष्ठ आरएसएस नेता माधवराव मुले ने उन्हें (स्वामी को) अपने प्रतिरोध प्रयासों को रोकने की सलाह दी, क्योंकि आरएसएस ने जनवरी के अंत में हस्ताक्षर किए जाने वाले आत्मसमर्पण के दस्तावेज़ को अंतिम रूप दे दिया था। आपातकाल के दौरान, जिसके बारे में अब वे यह दावा करते हैं कि उन्होंने इसका बड़ी बहादुरी से विरोध किया था, आरएसएस द्वारा ऐसी ही दोहरी भूमिका निभाई गई थी।

आंतरिक आपातकाल की घोषणा किसी भी तरह से क्षणिक निर्णय नहीं थी। जेपी आंदोलन तेजी से लोकप्रिय हो रहा था और छात्र और युवा बड़ी संख्या में संपूर्ण क्रांति के आह्वान के समर्थन में आगे आ रहे थे। यह स्वाभाविक रूप से इंदिरा गांधी और कांग्रेस को उत्पीड़न के रास्ते पर ले गया। 1974 की रेलवे हड़ताल ने सरकार को हिलाकर रख दिया था। इसके खिलाफ किए गए अत्याचारों के कारण पूरे देश में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए। हालांकि गुजरात में कांग्रेस सरकार लोगों के गुस्से का सामना करने में असमर्थ थी, लेकिन चुनाव नहीं हो रहे थे और मोरारजी देसाई इसके खिलाफ भूख हड़ताल पर चले गए। आखिरकार, कोई रास्ता न होने पर इंदिरा गांधी को गुजरात में चुनाव की घोषणा करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

गुजरात चुनाव का फैसला और इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला एक ही दिन, 12 जून 1975 को सुनाया गया था। दोनों ही मामलों में इंदिरा गांधी और कांग्रेस पार्टी को अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा था। उच्च न्यायालय के फैसले में तत्कालीन प्रधानमंत्री को चुनावी कदाचार का दोषी पाया गया था और उन्हें 6 साल तक निर्वाचित पद पर बने रहने या चुनाव लड़ने से रोक दिया गया था। उन्होंने बिना शर्त स्थगन के लिए सर्वोच्च न्यायालय से अनुरोध किया। हालांकि, न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने उन्हें अपमानजनक शर्तों पर स्थगन दिया। इसलिए, अगर वह सत्ता में बने रहना चाहती थीं, तो उनके पास आपातकाल की घोषणा करने के अलावा कोई रास्ता बचा नहीं था। यह न केवल एक तानाशाहीपूर्ण कृत्य था, बल्कि यह एक ऐसी घोषणा भी थी, जो उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना ही की गई थी। शाह आयोग ने यह पता लगाया था कि तत्कालीन प्रधानमंत्री ने अपने स्वयं के मंत्रिमंडल से परामर्श किए बिना आपातकाल की घोषणा करने का निर्णय लिया था!

कहा जाता है कि लोकतांत्रिक सदन में तानाशाही के लिए भी कुछ जगह होगी ही। आधुनिक बुर्जुआ संसदीय लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सभा करने की स्वतंत्रता आदि इसके अंग हैं। लेकिन जब ऐसी स्थिति आएगी कि जनांदोलनों के माध्यम से शोषणकारी व्यवस्था को समतावादी व्यवस्था में बदला जा सकता है, तो ऐसी स्वतंत्रताएं और अधिकार समाप्त कर दिए जाएंगे। तब बुर्जुआ लोकतंत्र के चमकदार परिधानों में छिपी तानाशाही प्रवृत्तियां अपने कुरूप चेहरे को उजागर करेंगी। यही हमने 50 साल पहले आंतरिक आपातकाल के दौरान देखा था और अब नरेंद्र मोदी सरकार के तहत अघोषित आपातकाल के दौरान देख रहे हैं।

यह भारत के आम लोग थे, विशेषकर हमारी आबादी के गरीब और ग्रामीण वर्ग, जिन्होंने 1977 के चुनावों में आंतरिक आपातकाल के खिलाफ सबसे अधिक तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। वास्तव में, आपातकाल के दौरान लगाई गई कुछ शर्तों को आसान बनाकर चुनाव कराए गए थे और वास्तविक आपातकाल तभी हटाया गया, जब इंदिरा गांधी और कांग्रेस को भारतीय जनता के हाथों अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा।

अगर भारत की आंतरिक इमरजेंसी हमें कुछ सिखाती है, तो वह यह है कि जनता सर्वोच्च है और वह किसी भी ऐसी सत्ताधारी बर्दाश्त नहीं करेगी, जो उन्हें कुचल दे ; चाहे वे कितने भी बड़े और शक्तिशाली क्यों न हों। यह हमें यह भी याद दिलाता है कि हमें जनता के लिए और जनता के साथ अपनी लड़ाई में दृढ़ता से आगे बढ़ना चाहिए।

(लेखक माकपा के महासचिव हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

निर्दोष बच्ची की चीखों पर सहानुभूति का बोझ

[क्या निरक्षरता, सामाजिक स्थिति अब दरिंदगी का बचाव है ?]

एक चार साल की मासूम बच्ची, जिसकी आंखों में मां की गोद का प्यार और सपनों की मासूमियत चमक रही थी, अचानक एक ऐसे नरक में धकेल दी गई जहां इंसानियत की हर सांस थम गई। अक्टूबर २०२१ में खंडवा जिले में उस छोटी सी जान के साथ जो हुआ, वह केवल एक अपराध नहीं, बल्कि मानवता के चेहरे पर एक ऐसा काला धब्बा है जो शायद कभी मिट नहीं सकेगा। उसकी हंसी, उसका गुनगुनाना, उसका भोला-भाला बचपन—सब कुछ एक जघन्य कृत्य ने रौंद दिया। डीएनए रिपोर्ट, मेडिकल साक्ष्य, गवाहों के बयान—सब कुछ साफ था, जैसे आकाश से सच बरस रहा हो। ट्रायल कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाकर इंसाफ की उम्मीद जगा दी, लेकिन उच्च न्यायालय ने एक ऐसा फैसला सुनाया कि हर संवेदनशील हृदय रो पड़ा। आरोपी के निरक्षर, आदिवासी, और पारिवारिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर फांसी की सजा को २५ साल की कैद में बदल दिया गया। यह इंसाफ नहीं, एक मासूम के आंसुओं पर थोपा गया एक और जख्म है, जो समाज की चुप्पी और कमजोरी को चीख-चीखकर बयान करता है!

क्या गरीबी और अशिक्षा ने कानून की रीढ़ तोड़ दी? क्या एक बच्ची के साथ हुए इस घिनौने अपराध को 'समझने' की गुंजाइश बनाया जा सकता है? यह फैसला केवल एक कानूनी निर्णय नहीं, बल्कि समाज की नैतिकता पर एक जोरदार प्रहार है। आज निरक्षर, आदिवासी होने और पारिवारिक पृष्ठभूमि का बहाना बनाकर राहत दी गई, कल कोई मानसिक दबाव का तर्क देगा, परसों कोई शिक्षा या सुधार की संभावना का हवाला पेश करेगा। फिर सवाल उठता है—न्याय का तराजू क्या तौलेगा? अपराध की गहराई को, या अपराधी की जाति, गरीबी और सामाजिक पृष्ठभूमि को? क्या हम उस मोड़ पर पहुंच गए हैं जहां मासूमों का दर्द गौण हो गया और अपराधी की पहचान सर्वोपरि हो गई? यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि 'बेटी पढ़ाओ-बचाओ' के नारे गली-गली गूंजते हैं, लेकिन जब वही बेटी जिंदगी की सबसे बड़ी त्रासदी से गुजरती है, तो उसके गुनहगार को 'सिस्टम का शिकार' कहकर बख्श दिया जाता है। लेकिन क्या वह मासूम बच्ची सिस्टम का हिस्सा नहीं थी? उसकी निर्धनता, उसकी लाचारी, उसका छीना गया बचपन—क्या इन पर कोई दया नहीं बरसनी चाहिए?

यह फैसला समाज के उस सपने को तोड़ता है, जहां इंसाफ अंधा होता है—न जाति देखता है, न धर्म, न गरीबी। लेकिन यहां तो इंसाफ की आंखों पर बंधी पट्टी खुल गई और उसने अपराधी के वर्ग को देख लिया। यह एक खतरनाक संकेत है, जो भविष्य में और भी भयावह परिणाम ला सकता है। अगर आज निरक्षर और एक आदिवासी होने के कारण सजा हल्की हो सकती है, तो कल कोई और बहाना—चाहे वह मानसिक अस्थिरता हो या सामाजिक दबाव—न्याय को कमजोर कर सकता है। क्या अपराध का मूल्यांकन अब साक्ष्यों और अपराध की गंभीरता से नहीं, बल्कि अपराधी की सामाजिक स्थिति से होगा? यह सोचकर दिल दहल जाता है कि एक मासूम के साथ हुए जुल्म को हल्का करने की कोशिश समाज की उस संवेदना को कुचल देती है, जो पीड़ित के साथ खड़ी होनी चाहिए।

उस मासूम के माता-पिता की जिंदगी अब दर्द और अविश्वास के अंधेरे में डूबी हुई है। वह बच्ची, जो कभी मां की गोद में गुनगुनाया करती थी, अब शायद ही बोल पाएगी। उसके सपनों की जगह डर ने ले ली है, उसकी हंसी चीख में बदल गई है। उनके लिए कानून पर भरोसा अब एक सपना बनकर रह गया है। क्या यह वही समाज है जो अपनी बेटियों को सुरक्षित माहौल देने का दावा करता है? क्या यह वही राष्ट्र है जो अपनी मासूमियत की रक्षा का वचन देता है? नहीं, यह एक ऐसा दर्पण है जो समाज की सच्चाई को बेनकाब करता है—जहां इंसाफ की जगह सहानुभति की तस्करी हो रही है।

यह फैसला केवल एक बच्ची के परिवार को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को प्रभावित करता है। जब पीड़ितों को न्याय नहीं मिलता, तो वे उम्मीद खो देते हैं। और जब उम्मीद मरती है, तो समाज का ढांचा चरमराने लगता है। आज अगर हम चुप रहे, तो कल हमारी बेटियां भी इसी डर और असुरक्षा में जीएंगी। 'बेटी पढ़ाओ-बचाओ' के नारे तभी सार्थक होंगे, जब इंसाफ की तलवार बिना डरे उठेगी—चाहे अपराधी कोई भी हो, साक्षर हो या निरक्षर, उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। जरूरत है ऐसे न्याय की, जो अपराध की गहराई को देखे, साक्ष्यों पर भरोसा करे, और सहानुभति के नाम पर अन्याय को बढ़ावा न दे।

समाज को यह समझना होगा कि अपराध की दुनिया में कोई वर्ग नहीं होता, कोई जाति नहीं होती—होता है तो केवल एक पीड़ित और एक अपराधी। और जब न्याय इन दोनों के बीच खड़ा होता है, तो उसे आंख मूंदकर केवल सत्य पर चलना चाहिए, न कि सामाजिक दबाव या राजनीतिक चालों के आगे झुकना चाहिए। आज अगर हमने इस मासूम की चीख को अनसुना किया, तो कल हमारी अपनी बेटियों की पुकार भी दम तोड़ जाएगी। यह एक चेतावनी है, एक करारा जवाब मांगती है—क्या हम अपने बच्चों को वह भरोसा दे पाएंगे कि यह दुनिया उनके लिए सुरक्षित है?

अगर हम अभी नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियां हमें कोसेंगी। इंसाफ को कमजोर करना मतलब है अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता को कमजोर करना। यह फैसला एक मासूम के दिल को चीर गया, लेकिन अगर हमने इसे ठीक करने की कोशिश नहीं की, तो यह पूरे समाज के दिल पर एक ऐसा घाव बन जाएगा, जो कभी भर नहीं सकेगा। आज का मौन कल का पाप बनेगा, और वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी आंखों से आंसुओं के सिवा कुछ नहीं देख पाएंगे—एक ऐसी दुनिया में, जहां मासूमों का खून हमारे हाथों पर सुखेगा, और इंसाफ की पुकार अनंत में खो जाएगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सेहत का बॉन्ड समाज सेवा के बीच एक सेतु का काम करेगा

विजय गर्ग

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं कि पंजाब के सरकारी अस्पताल मरीजों के बढ़ते बोझ से चरमरा रहे हैं। समाज के गरीब व निम्न मध्यमवर्गीय मरीजों के उपचार की अंतिम शरण स्थली ही होते हैं सरकारी अस्पताल। विडंबना यह है कि सरकारी अस्पताल खुद ही डॉक्टरों की कमी से जूझ रहे हैं। आंकड़ों की बात करें तो सरकारी अस्पतालों के लिये स्वीकृत पदों में आधे पद फिलहाल खाली है। नई पीढ़ी के डॉक्टर मरीजों के दबाव व आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के चलते सरकारी अस्पतालों को कार्यस्थली बनाने से गुरेज करते रहे हैं। निस्संदेह, निजी क्षेत्र में मोटी तनख्वाह व सुविधाएं उन्हें आकर्षित करती हैं। इधर विदेशों का मोह भी उन्हें खूब लुभाता है। यही वजह है कि ग्रामीण ही नहीं, शहरी सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की भारी कमी है। विशेषज्ञ चिकित्सकों की तो ज्यादा ही कमी है। इस समस्या से निबटने के लिये पंजाब सरकार इस सत्र से एमबीबीएस और बीडीएस के छात्रों के लिए बॉन्ड नीति लेकर आई है। निश्चय ही सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में डॉक्टरों की पुरानी कमी से निपटने के लिये एक ऐसा साहसिक कदम उठाना बेहद जरूरी था। नये नियमों के तहत, राज्य सरकार द्वारा संचालित मेडिकल कॉलेजों से स्नातक करने वाले डॉक्टरों को दो साल के लिये अनिवार्य रूप से सरकारी स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में सेवा करनी होगी। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो बीस लाख रुपये की बॉन्ड राशि का भुगतान करना होगा। वहीं अखिल भारतीय कोटे के तहत स्नातकों को अनिवार्य रूप से एक साल की सेवा सरकारी स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में देनी होगी। हालांकि, यह नीति बाध्यकारी है, लेकिन यह सुनिश्चित करने का एक जिम्मेदार प्रयास है कि राज्य चिकित्सा शिक्षा में निवेश का कुछ लाभ राज्य के लोगों को भी मिलना चाहिए। यह तार्किक बात है कि सरकारी मेडिकल कॉलेजों को राज्य सरकार भारी सब्सिडी भी देती है।

दूसरे शब्दों में कहें तो राज्य के मेडिकल कॉलेजों की सीटों के लिये करदाताओं द्वारा एक अंशदान दिया जाता है। यह उचित होगा कि छात्र स्नातक होने के बाद समाज में कुछ योगदान जरूर दें। यह इसलिये भी जरूरी है कि राज्य के सरकारों अस्पतालों में डॉक्टरों की भारी कमी है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्थिति बहुत अधिक विकट है क्योंकि आमतौर डॉक्टर ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने से कतराते हैं। बताया जाता है कि राज्य के सरकारी अस्पतालों में स्वीकृत डॉक्टरों के ३,847 पदों में पचास फीसदी पद रिक्त हैं। सरकारी अस्पतालों में पर्याप्त चिकित्सकों के न होने का खमियाजा मरीजों को चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के रूप में भुगतना पड़ता है। उन्हें मजबूरी में निजी अस्पतालों के महंगे उपचार लेने के लिये बाध्य होना पड़ता है। वर्षों से यह ट्रेंड चला आ रहा है कि डॉक्टर निजी प्रैक्टिस या विदेशों में बेहतर अवसरों की तलाश में सार्वजनिक चिकित्सा सेवा से किनारा करते रहे हैं। जिसके चलते शहरी-ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के बीच में एक बड़ा अंतर पैदा हो गया है। निश्चित रूप से बॉन्ड नीति इस असंतुलन को दूर करने की दिशा में प्रयास करेगी। इसके साथ ही कतिपय छात्र समूहों का बॉन्ड नीति का विरोध भी समझ में आता है। लेकिन बॉन्ड नीति को खत्म करने की बजाय उनकी चिंता बेहतर कामकाजी परिस्थितियां बनाए जाने के लिये हो। साथ ही कैरियर प्रगति के बेहतर अवसरों के मुद्दों को भी संबोधित किए जाने की जरूरत है। निस्संदेह, एक साल या दो साल का अनिवार्य कार्यकाल एक उचित मांग है, खासकर जब यह कदम सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूती दे सके। वैसे पंजाब सरकार की बॉन्ड नीति कोई नई बात नहीं है। पहले ही कई केंद्रीय संस्थानों और अन्य राज्यों में इसी तरह के मॉडल काम कर रहे हैं। पंजाब को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस नीति का प्रभावी क्रियान्वयन हो। समय पर नियुक्तियां हों और युवा स्नातकों को पर्याप्त प्रोत्साहन मिले। निस्संदेह, स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिये और अधिक देरी नहीं की जा सकती। निस्संदेह, यह बॉन्ड रुपी बंधन शिक्षा और समाज सेवा के बीच एक सेतु का काम करेगा। भगवान का दूसरा रूप कहे जाने वाली चिकित्सा बिरादरी को भी इस भरोसे को कायम रखना होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

ब्लू कार्बन: भारत को नीले पारिस्थितिक तंत्र पर बड़ा दांव क्यों लगाना चाहिए

विजय गर्ग

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तेज होते हैं, वैश्विक स्पॉटलाइट नीले कार्बन पारिस्थितिक तंत्र - मैंग्रोव, समुद्र तट, नमक दलदल और तटीय आर्द्रभूमि की ओर मुड़ रही है - उच्च प्रभाव, प्रकृति-आधारित जलवायु समाधान के रूप में।

ये पारिस्थितिक तंत्र न केवल अपनी कार्बन भंडारण क्षमता में असाधारण हैं, बल्कि तटीय सुरक्षा, जैव विविधता संरक्षण और स्थायी आजीविका सहित कई सह-लाभ भी प्रदान करते हैं। भारत जैसे देश के लिए, 7,500 किलोमीटर की समुद्र तट रेखा और 4,992 वर्ग किमी से अधिक मैंग्रोव कवर के साथ, नीला कार्बन अपने जलवायु लक्ष्यों को एक साथ आगे बढ़ाने, कमजोर तटीय समुदायों की रक्षा करने और कार्बन बाजारों के माध्यम से पर्याप्त जलवायु वित्त को अनलॉक करने के लिए एक रणनीतिक अवसर का प्रतिनिधित्व करता है। ब्लू कार्बन फाइनेंस पारिस्थितिकी तंत्र बहाली में निवेश को सक्षम बनाता है जो सत्यापित उत्सर्जन कटौती (वीईआर) उत्पन्न करता है, जिसे संरक्षण प्रयासों और समुदाय-आधारित अनुकूलन पहलों को निधि देने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर कारोबार किया जा सकता है।

भारत के नीले कार्बन पारिस्थितिक तंत्र उल्लेखनीय रूप से विविध और व्यापक हैं, जिनमें न केवल मैंग्रोव हैं, बल्कि समुद्री घास के मैदान, नमक दलदल, पीटलैंड, लैगून और एस्टुरीन वेटलैंड्स भी शामिल हैं। ये पारिस्थितिक तंत्र बायोमास और तलछट दोनों में कार्बन को संग्रहीत करते हैं, जिसमें स्थलीय जंगलों की तुलना में कई गुना अधिक दरों पर कार्बन को जब्त करने में सक्षम मैंग्रोव और समुद्री घास होते हैं। जहां मैंग्रोव को संरक्षण नीति में ध्यान दिया गया है, वहीं सीग्रासेस - मन्नार की खाड़ी, पाल्क बे, लक्षद्वीप और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में पाए जाते हैं - और अन्य आर्द्रभूमि भारत की कार्बन वित्त रणनीति में लंबे समय तक कार्बन भंडारण की अपनी विशाल क्षमता के बावजूद कम प्रतिनिधित्व करते हैं। नमक दलदल और पीट-समृद्ध आर्द्रभूमि, विशेष रूप से एस्टुआरिन और डेल्टाइक क्षेत्रों में, जलभराव वाली मिट्टी में महत्वपूर्ण कार्बन रखते हैं और जलवायु विनियमन और जल शोधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये पारिस्थितिक तंत्र, जब संरक्षित या बहाल होते हैं, तो कार्बन परिहार (क्षरण या रूपांतरण से उत्सर्जन को रोकना) और कार्बन हटाने (सक्रिय बहाली के माध्यम से अतिरिक्त कार्बन को जब्त करना) दोनों के लिए रास्ते पेश करते हैं।

इसी तरह की पहल गुजरात के भरूच में चल रही है, जहां समुदाय आधारित संगठनों के समर्थन से

पहले बंजर मडफ्लैट्स पर मैंग्रोव लगाए जा रहे हैं। ब्लू कार्बन फाइनेंस पारिस्थितिक बहाली और स्थायी आजीविका के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी प्रदान करता है। कार्बन क्रेडिट की पीढ़ी और बिक्री के माध्यम से, समुदाय बहाली गतिविधियों से प्रत्यक्ष वित्तीय लाभ प्राप्त करते हैं। ये क्रेडिट या तो परहेज उत्सर्जन का प्रतिनिधित्व करते हैं (अक्षुण्ण आर्द्रभूमि या मैंग्रोव के संरक्षण से जो अन्यथा नीचा होगा) या जब्त कार्बन (अपमानित क्षेत्रों में नई वनस्पति रोपण से)।

कार्बन क्रेडिट का मुद्रीकरण संरक्षण, समुदाय के नेतृत्व वाले नर्सरी विकास, वृक्षारोपण कार्य, निगरानी और स्थायी संसाधन उपयोग के लिए धन चैनलिंग के लिए एक आर्थिक तर्क प्रदान करता है। चल रही परियोजनाओं में, सह-लाभों में ईंधन की लकड़ी पर निर्भरता को कम करना, जंगल की आग की जांच करना और गैर-टिम्बर वन उत्पादों (एनटीएफपी) की स्थायी कटाई सुनिश्चित करना शामिल है। इसके अलावा, जंगल और किसान दोनों देशों पर कृषि वानिकी मॉडल और वृक्षारोपण गतिविधियों को एकीकृत करके, इस तरह की पहल पारिस्थितिक अखंडता को बहाल करते हुए ग्रामीण लचीलापन में सुधार करती है। स्वैच्छिक कार्बन बाजारों में नीले कार्बन क्रेडिट का प्रीमियम मूल्य - उनकी स्थायित्व, उच्च अतिरिक्त और पारिस्थितिकी तंत्र के सह-लाभ के कारण - इन परियोजनाओं को निजी निवेशकों और उच्च गुणवत्ता वाले ऑफसेट की मांग करने वाले अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए आकर्षक बनाता है। भारत अपने सबसे जलवायु-कमजोर जिलों में आजीविका, खाद्य सुरक्षा और आपदा तैयारियों में सुधार करते हुए बड़े पैमाने पर तटीय पारिस्थितिकी तंत्र बहाली की ओर अंतरराष्ट्रीय जलवायु वित्त को चैनल करने के लिए इस गति का उपयोग कर सकता है। भारत की नीली कार्बन क्षमता को पूरी तरह से अनलॉक करने के लिए, एक केंद्रित, बहु-आयामी रणनीति आवश्यक है - विज्ञान, नीति, बाजारों और सामुदायिक जुड़ाव को जोड़ना। एक राष्ट्रीय ब्लू कार्बन रणनीति को इन पारिस्थितिक तंत्रों को भारत की जलवायु और तटीय प्रबंधन ढांचे में एकीकृत करना चाहिए, जिसमें SAPCC और NAFCC शामिल हैं।

समुद्री घास, नमक दलदल, पीटलैंड और आर्द्रभूमि को शामिल करने के लिए मैंग्रोव से परे विस्तार उच्च अखंडता कार्बन क्रेडिट के लिए गुंजाइश को व्यापक करेगा। विशेष रूप से मन्नार, पाल्क बे और लक्षद्वीप की खाड़ी में उपग्रह डेटा, ड्रोन सर्वेक्षण और पानी के नीचे की कल्पना का उपयोग करके समुद्र के किनारे का नक्शा और निगरानी करने के लिए समर्पित प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिक परिशुद्धता - उच्च-रिज़ॉल्यूशन मैपिंग, बायोमास और मिट्टी कार्बन माप और एआई-आधारित मॉडलिंग के माध्यम से - विश्वसनीय सत्यापन सुनिश्चित करेगा। संस्थागत और सामुदायिक क्षमता का निर्माण परियोजना स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है, साथ ही समान लाभ-साझाकरण तंत्र को एम्बेड करना।

एक वैश्विक नेतृत्व अवसर भारत वैश्विक नीले कार्बन आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए एक अद्वितीय अवसर की दहलीज पर खड़ा है। तटीय और आर्द्रभूमि पारिस्थितिक तंत्र, सिद्ध संस्थागत क्षमता और एक उभरते कार्बन बाजार की एक समृद्ध विविधता के साथ, देश यह प्रदर्शित कर सकता है कि जलवायु वित्त और प्रकृति-आधारित समाधान जलवायु परिवर्तन और सामाजिक भेद्यता को संबोधित करने के लिए हाथ से कैसे जा सकते हैं।

भारत ट्रिपल जीत हासिल कर सकता है - कार्बन खोज को बढ़ाया, जैव विविधता को मजबूत किया और सामुदायिक लचीलापन में सुधार किया। जैसे-जैसे अंतरराष्ट्रीय मांग उच्च-अखंडता, सह-लाभकारी कार्बन क्रेडिट के लिए बढ़ती है, भारत की रणनीतिक स्थिति और प्रारंभिक कार्रवाई इसे नीले कार्बन नवाचार में एक अग्रदूत के रूप में स्थापित कर सकती है, यह सुनिश्चित करती है कि इसके तटीय परिदृश्य न केवल संरक्षित हैं, बल्कि वैश्विक जलवायु संपत्ति के रूप में भी मूल्यवान हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

मानव दिमाग आपकी यादों को अनुक्रमिक क्रम में रखने के लिए स्टोरेज ट्रिक का उपयोग करता है : विजय गर्ग

वैज्ञानिकों ने दशकों से मस्तिष्क की मेमोरी स्टोरेज प्रणाली को लेकर हैरान हैं। कई लोगों ने सोचा है कि कैसे हमारे दिमाग नई जानकारी को मिटा सकते हैं जो हम पहले से जानते हैं।

कठोर जांच के बाद, शोधकर्ताओं ने पाया है कि जगह कोशिकाएं इस प्रक्रिया के लिए आवश्यक सुराग रखती हैं।

मेमोरी स्टोरेज मचान का उपयोग करता है जगह की कोशिकाओं को पहली बार लगभग आधी सदी पहले बताया गया था। शुरुआती सबूतों से पता चला कि वे तब सक्रिय हो जाते हैं जब एक कृंतक एक भूलभुलैया में एक विशेष स्थान पर रहता है।

आगे के काम से पता चला कि ये कोशिकाएं हिप्पोकैम्पस में रहती हैं, जो स्मृति के लिए एक मुख्य क्षेत्र है। वे एन्टोरिनल कॉर्टेक्स में ग्रिड कोशिकाओं के साथ संरेखित करते हैं।

साथ में, ये आबादी एक नींव बनाती है। स्थानिक विवरण और व्यक्तिगत अनुभव दोनों इस मचान पर आराम करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि विवरण अलग-अलग तंत्रिका पैटर्न के अनुरूप हैं।

यह पॉइंटर्स रखता है, जो मस्तिष्क को संवेदी कॉर्टेक्स के विशाल क्षेत्रों में संग्रहीत महीन सामग्री तक निर्देशित करता है। जब भी हम इसे याद करते हैं तो वह सूचकांक पहले संग्रहीत जानकारी को भर सकता है।

सरल शब्दों में, हिप्पोकैम्पस स्थायी रूप से हर विवरण को धारण नहीं करता है। यह हमें कॉर्टेक्स में सही जगह पर ले जाता है, जहां प्रत्येक संग्रहीत मेमोरी के नट और बोल्ट झूठ बोलते हैं।

हिप्पोकैम्पस को समझना - मूल बातें हिप्पोकैम्पस को औसत दर्जे के लौकिक लोब के भीतर गहराई से टक किया जाता है। अल्पकालिक यादों को दीर्घकालिक में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका के कारण, हिप्पोकैम्पस के बिना, अनुभव बस होने के बाद क्षणों को फीका कर देंगे।

यह मस्तिष्क क्षेत्र हमें अंतरिक्ष नेविगेट करने, मानसिक मानचित्र बनाने और हमारे वातावरण में खुद को उन्मुख करने में भी मदद करता है।

यह एमिग्डाला और प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स के साथ मिलकर काम करता है, एक नेटवर्क बनाता है जो यह नियंत्रित करता है कि हम अनुभव से कैसे सीखते हैं और घटनाओं के लिए भावनात्मक रूप से

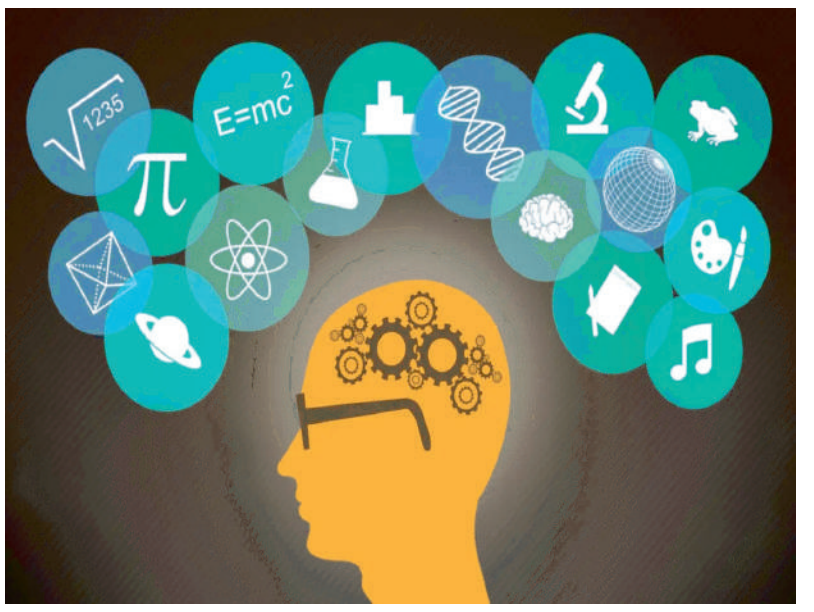

प्रतिक्रिया देते हैं।

हिप्पोकैम्पस को नुकसान गंभीर स्मृति मुद्दों को जन्म दे सकता है, जैसे कि एंटेरोग्रेड भूलने की बीमारी - नई यादें बनाने में असमर्थता।

अल्जाइमर रोग के रोगियों और मस्तिष्क आघात या स्ट्रोक के मामलों में इस तरह की हानि देखी गई है।

शोध से यह भी पता चलता है कि हिप्पोकैम्पस अत्यधिक प्लास्टिक है - यह वयस्कता में भी नए न्यूरॉन्स विकसित कर सकता है, एक प्रक्रिया जिसे न्यूरोजेनेसिस के रूप में जाना जाता है।

मचान के अंदर ग्रिड कोशिकाएं बार-बार पैटर्न बनाती हैं जो त्रिकोणीय जाली की तरह दिखती हैं। प्रत्येक त्रिकोणीय व्यवस्था, जिसे एक कुएं के रूप में संदर्भित किया जाता है, एक विशिष्ट एपिसोड की ओर इशारा कर सकती है।

सामग्री स्वयं इन कुओं में नहीं रखी गई है। इसके बजाय, प्रत्येक कुआं एक लेबल है जो मस्तिष्क को संवेदी कॉर्टेक्स में सही मेमोरी स्टोरेज स्थान को संदर्भित करता है।

जैसे-जैसे अधिक घटनाएं घटती हैं, सर्किट उन्हें फैलाता है, पुरानी यादों को धीरे से फीका करने की अनुमति देता है। मॉडल तथाकथित मेमोरी क्लिफ को बायपास करता है, एक रोड़ा जो अक्सर पुराने कम्प्यूटेशनल फ्रेमवर्क को प्रभावित करता है।

यह डिज़ाइन दर्शाता है कि कैसे वास्तविक तंत्रिका नेटवर्क कठोर सीमा को हिट किए बिना नए आइटम और पुराने स्मरण दोनों को समायोजित करते हैं।

स्मृति रणनीतियों के लिए निहितार्थ उन घटनाओं के लिए प्रशिक्षण जिनके लिए जानकारी के बड़े सेटों को याद करने की आवश्यकता होती है, इन निष्कर्षों से लाभ उठा सकते हैं। समय-सम्मानित मेमोरी पैलेस विधि नए डेटा से लिंक करने के लिए स्थानिक पृष्ठभूमि का उपयोग करने की धारणा के साथ संरेखित करती है।

विशेषज्ञ अक्सर एक परिचित स्थान की तस्वीर लेते हैं और वहां एक संरचित अनुक्रम में आइटम रखते हैं। बाद में, वे उन वस्तुओं को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रत्येक स्थान पर मानसिक रूप से फिर से आते हैं।

यह नया मॉडल बताता है कि पहले से ही आरोपित मेमोरी स्टोरेज मैप को टैप करने से बड़े पैमाने पर याद रखने के लिए संज्ञानात्मक स्थान खाली हो सकता है।

सिद्धांत सीधा है। प्लेसहोल्डर्स के रूप में विशिष्ट तंत्रिका कुओं को नामित करके, हम उन्हें जम्बल किए बिना घटनाओं की एक श्रृंखला को लिंक कर सकते हैं।

हमारी आंतरिक सूचकांक प्रणाली कोशिकाओं के सही क्लस्टर को बुलाती है। यह क्लस्टर संवेदी क्षेत्रों में धराशायी होने वाली महीन सामग्री को इंगित करता है।

अनुक्रमिक क्रम समझाया कभी-कभी, हमें एक कहानी को सही क्रम में याद करने की आवश्यकता होती है। यह ढांचा इस बात पर प्रकाश डालता है कि प्रत्येक कुएं आगे क्या आता है, इसके बारे में संकेत देता है।

यह हमें उन अनुभवों को सही क्रम में फिर से खेलने में मदद करता है। मॉडल स्थान-आधारित और अनुभव-आधारित विवरण दोनों के लिए एक ही व्यवस्था पर खींचता है।

यादें जहां आप पिछले हफ्ते दोपहर का भोजन खाया या कैसे आप एक मुश्किल लंबी पैदल यात्रा निशान maneuvered एक ही मचान से उभर सकते हैं । आप उस सूचकांक पर टैप करते हैं जो आपको अच्छी तरह से दाईं ओर ले जाता है, और बाकी स्वाभाविक रूप से जगह में गिर जाता है।

भविष्य स्मृति भंडारण अध्ययन ब्याज का एक क्षेत्र यह है कि अल्पकालिक स्मरण अधिक सामान्य तथ्यों में कैसे जम जाता है। इन्हें कभी-कभी शब्दार्थ यादें कहा जाता है।

ताजा दृष्टिकोण यह जांच करने के लिए एक संरचना प्रदान करता है कि कैसे व्यक्तिगत घटनाओं को पर्याप्त समय के बाद प्रासंगिक विवरण से अलग किया जा सकता है।

यह अध्ययन इस विचार का समर्थन करता है कि हिप्पोकैम्पस और एंटोरिनल सर्किट अचानक नुकसान के बिना भारी मात्रा में जानकारी संग्रहीत करने के लिए एक एकीकृत संदर्भ प्रणाली बनाते हैं।

यह सब रेखांकित करता है कि एक ही सर्किट जो एक बार हमारे पूर्वजों को जंगलों और रेगिस्तानों के माध्यम से निर्देशित करता है, जन्मदिन, दैनिक कामों और प्रमुख जीवन मील के पत्थर के स्मरण का प्रबंधन भी कर सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

13 गणित की शाखा के पिता डब्ल्यूएचओ ने दुनिया को बदल दिया

विजय गर्ग

1.। आर्किमिडीज: गणित के पिता, आर्किमिडीज अपनी उम्र के सबसे बड़े गणितज्ञ थे। ज्यामिति में उनके योगदान ने विषय में क्रांति ला दी और उनके तरीकों ने अभिन्न पथरी का अनुमान लगाया। वह एक व्यावहारिक व्यक्ति था जिसने चरखी और आर्किमिडियन स्क्रू पंपिंग डिवाइस सहित विभिन्न प्रकार की मशीनों का आविष्कार किया था।

२.। यूक्लिड: ज्यामिति के पिता, यूक्लिड एक ग्रीक गणितज्ञ थे जो ज्यामिति पर अपने ग्रंथ के लिए जाने जाते थे: तत्व। इसने २००० से अधिक वर्षों तक पश्चिमी गणित के विकास को प्रभावित किया।

३.अल-ख़्वारिज़्मी: बीजगणित के पिता, अल-ख़्वारिज़्मी एक इस्लामी गणितज्ञ थे जिन्होंने हिंदू-अरबी अंकों पर लिखा था। एल्गोरिथ्म शब्द उसके नाम से निकला है। उनका बीजगणित ग्रंथ हिसब -्बीज़गणित मुकाबले हमें बीजगणित शब्द देता है और इसे बीजगणित पर लिखी जाने वाली पहली पुस्तक माना जा सकता है।

4। इस्साक न्यूटन: कैलकुलस के पिता, आइजैक न्यूटन अपनी पीढ़ी के सबसे महान अंग्रेजी गणितज्ञ थे। उन्होंने अंतर और अभिन्न पथरी की नींव रखी। प्रकाशिकी और गुरुत्वाकर्षण पर उनका काम उन्हें दुनिया के सबसे महान वैज्ञानिकों में से एक बनाता है।

5.। कार्ल फ्रेडरिक गॉस: प्रिंस ऑफ मैथमेटिक्स, कार्ल फ्रेडरिक गॉस ने गणित और भौतिकी दोनों में कई तरह के क्षेत्रों में काम किया, जिसमें संख्या सिद्धांत, विश्लेषण, अंतर ज्यामिति, जियोडेसी, चुंबकत्व, खगोल विज्ञान और प्रकाशिकी शामिल थे। उनके काम का कई क्षेत्रों में बहुत प्रभाव रहा है।

६। लियोनहार्ड यूलर: गणित के राजा / ग्राफ सिद्धांत के पिता, लियोनहार्ड यूलर एक स्विस गणितज्ञ थे, जिन्होंने विश्लेषणात्मक ज्यामिति, त्रिकोणमिति, ज्यामिति, पथरी और संख्या सिद्धांत सहित गणित और भौतिकी की एक विस्तृत श्रृंखला में भारी योगदान दिया।

7.। पियरे डी फेरमत: नंबर थ्योरी के पिता, वह एक फ्रांसीसी वकील और सरकारी अधिकारी थे जो संख्या सिद्धांत में अपने काम के लिए सबसे अधिक याद किए जाते थे; विशेष रूप से फेरमत के अंतिम प्रमेय के लिए। वह पथरी की नींव में भी महत्वपूर्ण है।

8। हेनरी पोइंकेरे: टोपोलॉजी का इकट्ठा, उन्हें कहा जा सकता है कि वे बीजगणितीय टोपोलॉजी के प्रवर्तक और कई जटिल चर के विश्लेषणात्मक कार्यों के सिद्धांत के रूप में हैं।

९। कार्ल वीयरस्ट्रैस: फादर ऑफ एनालिसिस, वह पावर सीरीज के माध्यम से जटिल कार्यों के सिद्धांत के निर्माण के लिए जाने जाते हैं।

10। स्टीफन बानाच: कार्यात्मक विश्लेषण के पिता, उन्होंने आधुनिक कार्यात्मक विश्लेषण की स्थापना की और टोपोलॉजिकल वेक्टर रिक्त स्थान के सिद्धांत में प्रमुख योगदान दिया। इसके अलावा, उन्होंने सिद्धांत, एकीकरण और ऑर्थोगोनल श्रृंखला को मापने में योगदान दिया।

11। ईवीएसत गैलोइस: समूह सिद्धांत के पिता, वह एक फ्रांसीसी गणितज्ञ जो निर्धारित करने की एक विधि का उत्पादन जब एक सामांय समीकरण कट्टरपंथियों द्वारा हल किया जा सकता है और प्रारंभिक समूह सिद्धांत के अपने विकास के लिए प्रसिद्ध है । द्वंद्व से लड़ने के बाद उनकी मृत्यु बहुत कम हो गई।

१२। चार्ल्स बैबेज: कंप्यूटर के पिता, बैबेज एक अंग्रेजी पॉलीमैथ थे। एक गणितज्ञ, दार्शनिक, आविष्कारक और मैकेनिकल इंजीनियर, बैबेज ने एक डिजिटल प्रोग्रामेबल कंप्यूटर की अवधारणा की उत्पत्ति की। बैबेज ने आधुनिक विश्लेषणात्मक कंप्यूटर की उत्पत्ति की। उन्होंने आधुनिक इलेक्ट्रिक कंप्यूटर के अग्रदूत विश्लेषणात्मक इंजन के सिद्धांत का आविष्कार किया।

13। रेने डेसकार्टस को व्यापक रूप से आधुनिक गणित का जनक माना जाता है। उनका प्रमुख योगदान समन्वय ज्यामिति का विकास था, जिसने बीजगणित और ज्यामिति को संयुक्त किया, आधुनिक गणित के अधिकांश के लिए नींव रखी। यहाँ क्यों Descartes को आधुनिक गणित का जनक माना जाता है: समन्वय ज्यामिति: कार्टेशियन समन्वय प्रणाली को शुरू करके बीजगणित और ज्यामिति के बीच की खाई को पाटने का श्रेय डेसकार्टेस को दिया जाता है। इस प्रणाली ने बीजगणितीय समीकरणों का उपयोग करके ज्यामितीय आकृतियों के प्रतिनिधित्व के लिए अनुमति दी, गणितीय विचार में क्रांति ला दी। पथरी पर प्रभाव: समन्वय ज्यामिति में उनका काम आइजैक न्यूटन और गॉटफ्रीड विल्हेम लीबनिज द्वारा पथरी के विकास का एक महत्वपूर्ण अग्रदूत था। दार्शनिक प्रभाव डेसकार्टेस एक दार्शनिक के साथ-साथ एक गणितज्ञ भी थे, और उनके दार्शनिक विचारों ने आधुनिक विचार के विकास को काफी प्रभावित किया। उन्हें अक्सर आधुनिक दर्शन के जनक के रूप में जाना जाता है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

योग फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ

विजय गर्ग

जैसा कि भारत 21 जून को योग के 11 वें अंतर्राष्ट्रीय दिवस का जश्न मनाने के लिए तैयार है, सरकार इस वर्ष के विषय के रूप में ₹योग फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ₹ के साथ इस अवसर को चिह्नित करने के लिए राष्ट्रव्यापी घटनाओं की एक भीड़ का आयोजन कर रही है मुख्य कार्यक्रम योग संगम, 21 जून, 2025 को सुबह 6:30 बजे से 7:45 बजे तक पूरे भारत में 1 लाख से अधिक स्थानों पर कॉमन योगा प्रोटोकॉल के आधार पर एक सिंक्रोनाइज्ड मास योग प्रदर्शन का आयोजन करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में राष्ट्रीय कार्यक्रम का नेतृत्व करेंगे। इस सामूहिक उत्सव का उद्देश्य योग के कालातीत अभ्यास और आज की दुनिया में इसकी स्थायी प्रासंगिकता के लिए हमारी साझा प्रतिबद्धता की पुष्टि करना है। प्राचीन भारतीय परंपरा का एक अमूल्य उपहार, योग शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सबसे भरोसेमंद साधनों में से एक के रूप में उभरा है। ₹योग₹ शब्द संस्कृत की जड़ 'युज' से लिया गया है, जिसका अर्थ है ₹शामिल होना,₹ ₹योग करना,₹ या ₹एकजुट होना।₹ यह मन और शरीर की एकता, विचार और क्रिया, संयम और पूर्ति, मानव और प्रकृति के बीच सद्भाव और स्वास्थ्य और कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का

प्रतीक है। अपनी सार्वभौमिक अपील को पहचानते हुए, 11 दिसंबर, 2014 को, संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को संकल्प 69/131 द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना का मसौदा प्रस्ताव भारत द्वारा प्रस्तावित किया गया था और इसे रिकॉर्ड 175 सदस्य राज्यों द्वारा समर्थन दिया गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार 27 सितंबर, 2014 को महासभा के 69 वें सत्र के उद्घाटन के दौरान अपने संबोधन में प्रस्ताव पेश किया था। 21 जून की तारीख को चुना गया क्योंकि यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन ग्रीष्मकालीन संक्रांति है। यह दिन प्रकृति और मानव कल्याण के बीच एक प्रतीकात्मक सद्भाव का प्रतिनिधित्व करता है और कई संस्कृतियों में महत्वपूर्ण है। यह समग्र स्वास्थ्य क्रांति के युग में विकसित हुआ, जिसमें इलाज के बजाय रोकथाम पर ध्यान दिया गया। 2015 में अपने पहले संस्करण के बाद से, भारत ने आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में विश्व स्तर पर उत्सव का नेतृत्व किया है, जिसमें राज्य सरकारों, विदेशों में भारतीय मिशनों और संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों का सक्रिय समर्थन है, आयुष मंत्रालय के एक आधिकारिक बयान में कहा गया है। योग दिवस के प्रतीक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, बयान में कहा गया है, ₹लोगो में दोनों हाथों की तह योग का प्रतीक है, संघ, जो सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना के संघ को दर्शाता है, मन और शरीर, मनुष्य और प्रकृति के बीच एक आदर्श सद्भाव; स्वास्थ्य और कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण। भूरे रंग के पत्ते पृथ्वी तत्व का प्रतीक हैं, हरे पत्ते प्रकृति का प्रतीक हैं, नीला जल तत्व का प्रतीक है, चमक अग्नि तत्व का प्रतीक है, और सूर्य ऊर्जा और प्रेरणा के स्रोत का प्रतीक है। लोगो मानवता के लिए सद्भाव और शांति को दर्शाता है, जो योग का सार है।₹ योग दिवस की यात्रा असाधारण से कम नहीं रही है, क्योंकि 2018 में 9.59 करोड़ व्यक्तियों की मामूली भागीदारी से यह उत्सव तेजी से बढ़ा है। 2024 में, अनुमानित 24.53 करोड़ लोग दुनिया भर में समारोह में शामिल हुए, इस कार्यक्रम की विशाल वैश्विक अपील का प्रदर्शन किया। रिलीज में कहा गया है कि यह दिन एक वैश्विक कल्याण आंदोलन बन गया है, जो देशों में लाखों लोगों को एकजुट करता है। यह वर्ष योग के 11 वें अंतर्राष्ट्रीय दिवस को ₹योग फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ₹ विषय के साथ चिह्नित करता है। यह विषय स्वास्थ्य, स्थिरता और पर्यावरण के परस्पर जुड़ाव के बारे में एक महत्वपूर्ण सच्चाई को प्रतिध्वनित करता है, जो भारत के ₹वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर₹ विजन के साथ अपने जी 20 प्रेसीडेंसी के दौरान हाइलाइट किया गया है। योग 2025 का अंतर्राष्ट्रीय दिवस केवल एक दिन का पालन नहीं होगा - यह समग्र स्वास्थ्य, पर्यावरण सद्भाव और वैश्विक कल्याण के लिए भारत की स्थायी प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करेगा। अपने मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में ₹योग फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ₹ के साथ, भारत शारीरिक फिटनेस को दिमागदार जीवन से जोड़ने में दुनिया का नेतृत्व करना जारी रखता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद

पृथ्वी की रक्षा के लिए एक गाइड

विजय गर्ग

मान लीजिए कि एक दिन खगोलशास्त्री घोषणा करते हैं कि हमारा सबसे बुरा सपना सच हो गया है: एक बड़ी वस्तु प्रभाव की एक महत्वपूर्ण संभावना के साथ पृथ्वी की ओर बढ़ रही है। हम क्या करें?

घबराने के अलावा मानवता के पास अपना बचाव करने के लिए कुछ विकल्प हैं। लेकिन मैं आपको चेतावनी दूंगा: इनमें से अधिकांश विशुद्ध रूप से काल्पनिक हैं, इसलिए यदि कोई खतरा खुद को पेश करता है, तो बस आशा है कि हमारे पास तैयार करने के लिए पर्याप्त समय है।

सबसे सीधा दृष्टिकोण एक गतिज प्रभाव है: जो कुछ भी हमें आने वाले क्षुद्रग्रह या धूमकेतु में मिला है, उसे पटक देना। इस दृष्टिकोण का वास्तव में नासा के डार्ट मिशन के साथ परीक्षण किया गया है, और यह अपेक्षाकृत छोटे (कुछ सौ मीटर से कम) क्षुद्रग्रहों या धूमकेतु के लिए सबसे अच्छा काम करता है जिसे दूर से देखा जा सकता है। विचार बहुत कम मात्रा में खतरे के वेग को कम करना है। यदि हम इसे जल्दी करते हैं, तो धूमकेतु या क्षुद्रग्रह पूरी तरह से अलग कक्षा में समाप्त हो जाएगा और सुरक्षित रूप से पृथ्वी से गुजर जाएगा।

अगला सबसे परिष्कृत दृष्टिकोण वस्तु को भेजने वाले किसी भी परमाणु दांत पर रखना है। यदि हम धूमकेतु या क्षुद्रग्रह के बगल में या उसके अंदर बम विस्फोट करते हैं, तो हम दो चीजों को प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं: क) बड़ी चट्टान को कई छोटे लोगों में तोड़ दें जो तब हमारे वायुमंडल में जल जाएंगे, ख) यदि वह विफल हो जाता है, तो कम से कम क्षुद्रग्रह या धूमकेतु की दिशा बदलें। हालांकि यह विधि सबसे आशाजनक लगती है, नवीनतम शोध बताते हैं कि यह बड़े क्षुद्रग्रहों से

निपटने का सबसे अच्छा तरीका नहीं हो सकता है। समस्या यह है कि वे वस्तुएं विशालकाय बोल्डर की तरह नहीं हैं, लेकिन मलबे के ढीले ढेर की तरह मुश्किल से एक साथ चिपके हुए हैं। चूंकि उन मलबे के ढेर में बहुत अधिक स्थान और अंतराल है, इसलिए एक परमाणु हथियार के पास प्रभावी रूप से चारों ओर धकेलने के लिए बहुत कुछ नहीं है।

शुक्र है कि कुछ और सूक्ष्म दृष्टिकोण हैं। यदि हम क्षुद्रग्रह या धूमकेतु के चारों ओर कक्षा में एक विशाल दर्पण तैनात कर सकते हैं, तो हम उस तरह से इसकी कक्षा बदल सकते हैं। क्षुद्रग्रह और धूमकेतु बहुत अस्थिर स्थान हैं, उनकी सतह सामग्री लगातार अंतरिक्ष में दूर वाष्पित हो रही है, खासकर जब वे सूर्य के करीब आते हैं। आम तौर पर यह वाष्पीकरण सभी दिशाओं में समान रूप से होता है क्योंकि वस्तु बेतरतीब ढंग से चारों ओर से टकराती है, लेकिन अगर हमें दूसरे की तुलना में एक तरफ अधिक गर्म करना था, तो वाष्पीकरण एक बहुत कमजोर रॉकेट निकास के रूप में कार्य करेगा, जो क्षुद्रग्रह को एक नई दिशा में धकेल देगा।

यदि बाकी सब विफल हो जाता है, तो हम सिर्फ गुरुत्वाकर्षण के साथ खेल भी खेल सकते हैं। यदि हम किसी अंतरिक्ष यान को किसी क्षुद्रग्रह के चारों ओर कक्षा में रखते हैं और धीरे-धीरे बदलते हैं जहां अंतरिक्ष यान का नेतृत्व किया जाता है, तो हम बहुत धीरे-धीरे क्षुद्रग्रह को चारों ओर खींच सकते हैं जब तक कि यह अधिक अनुकूल कक्षा तक न पहुंच जाए।

विचारों के बहुत सारे, और मानवता को बचाने के लिए बहुत सारे मौके। लेकिन ये सभी विचार एक बात को साझा करते हैं: उन सभी को प्रभाव से पहले, वर्षों या दशकों में खतरे को अच्छी तरह से जानने की आवश्यकता होती है। इसका मतलब है कि हमारी रक्षा की पहली पंक्ति सतर्क सतर्कता है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

तन से आगे मन, और मन से आगे आत्मा: यही है योग की यात्रा

[सिर्फ शरीर नहीं, विचार भी लचीले हों — तभी पूर्ण होता है योग]

जब मन की गहराइयों में तूफान मच रहा हो, जीवन की राहें धुंध में खोई सी लगें, और आत्मा किसी अनजानी खोज में भटक रही हो—तब एक क्षण ठहरकर, आँखें बंद करके, गहरी साँसों के साथ अपने भीतर उतरने की कला ही योग है। यह वह पवित्र पल है, जहाँ दुनिया का शोर थम जाता है, समय रुक सा जाता है, और केवल तुम और तुम्हारी आत्मा के बीच एक अनमोल संवाद होता है। योग सिर्फ शरीर को मोड़ना नहीं, बल्कि मन को जोड़ना, आत्मा को संवारना और जीवन को एक नई लय देना है। यह वह प्राचीन भारतीय धरोहर है, जो आज विश्व की साँसों में बस चुकी है। हर साल 21 जून को, जब सूरज सबसे लंबे दिन की रोशनी बिखेरता है, पूरी दुनिया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में एक साथ साँस लेती है—एक ऐसी एकता में, जो न केवल शरीर को स्वस्थ करती है, बल्कि समाज को सशक्त और विश्व को शांतिपूर्ण बनाती है।

2025 की थीम—“योगा फॉर सेल्फ एंड सोसाइटी” (स्वयं और समाज के लिए योग)—एक ऐसा संदेश है, जो व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण को एक सूत्र में पिरोता है। यह थीम हमें बताती है कि जब हम अपने मन को शांत करते हैं, अपने शरीर को संतुलित करते हैं, तो यह शक्ति केवल हमारे भीतर नहीं रुकती; यह लहर बनकर हमारे परिवार, समुदाय और समाज तक पहुँचती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के 2023 के आँकड़ों के अनुसार, विश्वभर में 300 मिलियन से अधिक लोग मानसिक तनाव और अवसाद से जूझ रहे हैं। ऐसे में योग एक ऐसी वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पद्धति है, जो न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को पुनर्जीवन देती है, बल्कि सामाजिक सद्भाव और एकता को भी बढ़ावा देती है। एक जागरूक व्यक्ति ही समाज की नींव को मजबूत करता है, और योग वह औजार है, जो इस जागरूकता को जन्म देता है।

योग भारत की प्राचीन सभ्यता की देन है, जिसके बीज पतंजलि के योगसूत्रों में, वेदों की ऋचाओं में, और उपनिषदों के गहन दर्शन में मिलते हैं। योगसूत्र में कहा गया है, योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः—अर्थात योग मन की चंचल वृत्तियों को नियंत्रित करने की कला है। यह केवल आसनों या प्राणायाम तक सीमित नहीं, बल्कि अष्टांग योग के आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि—जीवन को समग्रता में जीने का मार्ग दिखाते हैं। यम के सिद्धांत, जैसे अहिंसा और सत्य, हमें न केवल दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं, बल्कि स्वयं के प्रति भी करुणा सिखाते हैं। आज की दुनिया में, जहाँ तनाव, अवसाद और सामाजिक विभाजन बढ़ रहे हैं, ये सिद्धांत हमें एक बेहतर इंसान और एक बेहतर समाज बनाने की प्रेरणा देते हैं।

आज का युग तकनीक का युग है, लेकिन यह एकाकीपन और तनाव का भी युग है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के 2021 के एक अध्ययन के अनुसार, नियमित योगाभ्यास तनाव हार्मोन कोर्टिसोल को 30% तक कम करता है, नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है, और हृदय रोग व मधुमेह जैसे रोगों के जोखिम को 25% तक घटाता है। लेकिन योग का प्रभाव केवल शारीरिक नहीं है; यह मन और आत्मा को भी संतुलित करता है। जब हम योग करते हैं, तो हम न केवल अपने शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि अपने व्यवहार, विचारों और दृष्टिकोण को भी परिष्कृत करते हैं। यह परिवर्तन व्यक्तिगत स्तर पर शुरू होता है, लेकिन इसका प्रभाव समाज तक फैलता है। उदाहरण के लिए, स्कूलों में योग शिक्षा से बच्चों में एकाग्रता बढ़ती है और तनाव कम होता है। एक अध्ययन के अनुसार, योग करने वाले छात्रों में शैक्षिक प्रदर्शन में 20% सुधार देखा गया। कार्यस्थलों पर योग सत्र कर्मचारियों की उत्पादकता को 15% तक बढ़ाते हैं। यह सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत है—एक ऐसी क्रांति, जो न हथियारों से होती है, न शोर से, बल्कि साँसों की गहराई और मौन की शक्ति से।

2014 में, जब भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव रखा, तो इसे रिकॉर्ड 177 देशों का समर्थन मिला। यह केवल एक राजनयिक विजय नहीं थी, बल्कि भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शक्ति की वैश्विक स्वीकार्यता थी। 21 जून 2015 को, जब पहला योग दिवस मनाया गया, तो दिल्ली के राजपथ पर 35,985 लोगों ने एक साथ योग करके गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। आज, विश्व के 190 से अधिक देशों में योग दिवस मनाया जाता है। न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर से लेकर पेरिस के एफिल टावर तक, सिडनी के ओपेरा हाउस से लेकर टोक्यो के पार्कों तक, लाखों लोग एक साथ योग करते हैं। यह दृश्य केवल सौंदर्यपूर्ण नहीं, बल्कि मानवता की एकता और विश्व शांति का प्रतीक है। जब इतने लोग एक लय में साँस लेते हैं, तो लगता है जैसे धरती खुद ध्यानमग्न हो गई हो।

2025 की थीम—“स्वयं और समाज के लिए योग”—हमें यह भी सिखाती है कि योग सार्वभौमिक है। यह न किसी धर्म से बंधा है, न उम्र से, न लिंग से। गर्भवती महिलाओं के लिए प्रीनेटल योग, वरिष्ठ नागरिकों के लिए चेयर योग, और बच्चों के लिए प्ले योग—हर कोई योग को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपना सकता है। यह समावेशिता ही योग को एक वैश्विक आंदोलन बनाती है। आज, योग भारत की सॉफ्ट पावर का प्रतीक बन चुका है, जो विश्व को न केवल स्वास्थ्य, बल्कि शांति और सह-अस्तित्व का मार्ग दिखा रहा है।

इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर, हमें यह प्रण लेना चाहिए कि योग को केवल एक वार्षिक उत्सव तक सीमित न रखें। सुबह के 10 मिनट का सूर्य नमस्कार, 5 मिनट का प्राणायाम, या 2 मिनट का ध्यान भी हमारे जीवन में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है। बच्चों को योग सिखाएँ, ताकि वे तनावमुक्त और जागरूक बनें। बुजुर्गों को प्रेरित करें, ताकि वे स्वस्थ और सक्रिय रहें। और सबसे महत्वपूर्ण, योग के दार्शनिक सिद्धांतों—अहिंसा, सत्य, संयम—को अपने जीवन में उतारें, ताकि हम न केवल स्वयं को, बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित कर सकें।

जब हम अपनी आत्मा को शांत करते हैं, तो हम समाज में सकारात्मक बदलाव की नींव रखते हैं। योग केवल आसनों का अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन का उत्सव है। यह वह संगीत है, जो हमारी आत्मा को थामता है, हमारे मन को जागृत करता है, और समाज को एकजुट करता है। 21 जून 2025 को, जब हम योग करें, तो यह केवल एक दिन का अभ्यास न हो, बल्कि एक नई शुरुआत हो—एक ऐसी शुरुआत, जो हमें स्वयं से जोड़े, समाज को सशक्त करे, और विश्व को शांति का संदेश दे। क्योंकि योग केवल साँसों की लय नहीं, बल्कि मानवता की धड़कन है। आइए, इस योग दिवस पर हम एक वादा करें—स्वस्थ तन, स्थिर मन, और सजग समाज की नींव रखने का। यही योग का सच्चा सार है, यही भारत की अनमोल देन है, और यही मानवता का भविष्य है—एक ऐसा भविष्य, जहाँ हर साँस शांति की, हर कदम एकता की, और हर मन जागरूकता की कहानी कहे।

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी (मप्र)

आत्मा का परमात्मा से मिलन ही योग है

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी यानी कि 21 जून 2025 को हम 11 वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने जा रहें हैं। पाठकों को बताता चलूं कि योग शब्द का अर्थ 'एक्य' या 'एकत्व' होता है, जो संस्कृत धातु 'युज' से निर्मित है। युज का अर्थ होता है 'जोड़ना'। यानी योग का सीधा सा मतलब है 'जोड़ना।' योग जोड़ने का कार्य करता है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि 'जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही योग है।' गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है 'योग : कर्मसु कौशलम्' अर्थात योग से कर्मों में कुश्लाता आती है। व्यावहारिक स्तर पर योग शरीर, मन और भावनाओं में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने का एक साधन है। आज की युवा पीढ़ी भौतिकता के साये में जी रही है, वह अतिमहत्वाकांक्षा की शिकार हो गई है। सच तो यह है कि आज की युवा पीढ़ी पढ़ाई, करियर, नौकरी-पेशा, विभिन्न पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक प्रतिस्पर्धा के बीच लगातार मानसिक दबाव में जी रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इन चुनौतियों ने विशेषकर आज हमारी युवा पीढ़ी को इतनी अधिक नकारात्मकता से घेर लिया है कि वे आज लगातार तनाव और अवसाद के शिकार हो रहे हैं। इसका सीधा असर उनके मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। योग आसन, मुदाओं और बंद का समावेश है, जो हमें तनाव और अवसाद से तो बाहर निकालने की अभूतपूर्व क्षमताएं तो रखता ही है, यह हमारे जीवन को सकारात्मक ऊर्जा से भी ओतप्रोत करता है। आज के समय में महर्षि पतंजलि के योग सूत्र का श्लोक-'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अत्यंत ही प्रासंगिक प्रतीत होता है। उनके अनुसार मन की चंचल वृत्तियों का नियंत्रण ही योग है। यदि हम सरल शब्दों में कहें तो 'व्यक्ति के लिए अपने मन की नकारात्मकता पर काबू पाना ही योग है।' यानी योग ही एक ऐसा माध्यम है, जिससे मानव अपने मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक स्वास्थ्य को बनाये रख सकता है। बहरहाल, यहां यदि हम योग की परिभाषाओं की बात करें तो अनेक योगियों, गुरूओं और विद्वानों ने इसे परिभाषित किया है। मसलन, श्री श्री रविशंकर के अनुसार 'योग सिर्फ व्यायाम और आसन ही है। यह भावनात्मक एकीकरण और रहस्यवादी तत्त्व का स्पर्श लिये हुए एक आध्यात्मिक ऊँचाई है, जो आपको सभी कल्पनाओं से परे की एक झलक देता है।' ओशो के अनुसार 'योग को धर्म, आस्था और अंधविश्वास के दायरे में बांधना गलत है। योग विज्ञान है, जो जीवन जीने की कला है। साथ ही यह पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। जहाँ धर्म हमें खूंटे से बाँधता है, वहीं योग सभी तरह के बंधनों से मुक्ति का मार्ग है।' बाबा रामदेव के अनुसार 'मन को भटकने न देना और एक जगह स्थिर रखना ही योग है।' आज जहां हम लोग नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव में जी रहे हैं और हर कहीं निराशा और अवसाद से घिरे हुए हैं, वहां 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध' यानी योग से मन की नकारात्मकता को काबू में किया जा सकता है और सकारात्मकता की ओर कदम बढ़ाए जा सकते हैं। बहरहाल, आज भारत योग की दिशा में निरंतर विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि योग न केवल भारत की प्राचीन व सनातन परंपरा व संस्कृति का अनमोल तोहफा है, बल्कि ये पूरी दुनिया के लिए सेहतमंद जीवन का रास्ता भी है। योग शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक संतुलन को भी बनाए रखने में मदद करता है। आज की बदलती जीवनशैली (आपा-धापी और दौड़-धूप भरी तनाव और अवसाद से ग्रस्त जीवनशैली) के बीच योग हमारे जीवन का अहम्‌हिस्सा बनता चला जा रहा है। पूरा विश्व आज योग के स्वास्थ्य लाभों के बारे में जान चुका है। ग्राम स्तर पर तो आज योग धीरे धीरे जन आंदोलन में बदलता चला जा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज ग्रामीण स्कूलों, आंगनवाड़ियों, पंचायत भवनों के साथ ही विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर योगा प्रोटोकॉल के अनुसार विशेष योग सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। न केवल गांवों में बल्कि शहरों में भी लोग निरंतर योग और प्राणायाम की ओर आकर्षित होते चले जा रहे हैं। बच्चे हों जा बूढ़े, जवान, महिलाओं सभी के लिये योग बहुत ही जरुरी है क्योंकि आज वैश्वीकरण के और विज्ञान के इस युग में स्वास्थ्य के लिए किसी भी व्यक्ति विशेष के पास समय नहीं है। भागदौड़ भरी जिंदगी में योग जीवन के अंग के रूप में बहुत ही जरुरी इसलिए हैं क्योंकि इससे हमारे स्वास्थ्य, शरीर पर सकारात्मक और अच्छे प्रभाव पड़ते है। यह हमें विभिन्न बीमारियों से बचाता है और हमें स्वस्थ रखने में अत्यंत ही उपयोगी व सहायक है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को स्वस्थ बनाये रखने के लिए योग आज के जीवन की महत्ती आवश्यकता व जरूरत है। वैसे, यहां पाठकों को बताता चलूं कि योग दिवस का आधिकारिक नाम यूएन अंतरराष्ट्रीय योग दिवस है। योग, ध्यान, बहस, सभा, चर्चा, विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति आदि के माध्यम से सभी देशों के लोगों के द्वारा मनाये जाने वाला एक विश्व स्तर का कार्यक्रम है। भारत सरकार इस पर बहुत ज्यादा ध्यान केंद्रित कर रही हैं ताकि हम सभी स्वस्थ व बेहतर जीवन जी सकें। हर साल योग दिवस की एक थीम रखी जाती है। पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2014 के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने ने यू.एन. की आम सभा से कहा था कि 'योग भारतीय परंपरा का एक अनमोल उपहार है।' बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि साल यानी 2025 में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम- 'योग फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ' यानी 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' रखी गई है। दरअसल, इस साल की यह थीम ये जाहिर करती है कि हमारी सेहत और धरती की सेहत एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। वास्तव में, यह भारत के उस पुराने विचार 'वसुधैव कुटुंबकम' से जुड़ी है, जिसका मतलब है- 'सारी दुनिया एक परिवार है।' कहना ग़लत नहीं होगा कि योग हमारे मस्तिष्क और शरीर की एकता को संगठित करता है; विचार और कार्य; अंकुश और सिद्धि; मानव और प्रकृति के बीच सौहार्द; स्वास्थ्य और अच्छे के लिये एक पूर्णतावादी दृष्टिकोण है। ये केवल व्यायाम के बारे में ही नहीं बल्कि विश्व और प्रकृति के साथ स्वयं एकात्मकता की समझ को खोजने के लिये भी है। अपनी जीवनशैली को बदलने और चेतना को उत्पन्न करने के द्वारा ये जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने में मदद कर सकता है। चलिये एक अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को अंगीकृत करने की ओर कार्य करें। योग दिवस के विभिन्न उद्देश्य तय किये गये हैं जो निम्न प्रकार से हैं- योग का मतलब होता है ₹जोड़₹ यह विश्व के समस्त लोगों को जोड़ने का काम करता है। लोगों के बीच वैश्विक समन्वय को मजबूत करता हैं। योग लोगों को शारीरिक और मानसिक बीमारियों के प्रति जागरुक बनाता है और साथ ही योग के माध्यम से विभिन्न बीमारियों का समाधन किया जा सकता है। वास्तव में देखा जाये तो योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य हमारी जीवन-शैली को बेहतर बनाता हैं। योग से हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य को लाभ होता है। कोई भी योग करके अपने वजन व कोलेस्ट्रोल की मात्रा को कम कर सकते हैं। योग हमें तनाव से दूर करके चिंता से राहत प्रदान करते हैं। यह हमारे अंतस की शांति के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। योग करके हम कैंसर, टीबी, ट्यूमर जैसी खतरनाक से खतरनाक बीमारियों से बच सकते हैं। यह हमारी प्रतिरोधक क्षमता में अपेक्षित सुधार कर ने में हमारी सहायता करते हैं। इससे हमारी सोच सकारात्मक, ऊर्जा में वृद्धि होती है और हम स्वयं को चुस्त दुरुस्त पाते हैं। शरीर शुद्ध होता है, टूट फूट से रक्षा होती हैं वगैरह वगैरह। योग व ध्यान से अंतर्ज्ञान की शक्ति में सुधार आते हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि इस बार अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को खास बनाने के लिए सरकार ने 10 प्रमुख कार्यक्रमों की योजना बनाई है। इनमें क्रमशः योग संगम-1 लाख स्थानों पर सामूहिक योग प्रदर्शन, योग बंधन-योग से सामाजिक जुड़ाव बढ़ाना, योग पार्क-सार्वजनिक स्थानों पर योग केंद्र, योग समावेश-सबको जोड़ने वाली योग पहल, योग प्रभाव-योग के सकारात्मक प्रभाव पर चर्चा, योग कनेक्ट-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स से योग जोड़ना, हरित योग-पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा योग, योग अनप्लग्ड-सोशल मीडिया से दूर शांति से योग, योग महाकुंभ-विशाल योग आयोजन तथा संयोग - अन्य कलाओं व परंपराओं के साथ योग का मेल जैसे प्रमुख कार्यक्रमों की योजना बनाई है। कहना ग़लत नहीं होगा कि योग हो या ध्यान, भारत ने युगों-युगों से विश्व को ऐसा कुछ दिया है, जो शायद ही विश्व के किसी अन्य देश ने संपूर्ण विश्व को दिया हो। शायद इसीलिए भारत को विश्व गुरू की संज्ञा दी जाती रही है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र के 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को 'विश्व योग दिवस' को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की गई थी। बहरहाल, ऊपर जानकारी दे चुका हूं कि योग हमारी संस्कृति का हिस्सा भी है। वास्तव में सच तो यह है कि योग कोई धर्म नहीं है, यह जीने की एक कला है, जिसका लक्ष्य है- स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन। योग के अभ्यास से व्यक्ति को मन, शरीर और आत्मा को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। यह भौतिक और मानसिक संतुलन द्वारा शांत मन और संतुलित शरीर की प्राप्ति कराता है। तनाव और चिंता का प्रबंधन करता है। आज की भागमभाग व दौड़ धूप की इस जिंदगी में 'योग व ध्यान' रामबाण सिद्ध हो रहे हैं। हमें योग को अपनी रोजमर्रा की जीवनशैली में आवश्यक रूप से शामिल करना चाहिए व हमारी युवा पीढ़ी को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

व्यंग्य : " शीर्षक यह है कि, " और अब मैं,चार्ज हो गया "।

“और अब मैं,चार्ज हो गया !₹ क्या कह रहे हो जनाब !मेरे समझ में नहीं आ रहा है कि,तुम क्या कहना चाहते हो ?तुम्हारे कहने का मतलब क्या है ?मेरे कहने का मतलब बिल्कुल साफ है और तों और मेरे कहने की नियत भी बिल्कुल ₹पाकर₹ साफ है ।

और अब मैं , चार्ज हो गया !मेरे कहने का मतलब तुम गलत निकाल रहे हो ।अर्थ का अनर्थ कर रहे हो।

अरे भाई मेरे नाराज मत हो ! अभी-अभी तुमने क्या कहा ₹ और अब मैं, चार्ज हो गया ₹ इस तरह से कहने का आपका आशय क्या था । सबसे पहले तुम्हें , वह बात बताना चाहिए ना जिसकी वजह से तुम चार्ज हो गए। जैसे भोजन करने से,चाय पीने से,दवा लेने से, दारु पीने से,तंबाकू खाने से या अन्य किसी वस्तु का उपयोग करने से या फिर किसी मन चाहे कार्य को करने से चार्ज हो गए। जिस अंदाज में अपने कहा । उसी अंदाज में मैंने आपको जवाब दें दिया ।अब इसमें मेरी क्या गलती ? हर आदमी किसी न किसी बहाने से रोज चार्ज हो रहा है , होता ही हैं इसमें कोई नई बात क्या है ?बस यही तुम्हारा दिमाग की बत्ती बुझ गई और तुम मेरे कहने का मतलब नहीं समझ पाए। तुम्हारी सोचने , समझने की बुद्धि छिर्ण हो गई । ये तुम क्या कह रहे हो ? मेरे सोचने समझने की ताकत खत्म हो गई ? देखो तुम साहित्यकार हो , मैं भी साहित्यकार हूं इस तरह का व्यवहार ठीक नहीं है ।मैंने कहा ₹ और अब मैं,चार्ज हो गया₹ तुम मेरी ₹आजादी की अभिव्यक्ति₹ के भावों की ₹अभिव्यक्ति₹ को तनिक भी नहीं समझे ।मेरे कहने के अर्थ का, तुम गलत अर्थ लग रहे हो। मैं तुम्हें यह कह रहा हूं कि, मैंने इस विषय पर व्यंग्य लिखा है ।उसका शीर्षक यह है कि, ₹ और अब मैं, चार्ज हो गया ₹ । अच्छा भाई ऐसा कहो ना साहित्यिकार महोदय। ₹ गुरु₹ तुम तो ठहरे व्यंग्यकार तुम्हारे व्यंग्य की भाषा मेरे समझ में नहीं आती ।मैं दो-दो लाइन लिखने वाला एक छोटा सा कलमकार हूं । मैं आपकी बात का मतलब शायद इसीलिए समझा नहीं पाया कि , आप क्या कहना चाहते हो ?मुझे माफ करो,मैं तुम्हें और तुम्हारी व्यंग्यग्यात्मक भाषा को समझ नहीं पाया मेरे कहने पर अब इसे समझ गए ना इसे ही व्यंग्य की भाषा कहते हैं। अरे !भाईजान आप समझ गए ना मैं क्या कहना चाहता हूं।

व्यंग्यकार महोदय आपके व्यंग्य की भाषा को मैं , ठीक से अच्छी तरह समझ गया “ और मैं कब, चार्ज हो गया ।₹ पता ही नहीं चला ।

प्रकाश हेमावत

भाटला के दलित ग्रामीण को धमकी देने व अधिवक्ता रजत कल्सन को जिंदा जलाने की धमकी देने वालों की गिरफ्तारी न होने पर दलित संगठनों का हांसी लघु सचिवालय पर जबरदस्त प्रदर्शन

हरियाणा पुलिस खुलकर जातिवादी गुंडों के साथ, दलित समाज की जायज आवाज दबाने का काम कर रही : रजत कल्सन

हांसी/हिसार। गांव भाटला के दलित ग्रामीणों ने हांसी पुलिस की दलित विरोधी कार्रवाई के विरुद्ध आज हांसी लघु सचिवालय के समक्ष जोरदार प्रदर्शन किया, तथा पुलिस व सरकार के खिलाफ जमकर भड़ास निकाली तथा नारेबाजी की, इस दौरान भारी पुलिस बल तैनात रहा।

भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण के मामले में कानूनी व सामाजिक लड़ाई लड़ने के लिए गठित भाटला दलित संघर्ष समिति के सदस्यों विकास भाटला, सुनील भाटला, जय भगवान भाटला, अजय भाटला, अमिताभ दहिया, सचिन चोपड़ा, राजेश भाटला ने आज लघु सचिवालय के सामने धरना प्रदर्शन में पुलिस पर आरोप लगाते हुए कहा कि भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण के लिए गठित टीम के हांसी दौरे के समय सामाजिक बहिष्कार के आरोपियों द्वारा सरेआम हांसी के विश्राम गृह के सामने जाट धर्मशाला पर दलित पीड़ित मीर सिंह को धमकी दी गई कि जिन-जिन दलितों ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित की गई एसआईटी के सामने बयान दिए हैं उन सब की गांव में जाकर टांगे काटेंगे, जिस बारे में हांसी थाना शहर में एफआईआर भी दर्ज है,परंतु पुलिस ने आरोपियों को आज तक गिरफ्तार नहीं किया है।

भाटला दलित संघर्ष समिति के सदस्यों ने आरोप लगाया कि सामाजिक बहिष्कार के आरोपियों ने विश्रामगृह में ही अधिवक्ता रजत कल्सन को जिंदा जलाने की धमकी दी तथा इस बारे में सामाजिक बहिष्कार के पीड़ितों ने हांसी थाना शहर में शिकायत दी हुई है, लेकिन पुलिस ने उसमें आज तक कोई एफआईआर दर्ज नहीं की।

धरने को संबोधित करते हुए अधिवक्ता रजत कल्सन ने कहा कि उन्हें धरने पर आने से रोकने के लिए हांसी पुलिस ने दो साल पहले दर्ज एफआईआर में उन्हें नोटिस जारी कर दिए तथा उनके घर पर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए बार-बार रेड की गई तथा यहां तक की उनके चेंबर में भी पुलिस ने उनकी गिरफ्तारी के लिए रेड की।

कल्सन ने कहा कि भाटला के दलित पीड़ितों के धरना प्रदर्शन को रोकने के लिए पुलिस ने हर हथकंडा अपनाया, पुलिस द्वारा गांव में जाकर भी दलितों को डराया गया कि अगर धरने पर जाओगे तो उनके खिलाफ मुकदमे दर्ज कर दिए जाएंगे।

कल्सन ने कहा कि भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में हांसी पुलिस ने मीडिया वालों को भी धमकाने का काम किया तथा जब उन्होंने भाटला केस की अपडेट अपने सोशल मीडिया और फेसबुक पर डालनी शुरू की तो पुलिस ने फेसबुक को कानून नोटिस भेज कर उनका फेसबुक अकाउंट भी बंद कर दिया जो कि सरासर अभिव्यक्ति प्रकट करने के संवैधानिक अधिकारों पर प्रतिबंध व सेंसरशिप है।

जांच पूरी होने के बाद गांव में माहौल बेहद खराब

दलित पीड़ित जयभगवान ने धरने पर कहा कि गांव में जांच टीम की जांच पूरा होने के बाद माहौल बेहद खराब है तथा किसी अनहोनी की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता इसलिए उन्होंने अपने परिजनों की जान के खतरे को देखते हुए गांव से पलायन कर दिया है तथा उनके साथ करीबन एक दर्जन लोगों ने पलायन किया है और ग्रामीणों के बार-बार अनुरोध के बावजूद भी पुलिस ने गांव में पुलिस सुरक्षा नहीं लगाई है जिससे गांव में दलित समाज के लोग डरे हुए हैं व दहशत में है। भाटला दलित संघर्ष समिति के सदस्यों ने कहा कि अगर पुलिस ने गांव में दलित समाज की सुरक्षा के बारे में कड़े इंतजाम नही किये तो आने वाले समय में गांव के दलित बड़ी संख्या में गांव से पलायन कर सकते हैं।

इस अवसर पर जय भीम आर्मी के अंतरराष्ट्रीय चेयरमैन संजय चौहान व हरियाणा के प्रमुख दलित कार्यकर्ता भूषण नुनिया ने भी संबोधित किया।

इस दौरान अधिवक्ता प्रवेश महिपाल अधिवक्ता दीपक सैनी, अधिवक्ता राहुल चावला, अधिवक्ता नरेश गुणपाल, प्रधान संजय उर्फ हैरी ढुल, लोहारू से जगदीश फरटीया, दादरी से रविप्रकाश, धर्मेंद्र रंगा, फतेहाबाद से बजरंग खिचड़, परमहंस चोपड़ा, सूरज भाटोल, रविंद्र रंगा, मा. सुनील कलसन, सुशील रशीला, कृष्ण सैनीपुरा, अधिवक्ता मलकित सिंह, नरेश गुणपाल, रवि प्रकाश ढाणी फोगाट, डॉ अभेराम आल्याण, सुनील प्रधान डॉ अम्बेडकर समिति बधावड़, चांदीराम बधावड़, सतीश प्रधान सिंघवा खास, उदयभान खोखा, बजरंग खिचड़, सुनील डाटा, जगदीश फरटिया, विनोद विघानिया, भूषण नुनिया, सुनील बोबुआ, संजय, भीम राव, राजेश, मीर, राजेंदर, रितु, सुमन, चंद्रमुखी, रोशनी, पूजा, जर्मिला, सुनीता, बिमला भी मौजूद रहे।

कॉलर ट्यून या कलेजे पर हथौड़ा: हर बार अमिताभ क्यों? : प्रियंका सौरभ

सरकार को समझना चाहिए कि चेतावनी सिर्फ चेतना के लिए होती है, प्रताड़ना के लिए नहीं। एक बार, दो बार, चलिए तीन बार — पर हर कॉल पर वही ट्यून, वही स्क्रिप्ट, वही अंदाज़ — यह सिर्फ संचार व्यवस्था को बोझिल नहीं बना रही, बल्कि जनता का भरोसा भी खो रही है। आखिर हम कब तक तकनीक के इस बोझ को झेलती रहेंगी?

भाई साहब, बात एकदम सीधी और साफ है — मैं भी अमिताभ बच्चन की कला की उतनी ही बड़ी प्रशंसक हूँ जितना कोई और। कौन नहीं है? वे अभिनय के सम्राट हैं, आवाज़ में गरज है, आंखों में भाषा है, और संवाद अदायगी ऐसी कि शब्दों को भी पसीना आ जाए। लेकिन अब वक्त आ गया है कि हम भावुकता और वास्तविकता को अलग-अलग करके देखें। एक तरफ हम उस कलाकार का सम्मान करते हैं, तो दूसरी तरफ आज आम जनता जिस मानसिक थकावट और व्यवहारिक समस्या से जूझ रही है, उस पर सवाल उठाना भी जरूरी है। जी हाँ, मैं बात कर रही हूँ उस चेतावनी भरी कॉलर ट्यून की, जो अमिताभ बच्चन की आवाज़ में साल भर से हर मोबाइल कॉल पर हमारे कानों में हथौड़ा मार रही है।

अब सोचिए, जब भी आप किसी को कॉल करते हैं, आपको पहले 30 सेकंड तक अमिताभ बच्चन की कर्कश, बूमिंग आवाज़ में एक रटा-रटाया साइबर ठगी से बचने का उपदेश सुनना पड़ता है। न मर्जी पूछी जाती है, न विकल्प दिया जाता है। आप चाहे दिन में पहली बार कॉल कर रहे हों या पचासवीं बार, वही चेतावनी... वही लय, वही थर्राती चेतावनी। लोगों का तो यहाँ तक कहना है कि ये कॉलर ट्यून अब जनता का मानसिक उत्पीड़न बन चुकी है। दिमाग की नसों में जो कंपकंपी फैलती है, उसे विज्ञान वाले 'वाइब्रेशन' कहें, पर आम जनता इसे 'तंग आना' कहती है। किसी से एक ज़रूरी बात करनी हो, और सामने से आवाज़ आती है — ₹आपका कॉल साइबर अपराध से सुरक्षा हेतु रोका गया है...₹ — आदमी खुद को अपराधी न मान बैठे, तो क्या करे?

अब मुद्दे की बात ये है कि आखिर ये कॉलर ट्यून क्यों अभी भी जारी है? यह कोई नया अभियान नहीं है। यह चेतावनी करीब एक साल से हर मोबाइल उपभोक्ता तक रोज़ाना, बार-बार पहुंचाई जा रही है। क्या इस देश में अब भी कोई ऐसा कोना बचा है जहाँ यह संदेश नहीं पहुंचा? क्या सचमुच सरकार को लगता है कि आम जनता इतनी जड़ है कि 365 दिन में भी वह यह नहीं समझ पाई कि उसे OTP किसी को नहीं बताना चाहिए? क्या सरकार ने कभी यह अध्ययन किया कि इस कॉलर ट्यून के शुरू होने के बाद साइबर ठगी के मामलों में कोई गिरावट आई भी है या नहीं?

सच तो यह है कि अगर इस चेतावनी से कोई फर्क पड़ता, तो अब तक तो साइबर अपराधी बोरिया-बिस्तर समेटकर दुबई या नाइजीरिया भाग चुके होते। लेकिन सच्चाई यह है कि ठगी भी वैसी की वैसी है, और जनता की झल्लाहट भी। क्योंकि असली समाधान यह नहीं है कि हर बार कान में चिल्ला-चिल्ला कर डराया जाए, बल्कि यह है कि तंत्र को मज़बूत किया जाए, डिजिटल साक्षरता बढ़ाई जाए, और साइबर अपराधियों पर त्वरित कार्यवाही हो।

लेकिन इस देश में समस्या का समाधान जनता पर मानसिक बोझ डालकर ढूंढा जाता है। कहने को यह ट्यून सिर्फ 30 सेकंड की है, लेकिन इसका असर कई गुना बड़ा है। किसी को दिल का दौरा पड़ गया, दुर्घटना हो गई, कोई बच्चा जलते हुए कमरे में फंसा है — और आपको मदद के लिए कॉल करनी है। लेकिन कॉल से पहले 30 सेकंड तक आपको 'सावधान! OTP किसी को न दें!' सुनना पड़ेगा। सोचिए, ऐसे में क्या बीतती होगी? उस कॉल का हर सेकेंड कीमती है, लेकिन हम सिस्टम से उम्मीद नहीं कर सकते कि वह आम इंसान की जान को प्राथमिकता देगा।

एक बार एक हादसा हुआ था — अहमदाबाद में एक अस्पताल में आग लग गई। चंद सेकेंडों में 300 जानें चली गईं। अब कल्पना कीजिए, यदि वहाँ से किसी ने बचाव के लिए फोन किया हो, और उससे पहले कॉलर ट्यून चल गई हो — क्या वह 30 सेकंड उस वक्त ज़्यादा ज़रूरी थे, या इंसानी ज़िंदगी?

और अब तो यह स्थिति और खतरनाक हो गई है। मान लीजिए किसी लड़की का अपहरण हो जाए, और किसी तरह उसे मौका मिले फोन करने का — तो पहले उसे विज्ञापन सुनना पड़ेगा। क्या हम यकीन के साथ कह सकते हैं कि तब तक कोई अनहोनी नहीं होगी? आपातकाल में एक-एक सेकेंड ज़िंदगी और मौत के बीच की रेखा बन जाता है, और हमारा सिस्टम उसमें 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी' की लोरी सुनाता है।

लोग अब सोशल मीडिया पर इस ट्यून के खिलाफ मोर्चा खोलने लगे हैं। कहा जा रहा है कि इस ट्यून को दिन की पहली कॉल तक सीमित कर दिया जाए, या उपभोक्ता को विकल्प मिले कि वह इसे बंद कर सके। लेकिन जैसे किसी सरकारी दफ्तर में फाइल दबा दी जाती है, वैसे ही जनता की ये आवाज़ भी अनसुनी रह जाती है। टेलीकॉम कंपनियाँ तो मानो अपना पल्ला झाड़ चुकी हैं — उनकी तरफ से कोई जवाब नहीं आता।

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि इस पूरी समस्या का विरोध करते ही कुछ लोग तुरंत आहत हो जाते हैं। “अरे! यह तो अमिताभ बच्चन की आवाज़ है! उनका अपमान कैसे कर सकते हो?” तो भाइयों और बहनों, कृपया समझिए — यहाँ कोई बच्चन साहब के खिलाफ नहीं है। उनकी कला के प्रति पूरा देश श्रद्धा रखता है। पर आवाज़ की जगह और समय भी कोई चीज होती है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई किसी की मृत्युशैया पर बैठा हो, और आप उसके कान में 'खुश रहो अहले वतन' की देशभक्ति ट्यून बजा दें। भावना की कोई जगह होनी चाहिए।

यह आवाज़, जो कभी हमारी जागरूकता का प्रतीक थी, अब धीरे-धीरे एक मानसिक शोर में बदलती जा रही है। यह सरकारी प्रणाली की असंवेदनशीलता का प्रमाण बनती जा रही है, जो जनता की थकान को नहीं, केवल अपनी औपचारिकता को देखती है। कहीं ऐसा न हो कि कल को हम किसी गंभीर परिस्थिति में फोन करने से डरने लगें कि पहले 30 सेकेंड तक वही चिल्लाती आवाज़ झेलनी पड़ेगी। लोग अब कॉल करने से पहले सोचते हैं — “अरे यार! फिर वही ट्यून सुननी पड़ेगी।”

सरकार को समझना चाहिए कि चेतावनी सिर्फ चेतना के लिए होती है, प्रताड़ना के लिए नहीं। एक बार, दो बार, चलिए तीन बार — पर हर कॉल पर वही ट्यून, वही स्क्रिप्ट, वही अंदाज़ — यह सिर्फ संचार व्यवस्था को बोझिल नहीं बना रही, बल्कि जनता का भरोसा भी खो रही है। आखिर हम कब तक तकनीक के इस बोझ को झेलती रहेंगी?

यदि आप भी इस समस्या की भुक्तभोगी हैं, तो अब वक्त आ गया है कि एक आवाज़ बनें। सोशल मीडिया पर लिखिए, जनप्रतिनिधियों को टैग कीजिए, याचिका शुरू कीजिए। मैं अमिताभ बच्चन से शिकायत नहीं कर रही, मैं सरकार से सवाल कर रही हूँ। क्योंकि जीवन की अंतिम सांसों पर यदि कोई आवाज़ सबसे पहले पहुँचे — तो वह किसी अपने की होनी चाहिए, न कि एक रिकॉर्डेड चेतावनी।

याद रखिए, चेतावनी से ज़्यादा जरूरी है चेतना। अब फैसला आपको करना है — आप कब तक फोन कॉल की हर शुरुआत को सरकारी भाषण से बर्बाद होने देंगी? या आप अपनी आवाज़ मिलाकर इस सिस्टम को सुधारने की कोशिश करेंगी?

'तृतीय परमाणु युग': बदलती दुनिया और डगमगाते वैश्विक मानदंड

रूस-यूक्रेन युद्ध, चीन की आक्रामकता और उत्तर कोरिया के मिसाइल परीक्षणों के बीच दुनिया एक नए परमाणु युग में प्रवेश कर चुकी है। पुरानी संधियाँ निष्क्रिय हो रही हैं, और तकनीकी प्रगति जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता व हाइपरसोनिक मिसाइलें परमाणु जोखिम को बढ़ा रही हैं। इस युग में न केवल शक्ति-संतुलन अस्थिर है, बल्कि वैश्विक संस्थाओं की विश्वसनीयता भी संकट में है। भारत सहित वैश्विक दक्षिण को अब इस विमर्श में नैतिक नेतृत्व दिखाने की आवश्यकता है, ताकि भविष्य केवल हथियारों से नहीं, सहयोग और विवेक से गढ़ा जाए।

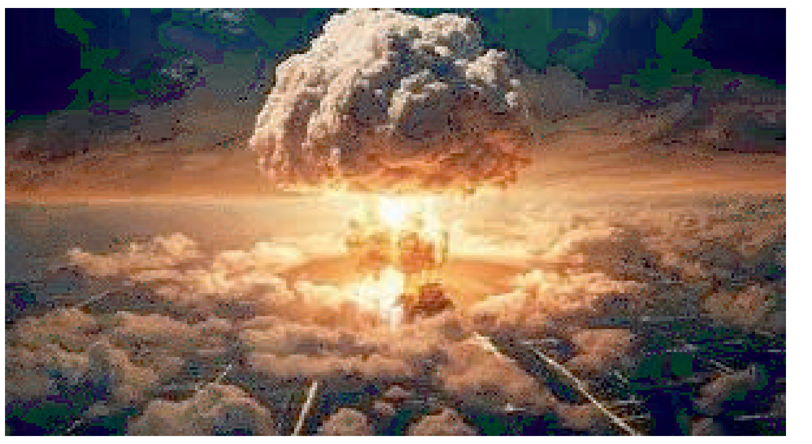

- डॉ सत्यवान सौरभ

जब 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिरे, तो मानवता ने पहली बार अपनी ही बनाई शक्ति के विनाशकारी रूप को देखा। उसके बाद शुरू हुआ था पहला परमाणु युग—शीत युद्ध की संदेहपूर्ण रणनीतियों और 'पारस्परिक सुनिश्चित विनाश' जैसी सोच से भरा समय। फिर आया दूसरा परमाणु युग, जिसमें परमाणु हथियार अमेरिका और रूस से बाहर निकलकर भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया, इज़राइल जैसे देशों तक पहुंचे। लेकिन अब, इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में, विशेषज्ञों का मानना है कि हम 'तृतीय परमाणु युग' में प्रवेश कर चुके हैं—एक ऐसा समय, जहां पुराने संतुलन और समझौते टूटते जा रहे हैं, और परमाणु हथियार फिर से वैश्विक राजनीति के केंद्र में आ खड़े हुए हैं।

रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध ने इस नए युग की शुरुआत की घोषणा कर दी है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने खुलेआम परमाणु हथियारों के उपयोग की धमकी दी, जिससे पूरी दुनिया सकते में आ गई। यह पहली बार था जब किसी राष्ट्राध्यक्ष ने युद्ध नीति में परमाणु हथियारों को इतनी स्पष्टता से रखा। दूसरी ओर चीन ने ताइवान पर अपना दावा और कठोर किया है और अपने परमाणु भंडार का तीव्र आधुनिकीकरण कर रहा है। अमेरिका भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहना चाहता और उसने भी अपने परमाणु हथियारों को तकनीकी रूप से उन्नत करने की प्रक्रिया तेज कर दी है। भारत और पाकिस्तान के बीच भी, बालाकोट और पुलवामा जैसे घटनाक्रमों के बाद, सीमाओं पर तनाव और 'परमाणु विकल्प' पर बहस बढ़ी है।

जब 1968 में परमाणु अप्रसार संधि अस्तित्व में आई, तब यह सोचा गया कि यह हथियार केवल पांच स्थायी शक्तियों तक सीमित रहेंगे और धीरे-धीरे उनका पूर्ण उन्मूलन होगा। लेकिन हकीकत इससे ठीक उलट है। आज भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और इज़राइल जैसे देश संधि के बाहर रहकर भी परमाणु शक्ति से लैस हैं और इसे राष्ट्रीय गौरव का विषय मानते हैं। इसके साथ ही जो संधियाँ कभी परमाणु हथियारों पर नियंत्रण की रीढ़ मानी जाती थीं—जैसे कि मध्यम दूरी की परमाणु संधि और नया सामरिक हथियार संधि—या तो समाप्त हो चुकी हैं या निष्क्रिय हो गई हैं।

विकसित देश, जो खुद इन घातक हथियारों से लैस हैं, विकासशील देशों से निरस्त्रीकरण की अपेक्षा रखते हैं लेकिन स्वयं इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाते। इससे वैश्विक मंच पर एक प्रकार की दोहरी नीति दिखाई देती है, जो न केवल इन समझौतों की विश्वसनीयता को चोट पहुंचाती है, बल्कि विकासशील देशों में असंतोष भी पैदा करती है।

कभी 'परमाणु निवारण' की नीति ने दो महाशक्तियों को सीधे युद्ध से रोके रखा था, लेकिन आज की बहु-ध्रुवीय दुनिया में यह सोच अब कमज़ोर होती दिख रही है। आज के विश्व में जहां निर्णयकर्ता नेता अधिक अस्थिर, अनिश्चित और राष्ट्रहित की आक्रामक व्याख्या करने वाले हैं, वहां यह नीति कितनी प्रभावी है, यह एक बड़ा प्रश्न बन चुका है। उत्तर कोरिया का लगातार मिसाइल परीक्षण करना, चीन द्वारा सैकड़ों नए मिसाइल प्रक्षेपण स्थल बनाना और रूस द्वारा बेलारूस में परमाणु हथियारों की तैनाती—ये सभी घटनाएं यह दर्शाती हैं कि परंपरागत निवारण नीति अब खंडित हो रही है।

इस युग की एक अन्य विशिष्टता यह है कि अब परमाणु हथियार अकेले नहीं हैं। इनके साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अतिशीघ्र गति से चलने वाली मिसाइलें, साइबर युद्ध और स्वचालित ड्रोन प्रणाली भी जुड़ चुकी हैं। अमेरिका और चीन जैसे देश अपने परमाणु निर्णय प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को जोड़ने की दिशा में काम कर रहे हैं। यह तकनीक एक ओर जहां तुरंत निर्णय लेने की क्षमता बढ़ा सकती है, वहीं दूसरी ओर किसी तकनीकी त्रुटि या साइबर हमले से अनायास ही परमाणु युद्ध छिड़ने की आशंका को भी जन्म देती है।

भारत की स्थिति इस बदलती दुनिया में विशेष रूप से विचारणीय है। भारत ने अब तक 'पहले प्रयोग नहीं करने' की नीति अपनाई है और परमाणु हथियारों के नैतिक उपयोग पर बल दिया है। लेकिन चीन की बढ़ती आक्रामकता और पाकिस्तान के साथ बढ़ते तनाव के कारण भारत की परमाणु नीति की पुनर्समीक्षा की मांग अब उठने लगी है। यह बहस अब मुख्यधारा में है कि क्या 'पहले प्रयोग न करने' की नीति वर्तमान समय में व्यावहारिक और सुरक्षित है?

परमाणु हथियारों का यह नया युग केवल महाशक्तियों की आपसी होड़ तक सीमित नहीं है। इसका असर पूरे वैश्विक दक्षिण पर भी पड़ता है। विकासशील देशों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि इससे उनकी अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव आता है, वे कूटनीतिक रूप से अधिक अस्थिर होते हैं, और युद्ध के अप्रत्यक्ष परिणाम उन्हें सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। अफ्रीका, दक्षिण एशिया और लैटिन अमेरिका के देश इन वैश्विक खतरों से चिंतित हैं क्योंकि यह उनके बुनियादी मुद्दों—जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और जलवायु संकट—को पीछे धकेल देता है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी जैसी संस्थाएं, जो कभी इन विषयों की संरक्षक मानी जाती थीं, अब प्रभावहीन होती दिख रही हैं। यूक्रेन युद्ध में सुरक्षा परिषद की निष्क्रियता और ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की सीमित पहुंच इस वैश्विक ढांचे की कमजोरियों को उजागर करती हैं। अगर इन संस्थाओं को समय रहते सशक्त नहीं किया गया तो भविष्य में इनकी भूमिका महज़ औपचारिक रह जाएगी।

ऐसे में विकल्प क्या हैं? सबसे पहले तो यह जरूरी है कि पूरी दुनिया में एक बार फिर परमाणु युद्ध के खतरों को लेकर जनचेतना जागृत हो। दूसरी बात, अब हमें पुराने दौर की संधियों से आगे बढ़कर नई अंतरराष्ट्रीय व्यवस्थाएं बनानी होंगी, जो आधुनिक तकनीक, नई सामरिक चुनौतियों और विविध शक्ति केंद्रों को ध्यान में रखते हुए तैयार की जाएं। तीसरे, विकासशील देशों को भी अब इस विमर्श में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए ताकि वैश्विक नैतिकता की परिभाषा केवल परमाणु संपन्न देशों की मोनोपॉली न रह जाए। और अंततः, युद्ध प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग को नियंत्रित करने के लिए एक वैश्विक आचार संहिता तैयार की जानी चाहिए।

'तृतीय परमाणु युग' केवल हथियारों का नहीं, मानसिकता का युद्ध भी है। यह उस भ्रम की ओर इशारा करता है कि तकनीक और शक्ति से ही शांति संभव है, जबकि इतिहास बार-बार यह सिखाता है कि स्थायी शांति केवल पारदर्शिता, विश्वास और सहयोग से ही आती है।

आज जब परमाणु बटन मात्र एक व्यक्ति के निर्णय भर की दूरी पर है, और जब युद्ध की प्रणाली में स्वचालित निर्णय और अज्ञात खतरे जुड़े हुए हैं, तो यह सवाल फिर से हमारे सामने है—क्या हम वाकई विकास की ओर बढ़ रहे हैं, या उसी विनाश की ओर लौट रहे हैं जिससे पिछली सदी में हमने कठिनाइयों से खुद को निकाला था?

ज़िन्दगी संघर्षों की कहानी...

जीवन और मृत्यु के बीच,
फंसा हुआ है संसार
करता बहुत कुछ अपने लिए,
पर सब है बेकार
क्योंकि ज़िन्दगी संघर्षों की कहानी है।

तपती धूप में पसीना बहा कर,
मेहनत की भट्टी में लोहा गर्म कर
वह ज़िन्दगी में कुछ करने के लिए, आगे बढ़ रहा है
क्योंकि ज़िन्दगी संघर्षों की कहानी है।

कोई भी मनुष्य लाख चतुराई करे,
वह जीवन को बचा नहीं सकता है
कब कैसे क्यों यहाँ पक्षी उड़ जाए अकेला,
कुछ कह नहीं सकते
क्योंकि ज़िन्दगी संघर्षों की कहानी है।
जों सत्य है शाश्वत है वह मृत्यु है
क्योंकि जब बुलावा आयेगा तो यह पिंजरा खाली रहें जाएगा
काया मिट जायेगी धन दौलत यही रहें जाएगा
क्योंकि ज़िन्दगी संघर्षों की कहानी है।

इसलिए जियो ऐसे कि जिंदगी यादगार बने,
खुशियों के हर एक पल में वह सौगात बने।
दुखों से डरो मत तकलीफ में भी मुस्कराओ,
क्योंकि ज़िन्दगी संघर्षों की कहानी है॥

हरिहर सिंह चौहान

योग सिंधू में संघ की जलधारा - राकेश सैन

भारत की सनातन संस्कृति की तरह योग भी सनातन है, अविरल है। यह तो संभव है कि आकाश के तारे गिन लिए जाएं या धरती के कणों की सही-सही संख्या का पता लगा लिया जाए परन्तु योग के सिंधू में कितनी जलधाराएं मिलीं, कितने नद समाहित हुए इसका अनुमान लगाना भी असंभव है। इन्हीं अनन्त जलराशियों में शामिल है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसका उद्देश्य व्यक्ति उत्थान से राष्ट्रोत्थान रहा है और संघ ने योग को अपने इस काम का साधन बनाया है।
सृष्टि के प्रारम्भ से ही भगवान शिव को 'योगेश्वर' माना गया है। अनेक योग परंपराएँ जैसे नाथयोग, हठयोग, मंत्रयोग, लययोग, राजयोग, आदि सभी भगवान शिव से ही प्रारंभ मानी जाती हैं। गुरु गोरखनाथजी के सम्प्रदाय में शिव को 'आदिनाथके रूप में पूजा जाता है और ध्यान मुद्रा में उनकी उपासना की जाती है। नाथ संप्रदाय में योग को शिवविद्या या महायोगविद्या कहा गया है, जिसमें आत्मा और ब्रह्मांड के सामरस्य की अनुभूति प्रमुख है। शिवगीता में भगवान शिवजी ने भगवान राम को योग का दिव्य उपदेश दिया, जब वे सीता-वियोग से व्याकुल थे। उन्होंने आत्मज्ञान, चित्त की एकाग्रता, और भौतिक आसक्ति से विरक्ति का विस्तार से निरूपण किया। भगवान शिव को ध्यानमग्न योगी के रूप में भी दर्शाया गया है, जिनका ध्यान जीवन के परम लक्ष्य 'मोक्षकी ओर उन्मुख करता है। वेदों में वर्णित शिवसंकल्पसूक्त योग के लिए वैदिक प्रेरणा का आधार है, जो भगवान शिव की चेतना और व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाता है।
रामायणकाल में महर्षि वसिष्ठ ने भगवान श्रीराम को गहन अद्वैत वेदान्त के सिद्धांतों के माध्यम से योग का मार्ग बताया है। राम को उपदेश करते हुए महर्षि वसिष्ठ कहते हैं - द्वौ क्रमौ चित्तनाशस्य योगो ज्ञानं च राघव। योगो वृत्तिनिरोधो हि ज्ञानं सम्यगवेक्षणम्॥
(योगवासिष्ठ)
महर्षि वसिष्ठ योग के अत्यंत प्राचीन और समग्र दृष्टा माने जाते हैं। वे सप्तर्षि-मंडल में स्थित रहकर आज भी विश्वकल्याण में लगे हुए हैं।
महाभारत में योग को आत्मसाधना और अंत:करण की शुद्धि का मार्ग माना गया है। महर्षि वेद व्यासजी ने ध्यानयोग के लिए द्वादश साधनों (देश, कर्म, आहार, दृष्टि, मन आदि) के संयम को अनिवार्य बताया है। इसके शान्ति पर्व में ऋषियों को योग की 12 विधियों से ध्यानयोग का अभ्यास करते बताया गया है।
भगवान श्रीकृष्ण को भी 'योगेश्वर' कहा गया है क्योंकि वे न केवल योग के आचार्य हैं बल्कि स्वयं योग के मूर्तिमान स्वरूप भी हैं। भगवद्गीता को स्वयं भगवान की साक्षात योगयुक्त वाणी कहा गया है, जो आज भी अज्ञान और मोह का नाश कर आत्मबोध करा सकती है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विभिन्न योगों का उपदेश दिया - कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्ति योग, और ध्यानयोग। 'समत्वं योग उच्यते' और 'योग: कर्मसु कौशलम' जैसे श्लोक योग को जीवन की कुशलता और समत्व की दशा से जोड़ते हैं। इसी तरह महर्षि पतंजलि, महर्षि चरक, आदिगुरु शंकराचार्य जी से लेकर आधुनिक काल के योग गुरुओं, शिक्षकों व साधकों सहित अनेक ज्ञात-अज्ञात जलनद योग के सिंधू को अपने ज्ञान से समृद्ध करते रहे हैं।
इन्हीं जलधाराओं में एक सम्मानित नाम है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जो अपने जन्म से ही भारतीय संस्कृति व अपने सांस्कृतिक मानबिन्दुओं की पुनस्थापना के काम में लगा है। संघ की स्थापना 1925 में डॉ. हेडगेवार द्वारा की गई थी, जिनका उद्देश्य था राष्ट्रभक्ति, शारीरिक और मानसिक विकास और आत्मानुशासन के माध्यम से भारत के युवाओं को संगठित करना। योग को संघ के आध्यात्मिक और शारीरिक प्रशिक्षण के अनिवार्य भाग के रूप में अपनाया गया। संघ की शाखाओं में सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, ध्यान और आसनों का नियमित अभ्यास कराया जाता है।
योग और संघ का संबंध केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनियंत्रण, सामाजिक सेवा, समरसता और आध्यात्मिक जागरण से भी जुड़ा है। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार स्वयं योग साधक थे और उन्होंने शाखा पद्धति में योग को अनिवार्य रूप से जोड़ा।
संघ के दूसरे सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने भी योग को आंतरिक तप और अनुशासन के अंग के रूप में देखा। उनका कहना था, 'यदि स्वास्थ्य-रक्षा तथा रोग-प्रतिकार करने के लिए योगासनों के अभ्यास की ओर लोगों ने ध्यान दिया तो सर्वसाधारण जनता के स्वास्थ्य में सुधार हो कर उनका औषधियों पर होने वाला व्यय कम होगा तथा सब दृष्टि से उनका कल्याण होगा।'
योग केवल आत्मोन्नति का साधन नहीं बल्कि समाजोद्धार और राष्ट्रनिर्माण का भी पथ है। यही दृष्टिकोण संघ द्वारा अपनाया गया। संघ के प्रमुख शिक्षा वर्गों में योगासन और ध्यान की विधिवत शिक्षा दी जाती है। योग के माध्यम से स्वयंसेवकों में संयम, साहस और शारीरिक स्फूर्ति का विकास किया जाता है, ताकि वे सेवाकार्यों में तत्पर रह सकें।
आज भी संघ की हजारों शाखाओं में योगाभ्यास अनिवार्य गतिविधियों में शामिल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक स्वयंसेवक के रूप में संघ से जुड़े रहे हैं। उनके द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की घोषणा और उसे विश्वपटल पर स्थापित करना इस संघ परंपरा की ही एक आधुनिक अभिव्यक्ति है। संघ का यह दृष्टिकोण 'योग ही युक्ति है, योग ही शक्ति है', के सूत्र में संक्षेपित किया जा सकता है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा 2015 के अनुसार, 'योग भारतीय सभ्यता की विश्व को देन है।'
संघ द्वारा योग दिवस पर पारित प्रस्ताव में कहा गया है कि 'संयुक्त राष्ट्र की 69वीं महासभा द्वारा प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा से सभी भारतीय, भारतवंशी व दुनिया के लाखों योग-प्रेमी अतीव आनंद तथा अपार गौरव का अनुभव कर रहे हैं। यह अत्यंत हर्ष की बात है कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा के अपने सम्बोधन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का जो प्रस्ताव रखा उसे अभूतपूर्व समर्थन मिला। नेपाल ने तुरंत इसका स्वागत किया। 175 सभासद देश इसके सह-प्रस्तावक बनें तथा तीन महीने से कम समय में 11 दिसम्बर, 2014 को बिना मतदान के, आम सहमति से यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।
अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती है कि योग भारतीय सभ्यता की विश्व को देन है। 'युज़' धातु से बने योग शब्द का अर्थ है जोडऩा तथा समाधि। योग केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित नहीं है, महर्षि पतंजलि जैसे ऋषियों के अनुसार यह शरीर मन, बुद्धि और आत्मा को जोडऩे की समग्र जीवन पद्धति है। शास्त्रों में 'योगश्चित्तवृत्ति निरोध:', 'मन:प्रशमनोपाय: योग:' तथा 'समत्वंयोगउच्यते' आदि विविध प्रकार से योग की व्याख्या की गयी है, जिसे अपना कर व्यक्ति शान्त व निरामय जीवन का अनुभव करता है। योग का अनुसरण कर संतुलित तथा प्रकृति से सुसंगत जीवन जीने का प्रयास करने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, जिसमें दुनिया के विभिन्न संस्कृतियों के सामान्य व्यक्ति से लेकर प्रसिद्ध व्यक्तियों, उद्यमियों तथा राजनयिकों आदि का समावेश है। विश्व भर में योग का प्रसार करने के लिए अनेक संतों, योगाचार्यों तथा योग प्रशिक्षकों ने अपना योगदान दिया है, ऐसे सभी महानुभावों के प्रति प्रतिनिधि सभा कृतज्ञता व्यक्त करती है। समस्त योग-प्रेमी जनता का कर्तव्य है कि दुनिया के कोने कोने में योग का सन्देश प्रसारित करे।
अ. भा. प्रतिनिधि सभा भारतीय राजनयिकों, सहप्रस्तावक व प्रस्ताव के समर्थन में बोलने वालेस दस्य देशों तथा संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों का अभिनन्दन करती है जिन्होंने इस ऐतिहासिक प्रस्ताव को स्वीकृत कराने में योगदान दिया। प्रतिनिधि सभा का यह विश्वास है कि योग दिवस मनाने व योगाधारित एकात्म जीवनशैली को स्वीकार करने से सर्वत्र वास्तविक सौहार्द तथा वैश्विक एकता का वातावरण बनेगा।
अ.भा. प्रतिनिधि सभा केंद्र व राज्य सरकारों से अनुरोध करती है कि इस पहल को आगे बढ़ाते हुए योग का शिक्षा के पाठ्यक्रमों में समावेश करें, योग पर अनुसन्धान की योजनाओं को प्रोत्साहित करें तथा समाज जीवन में योग के प्रसार के हरसंभव प्रयास करें। प्रतिनिधि सभा स्वयंसेवकों सहित सभी देशवासियों, विश्व में भारतीय मूल के लोगों तथा सभी योग-प्रेमियों का आवाहन करती है कि योग के प्रसार के माध्यम से समूचे विश्व का जीवन आनंदमय स्वस्थ और धारणक्षम बनाने के लिए प्रयासरतर हैं।'

वृत्तपत्र में नाम छपेगा,
पहनूंगा स्वागत समुहार।
छोड़ चलो यह क्षुद्र भावना,
हिन्दू राष्ट्र के तारणहार।।

के सिद्धांत पर चलते हुए संघ ने कभी किसी काम का श्रेय नहीं लिया परन्तु योग रूपी सिंधू में संघ की अविरल धारा के योगदान को सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

प्रधानमंत्री के ओडिशा दौरे से पहले कांग्रेस का शांतिपूर्ण रुख, 6 युवा नेता हिरासत में लिए गए

मनोरंजन सासमल , बरिष्ट जर्नालिस्ट

भूबनेश्वर: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ओडिशा दौरे से पहले कांग्रेस ने शांतिपूर्ण रुख अपनाया। पीसीसी अध्यक्ष भक्तचरण दास के नेतृत्व में कांग्रेस नेताओं ने भुवनेश्वर लोअर पीएमजी में शांतिपूर्ण रुख अपनाया। पूर्व मंत्री जगन्नाथ पटनायक, सुरेश कुमार राउत्रे और कई अन्य कांग्रेस नेता भी इसमें शामिल हुए।दूसरी ओर, प्रधानमंत्री के ओडिशा दौरे के दौरान काले झंडे दिखाने से लेकर कुछ अप्रिय स्थितियों की आशंका के चलते 6 युवा नेताओं को हिरासत में लिया गया है। पुलिस ने यासिर नवाज, रंजीत पात्रा को हिरासत में लिया है। प्रधानमंत्री के ओडिशा दौरे के दौरान पीसीसी अध्यक्ष भक्तचरण दास ने प्रधानमंत्री से सवाल किया। उन्होंने कहा कि जाजपुर जिले में पांच हजार से अधिक लोग डायरिया से पीड़ित हैं। क्या प्रधानमंत्री वहां जाकर स्थिति का आकलन करेंगे और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए कदम उठाएंगे? क्या प्रधानमंत्री गोपालपुर और क्योंझर के बलात्कार पीड़ितों के परिवारों से मिलेंगे? क्या वे कानून व्यवस्था की स्थिति को सुधारने के लिए कुछ कदम उठाएंगे? पीसीसी अध्यक्ष ने कहा कि अगर प्रधानमंत्री ये सब काम करते हैं, तो हम प्रधानमंत्री के दौरे का स्वागत करेंगे। अन्यथा, हम शाम 6 बजे तक शांतिपूर्ण तरीके से विरोध प्रदर्शन करेंगे।

सरकारी दामाद बना झारखंड का अभियंत्रण, खूंटी-सिमडेगा पुल टूटने से सवालों में घेरे में विभाग

जांच का टीम गठित, खरसावां का अधुरा संजय पुल के लिए हाईकोर्ट को देना पड़ा निर्देश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, खुटी सिमडेगा मुख्य पथ पर बना पुल गुरुवार को दो टुकड़ों में बंटकर अलग हो गया था . पुल टूटने के बाद पथ निर्माण विभाग ने जांच शुरू कर दी है. प्रारंभिक जांच में कई चौंकाने वाली बातें सामने आई हैं. यद्यपि इन चीजों की जांच अगर केंद्रीय साफ सुथरी एजेंसियां करें तो ऊपर से नीचे तक सरकारी दामाद बन कर लुट रहे अनेकों सरकारी अभियंत्रण विभाग की पोल खुलेगी .ऐसे ही सरायकेला खरसावां जिले भी महत्वपूर्ण संजय पुल अधुरा पड़ा रहता अगर हाईकोर्ट सरकार को आदेश न देता , यह वही पथ निर्माण विभाग है जिसे राजनीतिक ठेकेदार अपने चहेते इंजिनियरों के जरिए चलाते आये हैं जहां जनता की गाढ़ी कमाई टैक्स के पैसे से .खूंटी के इस पुल पर विभागीय जांच में पुल के डिजाइन की जांच में पता चला है कि पिलर का फाउंडेशन 19 मीटर होना चाहिए था लेकिन मेजरमेंट बुक (एमबी) में 13 मीटर का ही जिक्र है इसमें छह मीटर कम क्यों है? पथ निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता रामेश्वर शाह ने 2007 में कराए गए काम के कागजातों की जांच के बाद कहा कि हो सकता है कि 13 मीटर में ही हार्ड मिल गया होगा या फिर समझौता हो गया होगा. पिलर खिसकने का यह भी कारण हो सकता है कि पुल टूट गया।

पथ निर्माण विभाग के पदाधिकारी पुल टूटने के मामले में कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया है. उन्होंने कहा कि जांच टीम की जांच के बाद ही कारणों का पता चलेगा. कोई भी इंजीनियर ठेकेदार खराब पुल का निर्माण नहीं करता है. 2005 में सिंगल पुल तेज बहाव में बह गया था. इसी की जगह 2007 में पथ निर्माण विभाग ने पुल बनवाया था. 106 फिट लंबे इस पुल के निर्माण पर एक करोड़ 27 लाख की लागत आई थी. इस पुल का निर्माण 100 साल को ध्यान में रखते हुए इसके डिजाइन किया गया था लेकिन 18 साल में ही ध्वस्त हो गया. विभाग के अधिकारी अब विभागीय निर्देशों के अनुसार जांच कर रहे हैं और जांच में अनियमितता सामने आती है तो कार्रवाई की जाएगी.

हालांकि विभाग के कार्यपालक अभियंता रामेश्वर साह ने जैसा बताया कि प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट होता है कि उस वक्त विभाग के अधिकारी और ठेकेदार के बीच समझौता हुआ था. पथ निर्माण विभाग के अनुसार पुल का निर्माण अरविंद कुमार सिंह के द्वारा कराया गया था और उस वक्त कार्यपालक अभियंता दिनेश तोपनो थे जबकि सहायक अभियंता अरविंद वर्मा थे और जेई देव सहाय भगत थे. इन्ही अधिकारियों की देखरेख में पुल का निर्माण पूर्ण हुआ था.

खूटी में पेलोल पुल टुटा, जिसके बाद इस मामले की विभगीय जांच शुरू हो गयी है. शुक्रवार को पथ निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता मनोहर कुमार टीम के साथ घटनास्थल पहुंचे और पुल की स्थिति का जायजा लिया. उनकी टीम के साथ बारीकियों के साथ पुल की जांच की. उन्होंने बताया कि पुल टूटने का एक कारण भारी बारिश का होना भी है. साथ ही पुल के पिलरों की ऊंचाई तय मानकों के अनुरूप है या नहीं, इसकी भी मॉनिटरिंग की जा रही है. आसपास के इलाकों से बालू उठाव का कितना असर पुल पर पड़ा है इसका विश्लेषण किया जाएगा. अलग अलग बिंदुओं पर जांच के बाद ही पुल के ध्वस्त होने के कारणों का पता चलेगा.

इधर सरायकेला खरसावां जिले में जिला मुख्यालय से खरसावां को जोड़ने बाली संजय पुल दशकों से अधुरा पड़ा था । यह नेता , मंत्री मुख्यमंत्रियों का विधानसभा इलाका रहा पर दशकों बाद तब तक पुल का पहुंच पथ नहीं बनी जबतक बुद्धिजीवी अधिवक्ताओं ने उच्च न्यायालय में जाकर जनहित याचिका दायर नहीं किया .

इसका संबंध रांची से धरातल तक जो नेता -ठेकेदारों की गठजोड़ लोबी चलती है उसे तोड़ना पीड़ित जनता के लिए किस कदर असंभव है यह हाईकोर्ट आदेश एवं सक्षम केंद्रीय एजेंसियों के लिए जांच का विषय बना है . अब पहुंच पथ बन रहा है जिसकी गुणवत्ता पर देखने वाला कोई नहीं है यद्यपि लूट खसोट को सैकड़ों उदाहरण अटा पड़ा है।

झारखंड के आईएएस छवि रंजन के केस मे ईडी को नोटिस

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। सेना तथा अन्य जमीन घोटाले के आरोपी सरायकेला खरसावां एवं रांची के पूर्व उपायुक्त छवि रंजन की याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने ईडी को नोटिस जारी कर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद ने ईडी को 18 जुलाई तक जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। बड़गाईं अंचल की सेना की जमीन की अवैध तरीके से खरीद-बिक्री के मामले में छवि रंजन को ईडी ने गिरफ्तार किया है। उनके खिलाफ ट्रायल कोर्ट ने संज्ञान भी लिया है। छवि रंजन ने निचली अदालत के संज्ञान को भी चुनौती दी है। छवि रंजन की ओर से कहा गया है कि बिना अभियोजन स्वीकृति के उनके खिलाफ ट्रायल चलाया जा रहा है, जो नियमों के खिलाफ है।

"हर दिन योग, हर दिन आरोग्य" – नर्मदा तट महेश्वर में योग का दिव्य सन्देश

लेखिका: स्वाति सिंह 'साहिबा'

आजकी आपाधापी से भरी जीवनशैली में जब व्यक्ति समय, स्वास्थ्य और मानसिक शांति – तीनों को ही कहीं खो चुका है, ऐसे समय में योग केवल एक अभ्यास नहीं, अपितु जीवन का मार्गदर्शन बनकर उभर रहा है। और यदि योग किसी पावन, शांत और ऊर्जा-सम्पन्न स्थान पर हो, तो उसका प्रभाव केवल शरीर पर नहीं, आत्मा तक पहुँचता है। ऐसा ही एक स्थल है — माँ नर्मदा की गोद में बसा आध्यात्मिक नगर – महेश्वर।

महेश्वरः जहाँ योग, ध्यान और अध्यात्म मिलते हैं एक बिंदु पर

महेश्वर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि ध्यान, संयम और प्राकृतिक उपचार का केन्द्र है। यहाँ की वायु में शांति है, घाटों में संयम है, और लहरों में जीवन का मधुर संगीत। प्रातःकालीन समय में जब सूर्य की प्रथम लालिमा नर्मदा जल को स्वर्ण-राशि में बदलती है, तब महेश्वर योग के लिए दिव्य स्थल प्रतीत होता है।

योग सूर्योदय के समय खुली हरियाली में करने का अलग ही आनंद है।₹

नर्मदा तट की ताज़ी हवा जब चेहरे को छूती है, वृक्षों की पत्तियाँ मंद स्वर में झूमती हैं, और घाटों की शांति जब आत्मा को आलोकित करती है — तब योग केवल शरीर की चेष्टा नहीं रह जाता, वह जीवन की गहराइयों में उतरने का अनुभव बन जाता है।

☀ सूर्य की ऊर्जा और आयुर्वेद का आधार

आयुर्वेद कहता है – "प्रातः काल का सूर्य जीवनदायी औषधि है।"

सूर्यनमस्कार के साथ शरीर जब सूर्य की पहली किरणों को ग्रहण करता है, तो वह विटामिन-D का प्राकृतिक स्रोत बन जाता है, जो न केवल हड्डियों को बल देता है, बल्कि रोग-प्रतिरोधक क्षमता को भी सशक्त करता है। महेश्वर के घाटों पर किया गया प्रातःकालीन योग, शरीर, मन और आत्मा – तीनों को संतुलन देता है।

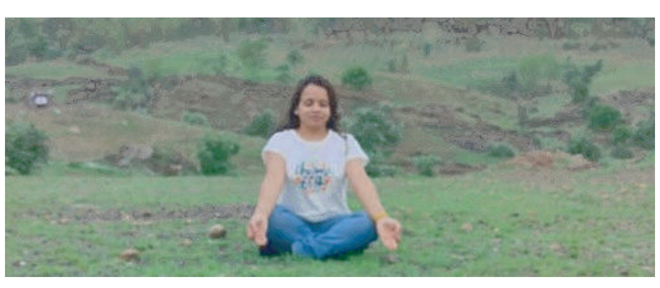

कृत्रिम जिम नहीं, प्राकृतिक योग की ओर लौटें

आज की युवा पीढ़ी "फिटनेस" के नाम पर जिम में घंटों शरीर को थकाती है, जबकि योग शरीर को भीतर से पुष्ट करता है। जिम जहां शरीर को ऊपरी रूप से गढ़ता है, वहीं योग शरीर, मन और आत्मा – तीनों का शोधन करता है। अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, प्राणायाम और शवासन जैसे आसन न केवल तनाव दूर करते हैं, बल्कि ध्यान के माध्यम से मानसिक संतुलन भी प्रदान करते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा और सात्त्विक जीवनशैली

महेश्वर का शांत और हरित वातावरण नेचरल थेरेपी के लिए उपयुक्त है। यहाँ की जलवायु, स्वच्छ वायु और हरियाली मिलकर योग को प्रभावी बनाते हैं। यदि योग के साथ नीम, तुलसी, गिलोय, त्रिफला जैसे आयुर्वेदिक तत्व और सात्त्विक, ऋतुकालानुसार आहार को भी अपनाया जाए, तो न केवल रोगों से मुक्ति मिलती है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता भी बढ़ती है।

योग और ध्यानः आत्मशुद्धि का सशक्त माध्यम

मानसिक विकार, चिंता, अवसाद जैसे रोग आज वैश्विक समस्या बन चुके हैं। ध्यान (Meditation) मन को स्थिर करता है, आत्मचिंतन की शक्ति देता है और निर्णय क्षमता को सुदृढ़ बनाता है। महेश्वर जैसे पावन स्थल पर जब ध्यान किया जाता है, तो वह मन की चंचलता को शांत कर आत्मिक ऊर्जा से भर देता है।

महेश्वर से वैश्विक संदेश

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर यदि महेश्वर में नर्मदा घाटों, मंदिर प्रांगणों और प्राकृतिक उपवनों में सामूहिक योग सत्र आयोजित हों, तो यह न केवल भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन होगा, बल्कि विश्व को यह संदेश भी मिलेगा कि भारत की प्राचीन परंपराएँ आज के संकटों का समाधान रखती हैं।

निष्कर्षतः, योग दिवस केवल एक दिन की परंपरा नहीं, यह हर दिन के जीवन में अपनाए जाने योग्य जीवनशैली है।

महेश्वर, जहाँ नर्मदा की पवित्रता, प्रकृति की शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा का समागम है, वहाँ योग केवल क्रिया नहीं, वह साधना बन जाता है।

आइए, इस योग दिवस पर संकल्प लें—

₹जिम की कृत्रिमता नहीं, प्रकृति की सहजता को अपनाएँ।

योग करें, रोग हरें। भीतर की शक्ति को पहचानें और जीवन को आरोग्यमयी बनाएं।"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023